मुद्रक
रमाकान्त मिश्र।

नवयुवक प्रेस
१ कमर्शियल बिल्डिंग्स्
कलकत्ता।

तीर्थगुण माणेकमाला

[स्तवन चौवीसी सज्झाय और तप विधियुक्त]

संयोजक—

पं० श्री माणेकविजय जी गणी

प्रकाशक·—

शा०—कपूरचन्द जी हांसा जी

जावाल (मारवाड)

संवत् १९९७ पंचम आवृत्ति वीर सं० २४६६

प्रति २०००

शुभेच्छा ना बे बोल

आ तीर्थगुण माणेकमाला नी चार आवृत्तियो पछी आ पांचमी अवृत्ति शास्त्री मां पगट करतां सहर्ष जणाववु जोइये के सत्तर वर्ष नी वये जैनाचार्य श्रीमद् विजय मोहन सूरीश्वर जी महाराज साहव ना सदुपदेश नो लाभ मुंवइमां मलतां संसार ने असार जाणी आत्म कल्याण नो उत्तम मार्ग रूपी संयम वडोदरा मुकामें सं० १९७९ ना फागण मासमां अंगीकार करी गुरुदेव नी कृपा थी अल्पवुद्धि होवा छतां प्राप्त थयेल ज्ञान ना प्रतापे जिनेश्वर प्रभुना, तथा तीर्थपतिओ ना गुणो गावा मन प्रेरायु ; जे थी आ तीर्थगुण माणेकमाला बनावी जनता समक्ष मुकतां जणावुं छुं के अनेक भव्य जीवो आ स्तवनावली थी, तीर्थ गुणो, प्रभु गुणो हृदय मां उतारि दिन प्रति दिन पोताना आत्म ने निर्मल वनावी अविचल पद ने पामो आ प्रयास नी शक्ति जैनाचार्य श्रीमद् विजय मोहन सूरीश्वर जी महाराज साहेब तथा गुरु श्री आचार्य महाराज श्री विजय प्रताप सूरी जी नी अमी द्रष्टिना प्रतापे मानी विरमुं छुं ।

वाचकोये अनुप्रास मिलन दोष या भूल ने गौण वनावी प्रभु भक्ति मां आगल बनी आत्म श्रेय साधो अेज महेच्छा ।

जणावनार—आचार्यदेव विजयमोहन सूरीश्वर जी म० ना पट्टधर आ० विजय प्रताप सूरी जी म० नो चरण किंकर—

सं० १९९६ पन्यास माणेक विजय

निवेदन

श्री जैन शासन मां अति उत्तम ग्रन्थरत्नो प्रगट करना
श्रीमन् मुक्तिकमल जैन मोहनमालाना ३६ मा पुष्प तरी
शासनमान्य १००८ श्री जैनाचार्य श्रीमद् विजयमोह
सूरीश्वरजी महाराज श्री ना पट्टप्रभावक प्रसिद्ध वक्ता आचार्य
श्रीमद् विजयप्रताप सूरिजी महाराजना विद्वान् शिष्यरत्न
पन्यासजी श्री माणेक विजयजी महाराज रचित श्री तीर्थंगु
माणेकमाळा पांचमी आवृत्ति मां प्रगट थाय छे। तीर्थंकर प्रभुओ
ना कारण मां उत्तम उपयोगी पुस्तक छे। सदर पुस्तकना
संयोजक पन्यास श्री नो गायकवाड राज्य मां वीसनगर पासे
आवेल मालक नाम ना गाम मां धर्मप्रेमी सेठ वेलचन्द शाकर-
चन्द नी धर्मपत्नी समरत (समु) बाईये जन्म आप्यो जे नाम
मगनदास स्थाप्युं वृद्धि पामतां अभ्यास शरु थयो। माता
पिता ना उत्तम संस्कारो थी मन मुंबई नी अंदर पूज्य गुरुदेव
श्री विजयमोहन सूरीश्वरजी महाराज नी हृदय भेदक अपूर्व
देशना थी वैराग्य पामी सं० १९७९ ना फागुण वदी ५ ना
बहाचरा मां सत्तर वर्ष नी वयमांये चारित्र अङ्गीकार करी
गुरु सेवा न संयम नी आराधना करतां प्रकरण कर्मग्रन्थ
व्याकरण काव्य आदि ना अभ्यास करी श्री कसारियाजी
आबूजी राणकपुरजी मारवाड़ नी नानी मोटी पंच तीर्थो तथा

जेसलमेर समेतशिखरजी, चम्पापुरी, राजगृही पावापुरी बिहार शरीफ, आदि पवित्र तीर्थो नी यात्राओ करता, सिरोही, पाली जोधपुरफलोधी, अजमेर, जयपुर, आग्रा बनारस (काशी जावाल मेवाड मां डुगरपुर, आसपुर, बनकोडा उदयपुर आदि गामो मा विचरण करि भव्य जीवों ने प्रतिबोधि उपधान तप आदि तपस्याओ तथा उद्यापन प्रतिष्ठा ओच्छवो करावता अमारा ग्रामने पण लाभ सारो आपेल छे आपना चारित्रना गुणे आर्कषाई जनता आगल आ तीर्थगुण माणेकमाला मुकीएछिए तेनो लाभ जैन जनता मेलवी प्रभु भक्ति मा आगल वधी आत्मकल्याण ने साधो, आप श्री पण निर्मल चारित्र पाली जैन शासन ने दीपाओ एज अभ्यर्थना।

आ तीर्थगुण माणेकमालानी चार आवृत्तिओ गुजराती तथा शास्त्री थई ४००० बुकोनो चार वर्ष मा जनताए लाभ लीधो अधिक मागणी थतां आ पांचमी आवृत्ति शास्त्री नकल २००० नीकाली छी आ बुकोनो गुजराती मा थी शास्त्रीमां करनार महाशयोनो तथा आर्थिक सहायकोनो आभार मानीए छिए प्रेस दोष या दृष्टि दोष थी जे भूल रहेवा पामी होय तेने सुधारी वांचवा भलामण छे चार वर्ष मा पांचमी आवृत्ति एज आ बुकनी उपयोगिता जाहेर करे छे।

निवेदक —

वोरा० बाबुलाल विठ्ठलदास

खेरालु (गुजरात, वाया मेहसाणा)

सहायता

१ धर्मप्रिय रायबहादुर सुखराज रायजी, भागलपुर

२ धर्मप्रिय बाबू दीपचन्दजी सेठीया, बीकानेर

३ धर्मप्रिय स्वर्गीया चम्पलकुमारी भीमाल हस्ते लछमीकुमारी भीमाल, कलकत्ता

४ धर्मप्रिय बाबू निहालचन्दजी ओसतवाल की धर्मपत्नी गुलाबकुमारी मु० विहार

५ धर्मप्रिय राय साहेब लक्ष्मीचन्दजी सुचंती की धर्म पत्नी ताराकुमारी मु० विहार

६ धर्मप्रिय बाबू केशरीचन्दजी सुचती की धर्मपत्नी नवल कुमारी मु० विहार

७ माठीया हकमीचद भारसीकी धर्मपत्नी, अ०, सो० जड़ावबेन मु० राजकोट

उपर्युक्त प्रत्येक सज्जनों तथा सन्नारियों ने इस 'तीर्थगुण मालकमाला' की १२५ प्रतियाँ भेंट स्वरूप वितरण करने के लिये आर्थिक सहायता दी है। मैं हृदय से उनका आभारी हूँ।

आश्विन सु पूर्णिमा १९९७ } केशरीचन्द सुचन्ती

तीर्थगुण माणेकमाला

जैनाचार्य श्रीमद् विजयमोहन सूरीश्वरजी महाराज ना पट्टालंकार
आचार्य श्रीमद् विजयप्रताप सूरिजी महाराज ना विद्वान शिष्य
अनुयोगाचार्य

पन्यास जी महाराज श्री **माणेकविजय जी गणि**

जन्म स्थान भालक (गुजरात) दीक्षा स्थान वडोदर

आर्हंत धर्म्म प्रतापान्वित आराध्यचरण १००८ आचार्य्य श्रीमद् विजयमोहन सूरीश्वर सद्गुरोभ्यो नम ।

तीर्थगुण माणेकमाला

प्रभु पासे बोलवाना श्लोको

प्रभुना देरासर मां प्रवेश करतां पहेला त्रणवार निस्सीही करवी पछी प्रभु पासे नीचेना स्तुतिना श्लोको बोलवा ·

पूर्णानन्दमयं महोदयमयं कैवल्य चिद्दङ्मयं,
रूपातीतमयं स्वरूप रमणं स्वाभाविकी श्रीमयम् ।
ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वाद विद्यालयं,
श्री सिद्धाचल तीर्थराज मनिशं वंदेऽहमादीश्वरम् ॥

* * * *

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ।
तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूपणाय;

तुभ्य नमस्त्रिजगत्त परमेश्वराय
तुभ्य नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥

* * * *

अद्य मे सफल जन्म अद्यमे सफला क्रिया ।
शुभोदिनोदयोऽस्माक जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥

पछी साथियो करी प्रणखाण खमासणा देई चैत्यवंदन कर वुं

सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्त मेघो
दुरित तिमिर भानु कल्पवृक्षोपमानः ।
भव जल निधिपोत सर्व सम्पत्ति हेतु
स भवतु सतत व श्रेयस शान्तिनाथ ॥

आदि देव अलवेसरु, विनीतानो राय ।
नाभिराय कुलमंडनो, मरुदेवा माय ॥
पांचसो धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल ।
चौरासी लाख पूर्वनु, जस आयु विशाल ॥
वृषभ लन्छन जिनवर धरु य, उत्तम गुणमणि खान ।
तस पद पद्म सेवन थकी, लहिये अविचल ठाण ॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोये ।
जाई जिणबिम्बाई, ताई सव्वाई वंदामि ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सिहाणं पुरिस-वर-पुण्डरियाणं पुरिसवर गंध हत्थीणं, लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं, लोगपइवाणं लोगपज्जो अ गराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पड़िहयवर-नाण दंसणधराणं वियट्टछऊमाणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत मक्खय मव्वा-वाह सपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिय भयाणं जे अ अइया सिद्धा जे अ भविस्संति णागये काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ।

॥ अथ जावति ॥

जावति चेइआई, उड्ढ अ अहे अ तिरि अ लोये अ ।
सव्वाई ताई वन्दे, इह सतो सत्थ सताई ॥

पछी खमासमण देवु

॥ अथ जावत ॥

जावत केवि साहु, भरहेरवय महा विदहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्ड विरयाण ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्य्योपाध्यायसर्व साधुभ्य

पछी स्तवन कहवु

सिद्धगिरिनु स्तवन

(राग—आलिम सरकार के पाले पड़े हैं)

सिद्ध गिरि मडन आदि जिनद है
आदि जिनद है नाभि नन्दन है । सि०

सवार्थसिद्धथी चवी, विनीता नगरी आविया ।
माता मरुदवी हर्ष अपार है सि० १

युगला धर्म्म निवारिया, प्रथम नरवर थई
युगल ना नयना मरूल भइ है । सि० २

आदि मुनिवर थई, घाति करम दुरे करी
केवली जिनवर आदि हुये है सि० ३
केवल आप्युं मायनें, मोकली शिवपुर मां
माता शिव वहु जोवा चले है। सि० ४
मोहन मूरत आपनी, प्रतापीये जगमां खरी
माणेक नें प्रभु तारो आधार है। सि० ५

जय वीयराय

जय वीयराय जगगुरु होऊ ममं तुह पभावंओ भयवं; भव निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरणं च, सुहगुरु जोगो, तव्वयण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ (*हाथ जरा नीचे करवा*) वारिज्जई जईवि नियाणवंधणं, वीयराय ! तुह समये, तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे २ तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहि-लाभोअ; संपज्जऊ महाएअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥

सर्व मंगल माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्म्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

(पछी समायाई नें

अरिहन्त चेइयाण

अरिहंत चेइयाण करेमि काउस्सग्ग वदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए बोहिलाम वत्तिआए, निरुवसग्ग वत्तिआए, सिद्धाए मेहाए धिईये धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ उससिएण

अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण, खासिएण, छीएण, जमाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण भमलीए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अग संचालेहिं, सुहुमेहिं—खेल सचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि सचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाईएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताण भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

पछी एक नवकार नो काउस्सग्ग करी —

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्य्योपाध्यायसर्व साधुभ्य

कही थोय कहेवी ।

थोय

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया, ।
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया ॥
जगस्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ।
केवल सिरिराया, मोक्ष नगरे सिधाव्या ॥

पछी यथाशक्ति पच्चक्खाण करवु,
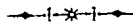
सिद्धगिरि नुं स्तवन

(राग-काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

सिद्धाचल सणगार, आदि जिनने प्रणाम
नरक निगोदे मोहे भमियो, काल अनंते दुःखे गमियों
कहेता नावे पार । आदि० ॥ १ ॥
पशु पणुछे अति दुःखदायी, धर्म्म तणी गई वात भुलाई,
हवे शरणागत तार । आदि० ॥ २ ॥
देव गतिमां अति दु ख पायो, इन्द्रियना सुख काज धायो,
दुर्गति ना दातार आदि० ॥ ३ ॥

नर भव रूडा पुण्ये पाया, प्रभु दर्शन थी ह हरखायो
उतरशुं भवपार आदि० ॥ ४ ॥

कर्म्म महु जीवोनें दुःख आपे, धर्म्म भविनां दुःखा कापे
कर्म्म रहित करनार आदि० ॥ ५ ॥

जीव अनंता इण गिरि आवी शिव सुख पाम्या कर्म्म हटावी
कर्म्म सवि मुझ टाल आदि० ॥ ६ ॥

मुक्ति कमल छे मोहन गारु, भवि जीवों ने लागे प्यारु
"माणक" प्रभु आधार ॥ ७ ॥

गिरिनार मंडन नेमनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग-काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

रैवतगिरिना स्वामी, नमि जिननें प्रणाम ।
शरण प्रभुजी आपनुं प्यारु, दुर्गति नें छे हरनारु
आपा शरणु आज नेमि० ॥ १ ॥

दिल धरि दया प्रभु सारि, पशुआं नें लीधां उगारी
दीधां अभय दान नेमि० ॥ २ ॥

मोह माया नें दूर हटावी, मुक्ति वधुनें मनमां लावी,
त्यागी राजुल नार नेमि० ॥ ३ ॥

नव भव केरी प्रीतिनें तोड़ी, मात पितादि राज्यनें छोड़ी
लीधू संजम धार नेमि० ॥ ४ ॥

कर्म्म खपावी केवल पाया, भवि जीवोंनें धर्म बताया,
सुरनर करतां सेव नेमि० ॥ ५ ॥

देशना देई राजुल नें तारी, पाम्या प्रभुजी भवजल पारी,
नेमीश्वर गिरनार नेमि० ॥ ६ ॥

मुक्ति मंदिर मां आप बिराजे, सूरि प्रताप थी सीजे काजे
करो माणेक सुखकार नेमि० ॥ ७ ॥
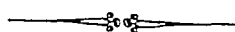
तारंगाजी तीर्थनुं स्तवन

(राग-खूने जिगर की पीती हू वस गममे तेरे यार)

तारंगा तीरथ स्वामी रे, उतारो भवपार
मैं अर्ज करूं शिरनामीरे, उतारो भवपार । १ ।

प्रभु क्रोध मानना त्यागी, माया लोभ गया भागी,
संसार ना नही रागी रे उतारो० । २ ।

प्रभु मुक्ति पुरी मां राजे, प्रभु पूजे मुक्ति काजे,
कुमति पूजवा लाजे रे उतारो० । ३ ।

ससार सागर छे खारो, मुझ आसरो एक तुम्हारो,
भवसागर पार उतारो रे उतारो० । ४ ।

ज्यां कोटी शील होवे, भवि सिद्ध शिलाने जोवे,
मुक्ति धारिये मन मोहे रे उतारो० । ५ ।

में तारंगा तीरथे आव्या, अजितनाथ दर्शन पाया,
हरखे प्रभु गुण गाया रे उतारो० । ६ ।

नन्दीश्वर द्वीपनी होवे, रचना त्यां सुन्दर जोवे
भवो भव नां पातिक खोवे रे उतारो० । ७ ।

सूरि मोहन गुरु सारा, प्रताप सूरि पद धारा,
माणेक करो भव पारा रे उतारो० । ८ ।

भरूच मंडन मुनिसुव्रत प्रभुनु स्तवन
(राग-श्री आदि जिनंदा)

मुनिसुव्रत स्वामी, कम्म नें वामी, शिव सुख पामी,
तुमे थया जिनराज ।

मुझ समकित आपो, दुःखड़ा कापो, दूर जाये पापो,
पामु सुख अपार । १ ।

घोर भवोदधि मांहे रुलियो, सह्यां दुःख अपार ।
ते दुःख प्रभुजी कह्यां न जाये, क्यां करु जई पोकार रे
। मुनि० २ ।

नरक निगोदे माहें भमियों, थयो विकल अज्ञान ।
पुण्य उदय थी नर भव पामी, कर्युं देशनामृतनुं
पान रे । मुनि० ३ ।

शरणे आव्यो प्रभुजी तमारा, भवजल तरवा काज ।
साचुं शरण प्रभु आपो मुझनें, पामु अविचल राज रे
। मुनि० ४ ।

दर्शन पूजन थी केइ जीवो, पाम्यां भवनो पार
कुमतिओ जे दूर रह्याते, भमिया घोर संसार रे
। मुनि० ५ ।

भरुच नगरे आप विराजो, तरण तारण जिनराज ।
सुरि प्रताप ना माणेक नें प्रभु, आपो अविचल राज रे
। मुनि० ६ ।

श्री स्थमन पार्श्व जिन स्तवन

(राग-मथुरा मां खेल खेली आया हो श्याम)

स्थमनपुर ना वासी हो देव, पास जिन प्यारा।
सूक्ष्म निगोद मां फरी आव्या हुं, जहां छे दुःख अपारा
हो देव पास० ॥ १ ॥

सूक्ष्म थावर मां भव घणेरा, कर्या अति दुःख दाया
हो देव पास० ॥ २ ॥

पृथ्वी अप तेऊ वायु काये, वनस्पति मो जारा
हो देव पास० ॥ ३ ॥

विकल पणु पाम्यो पछीर, नर भव पायो सारा
हो देव पास० ॥ ४ ॥

अश्वसेन कुल प्रभु आव्या, वामा मात मलारा
हो देव पास० ॥ ५ ॥

कष्टा सही कमठ नें तार्या, दिल धरी दया भारा
हो देव पास० ॥ ६ ॥

स्थमन पार्श्व जिन नाम तुमारु, भवा भव भीति मिटाया
हो देव पास० ॥ ७ ॥

दर्शन करी हुं अरज करूं छुं, हरो जन्म मरण ना वारा
हो देव पास० ॥ ८ ॥

सूरि मोहन गुरू राय प्रतापे, करो माणेक भव पारा
हो देव पास० ॥ ९ ॥

सिद्धगिरी जी नुं स्तवन

राग-सासरीये जईनें केजो एटलडु केजो एडलडु प्रीतमजी
तेडा मोकले)

सिद्धगिरि ऊपर आदि जिनन्द जी, आदि जिनन्द जी
चालो विमल गिरि भेंटवा ।

आदि जिनेश्वर जग परमेश्वर २
जग गुरु जग हितकारी भविका, कारी भविका चालो० १
पूरव नवाणु वार आदि जिन आव्या २
गिरिवर फरसन काज भविका, काज भविका चालो० २
रायण तरुतले देशना दीधी २
तारिया जीवो अनेक भविका, अनेक भविका चालो० ३
कारतकी पूनमें शीव पद पाम्या २
द्रावीड़ नें वारिखील्ल भविका, खील्ल भविका चालो० ४

पांच कोटि सह पुण्डरीक स्वामी २
चैत्री पूनमे शिव वास भविका, वास भविका चालो० ५
इण गिरि आवी जीवो अनन्ता २
वरीया शिव पद सार भविका, सार भविका चालो० ६
मोहन गिरिना ध्यान प्रतापे २
वरशे माणेक शिव राज भविका, राज भविका चालो० ७

गिरनार मण्डन नेमनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग-तीरथ नी आशातना नवि करिये)

गीरनारे नेमि जिनेश्वर वंदो,
हरि ऐवो परम सुख ना कंदो
हरि एवो टाले भवना फंदो
हरि प्रभु तारण हार गिर० ॥ १ ॥
चार गतिना दु खनें दूर करवा,
हरि वन्या शूर वीर कर्म हरवा
हरि लीधू संयम भव जल तरवा,
हरि पाम्या चौथु रे ज्ञान गिर० ॥ २ ॥

घाती करम नी फौज नें हटावी,
हांरे श्रेणि क्षपक मनमां लावी
हांरे शुक्ल ध्यान नी श्रेणि चलावी,
हांरे लीधूं केवल ज्ञान गिर० ॥ ३ ॥
देई उपदेश नें तारी राजुल नारी
हांरे नव भवनी वात विचारी,
हांरे आप्युं संयम शिव सुखकारी,
हांरे लीधूं मुक्ति नुं राज गिर० ॥ ४ ॥
कर्म्म खपावी शिव सुख वरिया,
हांरे संसार समुद्र थी तरिया
हांरे मुक्ति मोहन दिल मां धरिया,
हांरे माणेक भव पार गिर० ॥ ५ ॥

पुण्डरीक स्वामी नुं स्तवन

(राग-थई प्रेम वश पातालिया)

पुण्डरीक गिर पर जावुं, पुण्डरीक प्रभु ध्यान सोहावुं।
नमि वंदने पावन थावुं जेथी अजर अमर पद पावुं रे।
॥ पु० १ ॥

ए तीरथ छे सुख दाया, गिरिवर नी शीतल छाया ।
प्रथेश जिनवर तिहां आया, जेना सुर नर सेवे पाया रे ।

॥ पु० २ ॥

ए तारक तीर्थ कहावे, इण गिरि जे हरखे आवे ।
भवो भवना पाप गमावे, अविचल सुखड़ां पावेरे ।

॥ पु० ३ ॥

पांच कोड़ी मुनि परिवरिया, पुण्डरीक विभु गुण भरीया।
कंचन गिरि ध्याने तरिया, चैत्री पूनमे केवल वरियारे ।

॥ पु० ४ ॥

शिव पाम्या पुण्डरीक स्वामी, तेणे पुण्डरीक नाम गुणधामी
प्रसिद्ध थयु अभिरामी सवो अक्षय सुखना कामी रे ।

॥ पु० ५ ॥

बार पर्षदा मांहि प्रभु भाखे, सुण सोहम थयु जग आखे ।
शत्रुञ्जय महात्म्य साखे, सेवे ते शिव सुख चाखेरे ।

॥ पु० ६ ॥

मुक्ति कमल मोहन गारु, हरि प्रतापे लागे प्यारु ।
मायक नें ए आपो सारु, ए तीर्थ भवो भव तारु रे ॥

॥ पु० ७ ॥

पुण्डरीक स्वामी नुं स्तवन

(राग—शोभा सोरठ देशनी शीरे कहुं)

पुण्डरीक गिरिवर सेविये, जेना नामे नव निधि थाय।
जाऊं वारीरे पुण्डरीक प्रभु नमो नेहशुं॥
प्रभु आदि जिनंदना गणधरुं,
पुण्डरीक नामे विख्यात। जाऊं० ॥ १ ॥
प्रभु रायण तरु-तल उपदेशे,
गिरि महिमा अपरंपार। जाऊं० ॥ २ ॥
गिरि ध्याने केई शिव सुख वर्या
दूर करि भव संताप। जाऊं० ॥ ३ ॥
गिरि नामे गुण आवे घणा,
जेना नामे मंगल माल। जाऊं० ॥ ४ ॥
इम प्रभु मुखे महिमा सांभली,
पांच कोटि मुनि संगाथ। जाऊं० ॥ ५ ॥
इहां अनसन करी एक मासनुं,
घाति करम कर्य्या दूर। जाऊं० ॥ ६ ॥
केवल लही शिवपुर मां,
कीधों चैत्री पूनमें वास। जाऊं० ॥ ७ ॥

एम पुण्डरीक आगे प्रभु कहे,
इहां पामसोपद निर्वाण । जाऊ० ॥ ८ ॥
जेथी पुण्डरीक गिरि प्रसिद्ध हुओ,
जेना नामे भव भय जाय । जाऊ० ॥ ९ ॥
गिरि मोहन प्रतापे कीजिये,
माणेक नो शिवपुर धाम । जाऊ० ॥ १० ॥

पुण्डरीक स्वामी नु स्तवन
(राग—अहा केवुं भाग्य जाग्यूं—)

धन्य दिवस आज नो भी,
पुडरीक प्रभु मल्या,
नयने अमीरस निरख्या,
पातिक सवि दूरे टल्या । धन्य ॥ १ ॥
आदि जिनवर आविया,
गिरि गुण हेढ धारिया ।
समय शरणे दई देशना,
भवी जीव घड़ तारिया । धन्य० ॥ २ ॥
गिरिराज ना ध्याने करी,
पाप करम दूरे हरी ।

पाम्या अने वली पामशे,
शिव सुखने केई भवतरी । धन्य० ॥ ३ ॥
पुण्डरीक गणधर आविया,
पंच कोटि मुनिवर लाविया ॥
चैत्री पूनमे कर्म वामी,
शिवपुर सिधाविया । धन्य० ॥ ४ ॥
पुण्डरीक नाम प्रसिद्ध पाम्युं,
जगति तल उपरे ।
मोहन प्रतापि गिरि पामी,
माणेक मुक्ति वधु वरे । धन्य० ॥ ५ ॥

तलाजा तीर्थ ना सांचा देव

श्री सुमति नाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग—झट जावो चंदन हार लावो)

तुमे तालध्वज गिरि आवो, भवजल तरवानें,
ए तीरथ जगमां सार, पार उतरवा ने ।

शैर

सोरठ देशमां शोभतो, तालध्वज गिरिराय,
उत्तम ये गिरि पामी नें, करो सेवा सदा सुखदाय । भ० १ ।

शेर

देवो नें पण दोहिलो, मानव नो अवतार,
पामी धर्म नें आदरो, ये उतार भवपार । भव० ॥ २ ॥

शेर

साचा देव जगमां खरा, सुमतिनाथ महाराज,
आशा फले भवि जीवनी ये तारण तीरथ सहाज । भव० ३ ।

शेर

दुष्ट करम दूरे करो, हरो कुमति दूर,
सुमति आपो मुझने, प्रभु नित्य रहू हजूर । भव० ॥ ४ ॥

शेर

मोहन मुक्ति मंदिरे, जावा मन ललचाय ।
तीर्थ प्रताप थे मल्ये, त्यारे माणेक सुखियो थाय ॥ भव० ५

सिद्ध क्षेत्र श्री गौड़ी पार्श्वनाथनु स्तवन

(राग-भवि भावे देरासर आवे—)

तुमे भजो गौड़ी जी पास, शिवपद वरवानें
प्रभु भेटे भव दु ख जाय शिव० ॥

शेर

माह काशी देश मां, नगरी वणारसी सार ।
अश्व सेन कुल मण्डना, साहे पासकुमार मनोहार । शिव० १ ।

दिलवशी दया खरी, बलतो उतार्यों नाग ।
महामंत्र देई प्रभु, कर्यों सुखियो तेने अथाग । शिव० २ ।
मही परीसहो प्रेमथी, कमठादिकना जेह ।
केवल लही शिवसुखने, वर्या पार्श्व प्रभु गुण गेह । शिव० ३ ।
प्रकट प्रभावी भेटिया, गौड़ी जी प्रभु पास ।
वंदो पूजो प्रेम थी, जेथी थाये मुक्ति मां वास । शिव० ४ ।
सूरि मोहन पद सेवतां, नित्य प्रताप सुरीश ।
तस शिष्य माणेक चाहतो, प्रभु प्रतापे गुण जगीश । शिव० ५ ।

शंखेश्वर तीर्थनुं स्तवन

(राग-मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे—)

पास संखेश्वर स्वामी सार करो
मारा कर्म दलो सवि दूर करो ।
त्रण ज्ञाने प्रभु आविया, जननी उदर जिनराज ।
पोष वदि दशमी दिने, भवि जीवों नें काज ॥
प्रभु जन्म थी दुःख दोहग हरो० ॥ पास० ॥१॥
जन्म महोत्सव जेहनो, सुरपति सघला करे ।
पार्श्व प्रभु सेवा थकी, भव भय दूरे हरे ॥
भव भय थी मुज उद्धार करो० पास० ॥२॥

कह्यो सही कमठ तणा, कर्यो अति उपगार।
फणीधरनें नवकार थी, आप्यु सुख अपार॥
आपो सुख अक्षय हुं मांगु खरो॥ पास०॥३॥
सयमी नें केवली थई, अनेक जीवों तारिया।
रागादि दुष्ट चोरटा, आपे दुर हटाविया॥
रागादि हटावी मोहे पार्श्व करो॥ पास०॥४॥
मुक्ति कमल सोहामणु, थाई प्रभु दिलमांय।
मोहन प्रतापी आप छो, प्रताप बीजे न कहाय॥
प्रतापे माणेक भव पार करो॥ पास०॥५॥

शंखेश्वर पार्श्वनाथनु स्तवन

(भार वहामे हुं तो नाजुक नार)

पास शंखेश्वर साहिबारे लाल
भवि जीवों ना तारण हाररे, मन मदिर प्रभु आवजोरे लाल।
चिन्ता मणि सम आपछोरे लाल,
भवो भवना दारिद्र हरो दूर रे। मन०॥१॥
अखूट खजाना मां आपना रे लाल,
गुण रत्नों ना नहि पार रे। मन०॥२॥
कर्म कटक नीति करी, जीति रागने रीस,

हास्या दिक दूरे करी, आप थया जगदीश ।

तारो सेवक नें गही हाथ रे । मन० ॥ ३ ॥

प्रकट प्रभावी पास जी, बलतो उगार्यो नाग,

नवकार मंत्र सुनावी नें, कर्यो सुखियो तेने अथाग ।

तेम आपो अक्षय सुख सार रे ॥ मन० ॥४॥

देव विमाने पूजता, सुरेन्द्रादिक देव ।

पातालेन्द्रे पण करी, पास जिनेश्वर सेव ॥

कोटि देव करे तुम सेवरे ॥ मन० ॥५॥

वढ़ियार मां बिराजता, शंखेश्वर प्रभु पास ।

यादव नी जरा हरी, पूरी वांछित आस ॥

आश धरी मुक्तिनी तुम पास रे ॥ मन० ॥६॥

महिमा सुणी आपनो, देश देश ना लोक ।

भक्ति भेटणुं लावता, नर नारि ना थोक ॥

प्रभु गुण गावे श्रीकार रे ॥ मन० ॥७॥

मुक्ति मन्दिरे वसो, शिव रमणी संगाथ ।

अविचल पदवी आपीनें, दास दरो सनाथ ॥

गणी माणेक विजय कहे एहरे ॥ मन० ॥८॥

पानसर तीर्थपति महावीर प्रभुनु स्तवन

(राग-शी गति थासे हमारी—)

शी गति थासे हमारी, वीर शी गति थासे हमारी
पानसर तीरथे वीर जिनेश्वर, तुमे जगत उपगारा,
क्षत्रिय कुले लेई अवतारा, वर्तान्यो जयकारा । वीर० १ ।
चैत्र सुदि तेरस जयकारी, लागे अति मनोहारी ।
ते दिन जन्म लियो गुणधारी, भविजन नें हितकारी । वीर० २ ।
छपन दिशि कुमरी मलि आवे, गुण प्रभुजीना गावे ।
सुरपति आवी हरखे वधावी मेरुगिरिए लई जावे । वीर० ३ ।
बालपणो प्रभु क्रीड़ा करतां देव तिहां एक देखे
फणीधर रूपे प्रभु ने चलावे, कर करी दुर नाखे । वीर० ४ ।
राय सिद्धारथ नंदन वीरजी, त्रिशला देवी जाया ।
महादानी तुमें बिरुद धराया, तुमि सेवक में आया । वीर० ५ ।
चार गति दुःख चमन तुमे, छेदी थया निरागी ।
ते गति ना सुख वधन फापो, ते लगनी मुज लागी । वीर० ६ ।
गणी मुक्ति विजय गणधारी, कमलसूरी हितकारी ।
मोहन प्रतापे प्रभु गुण गावे, मार्फत करो भव पारी । वीर० ७ ।

केशरिया जो तीर्थनुं स्तवन

(राग - शी गति थासे हमारी)

तीर्थ केशरिया भारी देव, तीर्थ केशरिया भारी,
धुलेवा नगर ना स्वामी तुमे, श्री आदि जिन राया;
नाभिराय कुल मण्डन तुमे, विनीता नगरीना राया ।
देव भव जल पार उतारो ॥ १ ॥
युगला धर्म आपे निवार्यो, थई प्रथम नर राया
आदि मुनिवर थया प्रभुजी, आदि जिनवर कहाया दे०॥२॥
एक हजार वर्ष लगे विचरी, कर्म कठिन दूर कीधा
केवल पामी मायनें दीधूं, प्रेम प्रकट तिहां कीधा दे०॥३॥
काला बावा केशरियाजी, आदिश्वर वलीबोले,
हरिहर ब्रह्म पुरन्दर देख्या, नावे कोई तुम तोले ॥४॥
मुक्ती कमल नें लेवा काजे, ध्यान मोहन तुमारुं
सूरि प्रताप माणेक धरतो, अविचल पदले सारुं दे० ॥५॥

केशरिया जी तीर्थ नुं स्तवन

(राग तोरण वंधावो भविया प्रभुघर आयारे)

धुलेवा नगर के स्वामी, आदि जिन राया रे ।
आदि जिनरायारे, मरूदेवी जायारे
नाभि राय कुल आया ॥१॥

केइ नेसधारा केइ पास नारी माला

ऐसे दूषण के वारा ॥ आदि० ॥२॥

जिनवर देव ध्यावो, देवन मिले आवो

जन्म जन्म सुख पावो ॥ आदि० ॥३॥

तीर्थ श्वेताम्बर भारी, मूरति मोहन गारी,

नयना ने लागे प्यारी ॥ आदि० ॥४॥

अजब ज्योति भारी, आलम सेवे सारी,

केसर चढ़ावे भारी ॥ आदि० ॥५॥

पाड़ी जाड़ी का घेरा, बीचमें किया है डेरा

टालो जन्म के फेरा ॥ आदि० ॥६॥

मुक्ति का राज लेवा, आयो केसरिया देवा,

माणेक विजय की सेवा ॥ आदि० ॥७॥

आबुजी तीर्थनु स्तवन

(राग-आई बसन्त बहाररे प्रभु बैठे—)

अर्बुद गिरि सुखकार रे, ऐ तीरथ सेवो,

तीरथ सेवो नहीं जग ऐवो,

भवि जनने हितदाय रे ऐ० ॥१॥

मूल नायक आदि जिन पूजो,

चौमुखे पास जिनराय रे ऐ० ॥२॥

जिनवर उत्तम होवे,

शिव सुन्दरी भरतार रे ऐ० ॥३॥

द्रौपदी ए जिन प्रतिमा पूजी,

छट्ठे अंगे देखो रे ऐ० ॥४॥

सूरिआभ सूरे प्रतिमा पूजी,

रायपसेणी माहें रे ऐ० ॥५॥

अंग उपाशके भगवति मांहे,

महानिशीथे देखो रे ऐ० ॥६॥

जाण्या छतां तुजनें अवगणे,

होवे बहुल संसार रे ऐ० ॥७॥

वांदे पूजे ध्यावे जे प्राणी,

सुख अनंतु पावे रे ऐ० ॥८॥

सूरि प्रताप नो माणेक सेवी,

वरशे शिववधु नार रे ऐ० ॥९॥

तीर्थ पावापुरीनुं स्तवन

(राग मथुरामा खेल खेली आया हो—)

पावापुरी नगरी ना स्वामी, हो देव वीर जिनराया

वीर जिनराया प्रभु शिव सुखदाया
जन्म मरण हटाया हो देव० ॥१॥
गौतमादिक ना संशय फेटी,
मारग शुद्ध बताया हो देव० ॥२॥
चंडकौशिकनें अर्जुन माली,
तार्या तम मुझ तारो हो देव० ॥३॥
सोल पहोर प्रभु देशना देई,
शिवपुर माहि सीधाया हो देव० ॥४॥
कार्तिक अमावस्या नी रयणीये,
अजर अमर पद पाया हो देव० ॥५॥
पावापुरी थल मन्दिरे बिराजो,
भवि जन तारण हारा हो देव० ॥६॥
हरि प्रताप ना माणेक नें प्रभु,
उतारो भव पारा हो देव० ॥७॥

पावापुरी तीर्थनु स्तवन

महावीर जिनन्दा रे, प्रभुजी मोरे तारना
दोष अठारह दूर निवारा, घाति चार करम हटाया
पाया केवल ज्ञान प्रभु० ॥१॥

समव शरण मणि रयणे जड़ीयुं, पीठे भामण्डल जलकीयुं,
वृक्ष अशोक रसाल प्रभु० ॥२॥
तिहां वेसी प्रभु देशना देवे, निज निज वाणीये समजीलेवे,
सुरनर तिरि हितकार प्रभु० ॥३॥
वर्द्धमान वीर महावीर तुमारां, नाम प्रसिद्ध हुआं गुणवालां,
तूंहीज तारण हार प्रभु० ॥४॥
चंड कोशिकनें अर्जुन तार्या, घोर करम करताने उगार्या,
मुजमें क्यों करो वार प्रभु० ॥५॥
तीन लोक मां महिमा भारी, संघ सहुआवे पावापुरी धारी,
मानें सफल अवतार प्रभु० ॥६॥
जल मध्ये जल मंदिर साहे, वीर प्रभु देखी मन मोहे,
वंदना वार हजार प्रभु० ॥७॥
मुक्ति पुरिये मारा वास करावो, माणेक विजयनां कर्म हरावो,
वीनति वारंवार प्रभु० ॥८॥

पावापुरी तीर्थनुं स्तवन

आवो आवो पावापुरी ध्यावो, भवियाँ
पावापुरी मण्डन सवी अघ खण्डन
वीर को तनमें वसावो, भवियां आवो० ॥१॥

अतुल बली पण क्षमा के धारी,
धरम शरण चित्त लावो भवियां आवो० ॥२॥

पूजन कर रत्नत्रयी को याचो,
वेगे शिव पद पावो भवियां आवो० ॥३॥

जन्म क्षत्री कुण्ड निर्वाण पुरीये,
भेंट के पाप गमावो भवियां आवो० ॥४॥

नर भव केरा सार यही है,
किम्ये करम को जलावो भवियां आवो० ॥५॥

तीरथ सेवा सिव सुख मेवा,
लेवा ने झटपट आवो भवियां आवो० ॥६॥

जल मदिरमां वीर जिन पूजी,
आतम ज्योति जगावो भवियां आवो० ॥७॥

मोहन प्रतापे माणेक जंपे,
भवो भव ताप मिटावो भवियां आवो० ॥८॥

कदम्ब गिरि तीर्थनुं स्तवन

(पीयू पेली पैसखर नो आवजो)

तुमे कदम्ब गिरि ने जुहारजोरे
वेला गिरवर भेंट्या नें आवजो

वीर प्रभुनुं देहरूं मनोहार छे, देशी वावन सोहे अपार छे,
जेनी शोभानो नहीं पारछे रे, तुमे-कदम्ब० ॥१॥
वीर प्रभुनी वल अतुल छे, जेनुं धैर्य जगमां मशहूर छे,
जेना गुणो अति भरपूर छे रे, तुमे-कदम्ब० ॥२॥
गिरि उपर नेमि जिनचंद छे, प्रभु समुद्र विजय कुलचंद छे,
ए शिवा देवी ना नंद छे रे, तुमे-कदम्ब० ॥३॥
कदम्ब गणधर नां पगलां विशाल छे, करि अणशण यथा भवपार छे,
साथे मुनिवर कोड़ी सार छे रे, तुमे-कदम्ब० ॥४॥
ध्यान गिरिनुं अति सुखकार छे, सुख मुक्तितणु दातार छे,
प्रतापे माणेकनें आधार छे रे, तुमे-कदंब० ॥५॥

सम्मेत शिखर तीर्थनुं स्तवन

(राग मारुं वतन या मारु वतन)

सम्मेत शिखर गिरि तारण-तरण-
तारण तरण भव दुःख हरण । स० ॥१॥
अजित संभव नें अभिनन्दन जी,
सुमति पद्म प्रभु ध्यान धरण । स० ॥२॥
सुपार्श्व देवनें चन्द्र प्रभुजी,
सुविधि शीतल श्रेयांस जिनन्द । स० ॥३॥

विमल अनन्त नें धर्म जिनेश्वर,

शांति कुन्थु अर मल्ली तरण । स० ॥४॥

मुनिसुव्रत नमि पार्श्व वी आदि,

पाम्या मुक्ति पद कर्म हरण । स० ॥५॥

ए गिरि सेवा मुक्ति ना मेवा,

लेवा प्रभुजी हरख धरण । स० ॥६॥

सूरि प्रताप गिरि गुण गावे,

माणेक पावे सुख अनन्त । स० ॥७॥

सेरीसा तीर्थनु स्तवन

(राग-आशा करीने अमे आविया जिनन्दजी)

सेरीसा पास जिन वंदिये, जिनदजी, पाप पटल जाय दूर रे,

आव्यो सरीसे भेटवा जिनन्दजी ॥१॥

शांत मुद्रा प्रभु पासनी जिनदजी निरखत तृप्ति न थायरे,

आव्यो० ॥२॥

दर्शन विन भूलो पड्यो, जी० भमियो घोर संसार रे,

आव्यो० ॥३॥

भीस्लादिक पण दर्शने, जी० उतर्या भव सन पार रे,

आव्यो० ॥४॥

दर्शने दर्शने नीपजे जी० मिथ्यात्व कीजे दूर रे,
आव्यो० ॥५॥

विषय कषाय नें जीतवा जी० हरवा भव जंजाल रे,
आव्यो० ॥६॥

मुक्ति मोहन पद आपजे जी० थाये माणेक सुखकार रे,
आव्यो० ॥७॥

पालीताणा आदीश्वर प्रभुनु स्तवन

(राग-बोल बोल आदीश्वर वाला काई थारी मरजी रे)

श्री आदीश्वर प्रभुजी प्यारा
मांशु बोलो रे के कयु अबोला रे

विनीता नगरी छोड़ी चल्या, छोड़ी राज्य नी ऋद्धि रे।
वनवासी थईने तुमे बेठा, मारी सार न लीधी रे॥
के कयु० ॥ १ ॥

ऋषभ ऋषभ हूं दिन भर केती, वाटूं जोवूं तुम्हारी रे।
चीठी न दीधी सुख शाता नी, पामू दु:ख अपारी रे॥
के कयु० ॥ २ ॥

आई वधाई भरत नी आगे, प्रभुजी आव्या केरी रे।
हस्ती स्कंधे मरुदेवी माता, बेठा हर्ष अपारी रे॥
के कयु० ॥ ३ ॥

देव दुन्दुमी सुणि माता, वीतराग पणु भावे रे।
पडल नयन नां दूर पलायां, ज्ञान केवल त्यां पावे रे॥
के कयु ०॥ ४॥
कमल दई माय नें सारी, सुत-वहु जोवा सिधार्या रे।
मुक्ति मदिर मांहि विराज्यां, पाम्यां सुख सवायां रे॥
के कयु ०॥ ५॥
पालीताणे मोटे देहरे, आदि जिन सुखकारी रे।
मुक्तिनां मोहन सुख लेवा, पामू भवजल पारी र॥
के कयु ०॥ ६॥
सूरि प्रताप प्रभु गुण गावो, पावो मगल माल र।
माणेक विजय नें प्रभु आपो, अक्षय सुख रसाल रे॥
के कयु ०॥ ७॥

भोयणीजी तीर्थनु स्तवन

(राग-अजित जिनन्द शुं प्रीतडी)

मल्ली जिनेश्वर वीनवी
अवधारो हो मुझे एकज आज।
गुणमणी रयण भडार छो
भवसायरे हो तरवाने जहाज के। मल्ली०१।

राग द्वेष नें प्रभु ते जित्या,

वली जीत्या हो तें क्रोध मान।

जीती ममता तें वली,

जेथी यथा हो तुमें भगवान के। मल्ली० २।

क्रोध मान थी हूं घेरियो

लोभ अजगर हो मुझ डस्यो आज।

राग द्वेष दोय आकरा

दूर कीजे हो गुण निधि महराज के। मल्ली० ३।

कुकवाय भोयणी मध्यमां

केवल पटेलना हो क्षेत्र मझार।

प्रगट हुआ पुण्य उदये

तिहां वरत्यो हो घणो जयजय कार के। मल्ली० ४।

वगर बलद नां गाडा मांहीं,

विराज्या हो प्रभु मल्ली जिनन्द।

गाड़ी चाल्युं अचरिज हुयो

जेने सेवे हो नर नारी नरिन्द के। मल्ली० ५।

प्रभु शरणे आव्यो रे आपना

सेवक नो हो करो ने उद्धार।

देव दुन्दुभी सुणि माता, वीतराग पणु भावे रे।
पडल नयन नां दूर पलायां, ज्ञान केवल त्यां पावे रे॥
के कपु० ॥ ४ ॥

केवल देई माय नें तारी, सुत-वहु जोवा सिधायां रे।
मुक्ति मदिर मांहि विराज्यां, पाम्यां सुख सवायां रे॥
के कपु० ॥ ५ ॥

पालीताणे मोटे देहरे, आदि जिन जुहारी रे।
मुक्तिनां मोहन सुख लेवा, पामू भवजल पारी रे॥
के कपु० ॥ ६ ॥

सुरि प्रताप प्रभु गुण गावो, पावो मंगल माल रे।
माणेक विजय नें प्रभु आपो, अक्षय सुख रसाल रे॥
के कपु० ॥ ७ ॥

मोयणीजी तीर्थनु स्तवन

(राग-अजित जिनन्द शुं प्रीतडी)

मल्ली जिनेश्वर वीनवी
अवधारो हो प्रभु एकज आज।
गुणमणी रयण भडार छो
भवसायरे हो तरवाने जहाज के। मल्ली०१।

मातर तीर्थ स्वामी तुम्हें, साचा देव गुण खान ।
प्रभाव तुम्हारे नजरे निरखी, माने सहु तुम आन ॥तुम०६॥
मुक्ति तणा दातार तुमे छो, कमल सुगंधी जेम ।
मोहन प्रतापे माणेक प्रभुजी, याचे मुक्ति तेम ॥ तुम० ७ ॥

खेराळू मण्डन आदीश्वर प्रभुनु स्तवन

(राग-केशरिया थासुं प्रीत करी रे साचा भाव से)

आदीश्वर वाला विनती मुज स्वीकार शो ।
नरक निगोदे माहें रुलियो, सह्यां दुःख अनन्त ।
तो पण प्रभुजी पार न आव्यो, अरज करूं भगवन्त रे
॥ आ० १ ॥
सर्वारथथी आप चवीने, नयरी, अयोध्या माहीं ।
करुणा सायर आप पधार्या, नाभिराय कुल ज्यांहि रे
॥ आ० २ ॥
चैत्र वदि आठम नें दिवसे, जेम पूरव मां सूर ।
जाया मरुदेवी , दीपे तेज सनूर रे ॥ आ० ३ ॥
युगला धर्म आपे निवार्यो, थई प्रथम महराया ।
प्रथम भिक्षुक तुमे गणाया, केवल आदि पाया रे ॥आ०४॥
केवल देई माय नें तारी, मोकली शिवपुर मांहि ।
कन्या मुक्ति जोवा माता, गयां अति उत्साही रे ॥आ०५॥

प्रभु ज्ञान खजानो दीजिये

जथी पामूं हो हूं भवनो पार क । मल्ली०६ ।

सूरि मोहन ना प्रताप नीं

गुण मांगि हो माणक उदार ।

एकज गुण मुझ आपजो

जेम थाऊं हो मुक्ति भरतार क । मल्ली०७ ।

मातर तीर्थनुं स्तवन

(राग-सुमतो मले विराजो जी)

सुमतो मले विराजो जी, मातर तीरथ स्वामी सुमति मले०

प्रभ ज्ञान सहित अवतरिया, गुणनिधि महाराज ।

छप्पन दिग कुमरि मिल आवे, सूति करम नें काज ॥सुम०१॥

इन्द्र आवि प्रणाम करीनें जिन बिम्ब ग्रहे हाथ ।

सुर गिरि ऊपर लई जेइनें, हरि सहु सगाथ ॥ सुम० २ ॥

जन्मोत्सव करी अति रूडो, मुक माता नी पास ।

ब जिनजीनी सेवा करसे, सघली फलसे आश ॥ सुम० ३ ॥

सयम समय पाम्या प्रभुजी, मनःपर्य्यव मनाहार ।

कर्म खपावी केवल पाम्या, थया मुक्ति भरतार ॥सुम०४॥

सुमति नाथ प्रभु नाम तुमारु, सुणि आव्यो हजूर ।

सुमति प्रभुजी मुझनें आपो करो कुमति दूर ॥ सुम० ५ ॥

मातर तीर्थ स्वामी तुम्हें, साचा देव गुण खान ।
प्रभाव तुम्हारे नजरे निरखी, माने सहु तुम आन ॥तुम०६॥
मुक्ति तणा दातार तुमे छो, कमल सुगंधी जेम ।
मोहन प्रतापे माणेक प्रभुजी, याचे मुक्ति तेम ॥ तुम० ७ ॥

खेरालू मण्डन आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन

(राग-केशरिया थासुंप्रीत करी रे साचा भाव से)

आदीश्वर वाला विनती मुज स्वीकार शो ।
नरक निगोदे माहें रुलियो, सह्यां दुःख अनन्त ।
तो पण प्रभुजी पार न आव्यो, अरज करूं भगवन्त रे
॥ आ० १ ॥
सर्वारथथी आप चवीने, नयरी, अयोध्या माहीं ।
करुणा सायर आप पधार्या, नाभिराय कुल ज्यांहि रे
॥ आ० २ ॥
चैत्र वदि आठम नें दिवसे, जेम पूरव मां सूर ।
जाया मरुदेवी , दीपे तेज सनूर रे ॥ आ० ३ ॥
युगला धर्म आपे निवार्यो, थई प्रथम महराया ।
प्रथम भिक्षुक तुमे गणाया, केवल आदि पाया रे ॥आ०४॥
केवल देई माय नें तारी, मोकली शिवपुर मांहि ।
कन्या मुक्ति जोवा माता, गयां अति उत्साही रे ॥आ०५॥

शिवपुर मांहि आप बिराज, शिवपुर मुझनें आपो ।
सेवी मेहर करो नें स्वामी, पामू सुख अमापोरे ॥आ० ६॥
मूरि मोहन ना शिष्य प्रताप नां, कहे माणक करजोड़ ।
दु खो छेदी मारा प्रभुजी, शिव सुख धो अजोड़ रे
॥ आ० ७ ॥

बिहार शरीफ मंडन आदि जिन स्तवन

प्रभु श्री आदि जिनराय, मुझे दर्शन दीजो र ।
मुझे दर्शन दीजो रे, मुझ दर्शन दीजो रे ॥ प्रभु० १ ॥
अनुपम ज्ञान क सिन्धु, मैंने पाया जगत बधु ।
चौरासी लाख वारनको, मुझे दर्शन दीजो रे ॥ प्र० २ ॥
अनादि काल क फेरे, हरण आयो शरण तेरे ।
कृपा सिंधु कृपा करक, मुझे दर्शन दीजो र । प्र० ३ ।
सुरासुर नर नें देवा, चाहे तुम चरण नी सेवा ।
लेवामे मुक्तिना मेवा, मुझे दर्शन दीजो र । प्र० ४ ।
प्रभु का नाम सुखकारा, प्रभु का ध्यान हितकारा ।
प्रभु का तान भव पारा, मुझे दर्शन दीजो रे । प्र० ५ ।
अनादि काल से संगे, रहा तुम साथ उमग ।

मोहे अब दूर क्यूं कीजे, मुझे दर्शन दीजो रे। प्र० ६।
विहार शरीफ में आया, आदि जिनवर दिल ध्याया।
मानू परम सुख पाया, मुझे दर्शन दीजो रे। प्र० ७।
मुक्ति मां वास करावो, स्वामी सेवक नो दावो।
माणेक नां दिल में आवो, मुझे दर्शन दीजो रे। प्र० ८।

वीर प्रभु नुं स्तवन

(राग—मेरी अरजी ऊपर प्रभु ध्यान धरो)

वाला वीर जिनन्द जरी मेहर करो,
शरणे आया सेवकनी सार करो।
सूक्ष्म निगोद मां थी निकली, वादर निगोदे आवियो।
अकाम निर्जरा योग थी, एकेन्द्री पणु पामियो॥
पामी हारी गयो जैन धर्म खरो। वाला० १।
विकल पणु पम्यां पछी, पंचेन्द्री पणुं पामियो।
अज्ञान नें अविवेक थी, पशु मां घणु पस्ताईयो॥
विवेक जागे मार्ग शुद्ध पामे खरो। वाला० २।
देव गति मां देवता हूं, भोगमां राची रह्यो,
नारकी नार दुःख ने पण, पर वशे बैठी रह्यो।
बैठो जन्म मरण नी दूर करो। वाला० ३।

मनुष्य पणु पाम्यां छतां सुदव गुण निरस्या नहीं ।
रखली रह्यो तेथी प्रभुजी सांपु कई मानो सही ॥
मानें नहीं आगम से दु खी गणो । वाला० ४ ।
आवु आणी नें प्रभु जी, आपना शरणे रखो ।
शरणु प्रभु जी मुझ नें, तारजो बाकी रखो ॥
तारो वीर प्रभु मोक्ष मागु खरो । वाला० ५ ।
ओगणी अठासी सालनी, श्रावण सुदि एकम दिने,
ममी शहर रही चौमासु निश दिने ध्याया तुने ।
ध्यावे पाव अचल पद तेह खरो । वाला० ६ ।
मुक्ति कमल में इ भरी मोहन सुगन्धि वासना ।
वाचक प्रताप प्रम थी, करु वीर नें उपवासना ॥
बार सव मागक धीर होवे खरा ॥ वाला० ७ ॥

श्री चमत्कारी चन्द्रप्रभु नु स्तवन

(राग पूब फिरा जग सारा जग मारा सिद्ध गिरि-स्वामी ना मिला)

चन्द्र प्रभु सुखकारा सुखकारा सेवा भविका भाव शु ।
प्रभु की मूर्ति मनोहर सोहे दखि भविजन ना मन मोहे ।
अगे गुण गण धारा, गण धारा ।सेवो० १ ॥

निर्दूषण नें निर्विकारी, सेवता कर्म्मों खरे भारी।
अन्तरमल दूर कारी दूर कारी। सेवो० २॥
निरंजन प्रभु पड़िमा निरखी, अवर कोई नावे तुम सरखी।
देव ध्याया में परखी में परखी। सेवो० ३॥
देव देवी नित्य प्रभु गुण गावे, प्रभु भक्ति थी नरभव पावे
करे सफल अवतारा अवतारा। सेवो० ४॥
जिन सेवा थी आधी जावे, व्याधि उपाधि पासे नावे।
अजर अमर पद पावे पद पावे। सेवो० ५॥
तीर्थ संखेश्वर पासे राजे, मोटी चंदुर नगरे विराजे।
चन्द्रप्रभु हितकाजे हितकाजे। सेवो० ६॥
मुक्ति कमल मां मोहन सूरि, कर्मों नाशे प्रतापे भूरि।
करो माणेक हजूरी हजूरी॥ सेवो० ७॥

जावाल मण्डन श्री शांतिनाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग—भेख रे उतारो राजा भरथरी)

पुरुषोत्तम परमेश्वरुं, श्री शान्ति जिनराज जी।
शरणे आव्यो रे आपना, आपो शरणुं आज जी॥ पु० १
देव नरक तिर्य्यञ्च मां, सह्या दुःख अपार जी।
नहीं आराध्यो जैन धर्मनें, पामी मनुष्य अवतारजी॥पु० २

जन्म तणा दुःख भोगव्यां, केहा नावे पार जी ।
ते दुःख नें दूर काढ़वा, आव्यो आप दरबार जी ॥ पु० ३
कर नाथ आपा मुझनें, उतरवा भवपार जी ।
वार न करु शर्ण एकनों, ते आपो निरधार जी ॥ पु० ४
मनुष्य भवनें पामी नें, पामी निर्मल दृष्ट जी ।
आराधी शुद्ध धर्मनें, करु कर्म ने छेद जी ॥ पु० ५
मरुधर मांय पण सुरतरु, आवाल नगर मांय जी ।
शांति सुमति पार्श्व, प्रभु चन्द्र आदि जिनरायजी ॥ पु० ६
मुक्ति कमल मनोहरु, मोहन दिये सुवास जी ।
मार्णिक प्रभु प्रतापथी, पामे शिव आवास जी ॥ पु० ७ ॥

सारणाजी तीर्थ नु स्तवन

(राग-लावो चंदन हार लावो)

अर्चित जिनन्द मनोहरा, भवि प्रेम ध्यावो नें
ध्यावे तो शिव सुख पावे । भवि० टे०
राग द्वेष दोष आकरा, करे अति खुवार ।
तेहने वसगी में रहा, तें दुःख पाम्यो अपार । भवि० १
क्रोध मान अंधारा, मां रसो बहु अपराध ।
विवेक दीपक नी पछी, शुद्ध मारग अनाप । भवि० २

चारे कषायों नें प्रभु, आपे कर्या चकचूर।
ते कषायो टालवा, आव्यो हूं आप हजूर। भवि० ३।
तारंगा तीर्थपति नमु, भवजल तरवा काज।
जितशत्रु विजया तणा, कुलमण्डन जिनराज। भवि० ४।
मुक्ति कमल मनोहार छे, जेनो मोहन वास।
सूरि प्रतापे आपजो, माणेक ने शिव पास। भवि० ५।

भालक मण्डन धर्मनाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग—बोल बोल आदीश्वर वाला काईं तारी मरजी रे)

धर्म्म जिनेश्वर सुख कर सारा, सेवो भाव विशाला रे
के प्रभुजी प्यारा रे।
प्रभुजी प्यारा दुःख हरनारा, भव से पार उतारा रे
के प्रभुजी प्यारा रे।
भानुराय ना नन्दन प्रभुजी, सुव्रता माता ना जाया रे
धर्म बताया पाप हटाया, मिथ्या मार्ग तजाया रे।
के प्रभु०। १।
मुक्ति पुरीमां आप विराजो, अविचल पदना धामी रे।
मुक्ति कारणे तुमनें पूजे सुख पामे विशरामी रे।
के प्रभु०। २।

आगम मां प्रभु पडिमा माखी, सुर नर नारी पूजे रे।
सूत्र उत्थाप प्रतिमा काजे, पूखवां कुमति लावे रे।
के प्रभु० । ३ ।

ससार सागर वारो जानी, आम्यो शरणे तुमारा रे।
भास्के मेटो भाग्य उदय थी, पाप पुञ्ज निवारा।
के प्रभु० । ४ ।

सूरि मोहन पट्ट प्रभावी, प्रताप सूरि जानो रे।
माणेक विजय प्रभु मलेथी, जन्म जीवित प्रमाणो रे।
के प्रभु० । ५ ।

केशरियाजी तीर्थ नु स्तवन

(तोरण बधावो मविवां प्रभु घेर आयारे)

धुलेवा नगर के स्वामी आदि जिन राया रे
आदि जिनराया रे मरुदेवी जाया रे
नाभिराय कुल आया । आदि० १

केईने शस्त्र धारा, केई पास नारिमाला
ऐसे दूषण के धारा । आदि० २

जिनवर देव ध्यावो, देव न मिले आवो
जन्म जन्म सुख पावो । आदि० ३

तीर्थ श्वेताम्बर भारी, मूरति मोहनगारी,
नयना नें लागे प्यारी । आदि० ४

अजव ज्योति धारी, आलम सेवे सारी
केशर चढ़ावे भारी । आदि० ५

पाड़ी जाडी का घेरा, बीच में किया है डेरा
टालो जनम के फेरा । आदि० ६

मुक्ति का राज लेवा, आयो केशरिया देवा
माणेक विजय की सेवा । आदि० ७

घोघा मण्डन श्री नवखण्ड पार्श्व जिन स्तवन

(राग—केशरिया थांसुं)

नव खण्डो पूजो पार्श्व जिनेश्वर शामलो ।
संसार सागर मां प्रभुजी रुलियो काल अनन्त ।
पुण्यता नें संयोगथीरे मलिया श्री भगवन्त रे । नव० १
दया नीर वसावी नें वलतो उगार्य्यों नाग ।
महामंत्र प्रभावथीरे सुखी कियो अथाग रे । नव० २
कमठ तापस वोधियो धर्म्म वतावी सार ।
भव दव ताप निवारवा रे वीजे नहीं आधार रे । नव० ३
निज आतम नें तारवा उतरवा भवपार ।

मुक्ति पद वरवा सहु रे आवे तुम दरबार रे । नव० ४
थोघा मण्डन पार्श्व जिनेश्वर प्रगट प्रभावी जानी
भवजल तरवा हेते आवे केई दूरथी प्राणी रे । नव० ५
शिवपुर नां सुख शाश्वतां मुख थी कह्यां न जाय
माहने ए सुख आपजो रे माणिक भव भय जायरे । न० ६

आसपुर मण्डन अमीजरा पार्श्व जिन स्तवन

(राग—काली कमली वाले तुमको लाखों प्रणाम)

पास अमीजरा जिन ने मारा क्रोड़ो प्रणाम
प्रभु जगवना स्वामी मारा, जग बांधव छो प्राण थी प्यारा
तारक पदना धारे । मारा क्रो० १
शिव साधन जगदीश पामी, भव वारक छो गुण के धामी
रत्न त्रयी भण्डार । मारा० २
रत्न त्रयी दानज दीजे, सेवक आपों सुखियो कीजे ।
पोषु सुख अपार । मारा० २
कल्पतरु पारसमणि जानी, सुरभवि काम धेनु वखानी
सहु माहें सिरदार । मारा० ४
कोटि गमे सुर सेवा करतां, भवो भव केरां पाप ने हरतां
करतो आतम सार । मारा० ५

अमीजरे अमीजारा कहायो, आस पूरे बहु पुण्ये पायो
भव दरिये जेम जहाज ॥ मारा० ६

मने मोहयू मुक्ति सुख लेवा, मोहन प्रतापी देजे देवा
माणेक हर्ष अपार ॥ मारा० ७ ॥

पुजपुर मंडन शांति जिन स्तवन

(राग—चन्द्रप्रभु जी से ध्यान रे)

शान्ति जिनन्द भगवान रे भव पार उतारो;
पार उतारो जाणी तुम्हारो
पामु सुख अपार रे । भव० १

सोहामणी मूरति तुम्हारी,
जोता हर्ष अपार रे । भव० २

अतिशय धारी विश्वोपकारी,
जन्म से मरकी निवार रे । भव० ३

करुणा सिन्धु विरुद्ध तुम्हारु
भव जल पार उतार रे । भव० ४

पारेवो पाली संयम धारी
हुआ चक्री जिनराय रे । भव० ५

सुर नर वंदे आन न खंडे,

हर या कर्म्म जंजाल रे। भव० ६

अनुपम शांति आप भुवने

जन्म मरण हरनार रे। भव० ७

पुजपुर मण्डन सवि अघ खण्डन

चउगति चूरण हार रे। भव० ८

मुक्ति मंदिर मां वास करावो

होवे मान्येक सुखकार रे ॥ भव० ९

वनकोड़ा मण्डन चन्द्रप्रभु स्तवन

(राग—खूने जिगर की पीती हूं)

चन्द्र प्रभु जिनराया रे उतारो भवपार

तुम दर्शन है सुखकारू, भव ताप नु हरनारु

मुझ आतमे हित कारूरे उतारो० १

चन्द्र सम ज्योति भारी, अज्ञान तिमिर हरनारी

प्रभु मूरति मोहनगारीरे उतारो० २

अनन्त गुणों ना धामी, पंचमी गति ने पामी

शिव रम्या ना विसरामीरे उतारो० ३

केई पासे राखे नारी, माला शस्त्र कई धारी

ऐसे दूषण निवारीरे उतारो० ४

भय सात ज वारो मारा, मद आठ नां हरनारा
अष्टमी गति दातारे उतारो० ५
प्रभु तारक विरुद धराया, मैं तारक जाणी आया,
वनकोड़े दर्शन पायारे उतारो० ६
प्रभु मुक्तिपुरी मनोहारि, ज्यां वास कियो सुखकारी,
माणेक नें आपो सारीरे उतारो० ७

पुण्याली मंडन आदि जिन स्तवन

(राग—वीर तारु नाम व्हालु लागे हो श्याम)

आदि जिनन्द अलवेला हो देव मरुदेवी जाया
मरुदेवी जाया नाभिराय कुल आया
युगादि देव कहाया हो देव। मरु० १।
विनीता नगरी नें पावन कीधी
तिहा लेई अवतारा हो देव। मरु० २।
आदि राया आदि मुनि कहाया
आदि केवली जिनराया हो देव। मरु० ३।
केवल पामी मायनें दीधूं
सुत वहु जोवा सिधाया हो देव। मरु० ४।
पुत्र नवाणुनें तार्या प्रभु जी

हर वा कर्म्म जजाल रे। भव० ६

अनुपम शांति आप मुजने

जन्म मरण हरनार रे। भव० ७

पुजपुर मण्डन सवि अघ खण्डन

चउगति चूरण हार रे। भव० ८

मुक्ति मदिर मां वास करावो

होवे मानेक सुखकार रे॥ भव० ९

वनकोडा मण्डन चन्द्रप्रभु स्तवन

(राग—मुने विगर की पीती है)

चन्द्र प्रभु जिनराया रे उतारो भवपार

तुम दर्शन है सुखकारू, भव ताप नु हरनारु

मुज आतमे हित कारूर उतारो० १

चन्द्र सम ज्योति भारी, अज्ञान तिमिर हरनारी

प्रभु मूरति मोहनगारीरे उतारो० २

अनन्त गुणो ना धामी, पचमी गति ने पामी

शिव शय्या ना विसरामीरे उतारो० ३

कई पास राख नारी, माला शस्त्र कई धारी

एसे दूषण निवारीरे उतारो० ४

भय सात ज वारो मारा, मद आठ नां हरनारा
अष्टमी गति दातारे उतारो० ५
प्रभु तारक विरुद धराया, मैं तारक जाणी आया,
चनकोड़े दर्शन पायारे उतारो० ६
प्रभु मुक्तिपुरी मनोहारि, ज्यां वास कियो सुखकारी,
माणेक नें आपो सारीरे उतारो० ७

पुण्याली मंडन आदि जिन स्तवन

(राग—वीर तारु नाम व्हालु लागे हो श्याम)

आदि जिनन्द अलवेला हो देव मरुदेवी जाया
मरुदेवी जाया नाभिराय कुल आया
युगादि देव कहाया हो देव। मरु० १।
विनीता नगरी नें पावन कीधी
तिहा लेई अवतारा हो देव। मरु० २।
आदि राया आदि मुनि कहाया
आदि केवली जिनराया हो देव। मरु० ३।
केवल पामी मायनें दीधूं
सुत बहु जोवा सिधाया हो देव। मरु० ४।
पुत्र नवाणुनें तार्या प्रभु जी

क्षेम मुजने प्रभु सारो हो देव । मारु० ५ ।
सिद्ध निवासी थई ने बैठा
अक्षय सुख भंडार हो देव । मारु० ६ ।
धर्म्म बताया पाप हटाया
त्रण भुवन ना राया हो देव । मारु० ७ ।
पुण्याली मण्डन नाभि के नंदा
टालो जनम ना फंदा हो देव । मारु० ८ ।
मुक्तिनां मोहन सुख लेवा नां
माणेक शरणे आया हो देव । मारु० ९ ॥

पन्यास प्रवर श्री माणेकविजयजी विरचिता स्तवन चतुर्विंशतिका

जावाल मंडन आदि जीन स्तवन

(राग—जिनराजा ताजा)

प्रभु आदि जिनेश्वर, जावाल मंडन सेविये
विनीता नगरी पावन कीधी, सर्वार्थसिद्ध थी आया
नाभीराय कुल मंडन तुमे, मरुदेवी ना जायारे । प्र० १
युगल धर्मने दुर निवारी, शुद्ध मारग बताया

नरवर मुनिवर केवली जिनजी, आदि आप कहायारे। प्र० २

केवल पामी मायने दीधुं, शिवपुर मांहि सिधायां

तारो जाणी आपनो राया, तुम शरणे मैं आयारे। प्र० ३

अन्तरजामी आतमरामी, अलख निरंजन प्यारा

शिवपुर मांही सदा विराजो, अक्षय सुख भंडारारे। प्र० ४

गगनचुंबी मंदिर है भारी, मांही आप विराजो

सुरवर नरवर आण न खंडे, त्रण जगत शिरताजोरे। प्र० ५

मन मोह्युं मुक्ति सुख लेवा, देजो देवाधिदेवा

मोहन प्रतापी माणेक तारो, करो सफल मुज सेवारे। प्र० ६

बनकोडा अजितनाथनु स्तवन

(राग—महावीर तुमारि मनहर मुरती, देखि मन ललचाये)

प्रभु अजित जिनेश्वर मुखडु जोतां, हैये हर्ष अपार

जगदीश्वर जिनजी मारा, परमातम पदना धारा

मुज आतमना आधारारे, प्रभु गुणमणि भंडार। प्र० १

अनंत गुणोना धामी, मुरती प्रभुनी पामी

तारक ए दीलमें मानीरे, सुरनर मली गुण गाय। प्र० २

तुम नामे नवनिधि थावे, तुम ध्याने पातिक जावे

आधिव्याधि दूर हटावेरे, जे निशदिन तुमने ध्याय। प्र० ३

जितशत्रु कुले आया, विजया माता ना जाया
अजित जिन नाम धरायारे, गज लछनना धरनार । प्र० ४
मध्य अजित जिन राजे, रिषभ शान्ति शिवकाजे
वाम दक्षिण प्रभु बिराजर, जेनी शोभा अपरपार । प्र० ५
बनकोडा नगर राजा, आस पुरीये देहरे बिराजो
सङ्घ मघ तणा शिरताजोर, करो दिन २ वृद्धि सवाय । प्र०
मुक्ति माहन प्रभु आपो, चउगति नां बधन कापो
निज चरणे सेवक थापोर, माणेक करी भवपार ॥प्र०७॥

सम्भवनाथ प्रभु नु स्तवन

(राग-अभिनन्दन जीन दर्शन तरसिये)

समव जिनवर दिलमां धारीये धारिये चचल मन
सवो भवियण त्रीजा जिनन, सफल करा निज तन । स० १
नाथ निरञ्जन नयने निरखी, हरखित होय रे मन
जीव अनादिना फेरा टालवा, सेव ज घन घन । स० २
अमृतधारा परमात्मा प्रभु, गुण पांत्रीस रसाल
अष्ट प्रतिहारयी शोभता, समवसरणे विशाल । स० ३
वाणी सुणे सुर नर नारीयो पशु पक्षी हितकार
वैर विरोधने छोडी हांसथी, उतरवा भव पार । स० ४

मुक्ति पुरीमां सुख अनंत छे, आदि अनंत सुखकार
सूरि प्रतापना माणेकना प्रभु, आवागमन निवार । सं० ५

अभिनंदन प्रभु नुं स्तवन

(राग-चतुर सनेही सांभलो)

अभिनंदन जिनराजजी, परमेश्वर परमान मेरे लाल
सिद्धस्वरुपी साहिबा
गुण निधि गिरुआ प्रभु, नहीं राग ने रीश । मेरे । सि० १
अंग अनोपम आपनु, नही शस्त्र सबंध । मेरे । सि० २
अर्धांगे नारी नहीं, नहीं करे जप माल । मेरे । सि० ३
आशा दुर निवारीने, तार्या प्राणी थोक । मेरे । सि० ४
चउगति बंधन चूरीने, पाम्या पद निर्वाण । मेरे । सि० ५
कपि लंछन जिनराजजी, आपो शिवपुर राज । मेरे । सि० ६
मोहन प्रतापी छो प्रभु, माणेकना शिरताज । मेरे । सि० ७

सुमतिनाथ प्रभु नुं स्तवन

(राग-आयो जिणंदारे, प्रभुजी मोहे तारना)

सुमति जिणंदारे, प्रभुजी मोहे तारना
प्रभुजी मोये तारना, जिणंद मोहे तारना
वारनारे भवांकी फेरि वारना,

नाथ निरंजन आप कहाया, रत्न त्रयी के निधान । प्र० १
त्रण भुवनमां दूजा न दीठा, तुम सम देव दयाल । प्र० २
समोवसरणमां आप सोहाया, सुर नर सेवे अपार । प्र० ३
सुरनर शिरीको ताया प्रभुजी, दयाना देव सुखकार । प्र० ४
सुमति आपो कुमति कापो, दूर हरो जंजाल । प्र० ५
भव दरीये से आप बचावो, साचा हो तारणहार । प्र० ६
तारक गुणी बिरुद तुमारा, आयो तारो जिनराज । प्र० ७
मुक्ति मोहन प्रतापी आपो, माणेकने प्रभु आज । प्र० ८

पद्म प्रभुनु स्तवन

(राग-आइ बसंत बहार रे, प्रभु बैठे मगनमे)

पद्म प्रभु जिनराज रे, प्रभु प्रेमे निहालो
गुण अनंते भर्या प्रभुजी, मागु उत्तम गुण रे । प्रभु० १
रयणायरने खोट शु होवे, दतां एक रतन रे । प्रभु० २
मिथ्या ज्ञान हटायो जिनजी, पाम्यु पद्म नाणरे । प्रभु० ३
कर्म कलंकने दूर निवारी, वरीया शिवपुर धामरे । प्रभु० ४
पद्म प्रभुना प्रेमे प्रणमी, टालो भवना फंद रे । प्रभु० ५
मोहन प्रतापी ध्याने होवे, माणक सुख भंडार रे । प्रभु० ६

सुपार्श्वनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग-मारु वतन आ वालु वतन)

मुने वाला लागे रे, सुपार्श्व जिणंद
सुपार्श्व जिणंद, काटे कर्मना फंद । मुने० १
देव न दीठा कोइ जगतमां,
दुजा प्रभुजी तारण तरण । मु० २
रतन चिन्तामणिने कामधेनु,
कल्पतरुथी अधिक जिणंद । मुने० ३
भव अटवीमां भुल्या जीवने,
एक प्रभुनुं खरुं शरण । मुने० ४
शरणागत वत्सल तुम निरखी,
पूजे सुरनर नारी नरेंद । मुने० ५
मोहन प्रतापे प्रभु गुण ध्याने,
माणेक पावे सुख अनंत । मुने० ६

जावाल मंडन चंद्रप्रभुनुं स्तवन

(राग-पार्श्व प्रभु ने हु तो वारंवार)

चंद्रप्रभु नित भेटीये रे लाल
प्रभु मुरती मोह

आतम हितने कारणे, आव्यो श्रीजगनाथ
चउगति चूरी माहरी, दास करो सनाथ
अनाथने करो सनाथ रे मन० १

ध्याने चित्त करि निर्मलु, नाम रटण करे जेह
सब पातिक दूरे टले, निर्मल थाये देह
प्रभु देहनो करावो छेह रे मन० २

धन्य जे रसना मानिये, प्रभु गुण गावे सार
नयणां निरखी नाथने, विकसे वार हजार
प्रभु मेटवा दिल ललचाय रे मन० ३

चंद्र किरण सम उजलु, गगनसु चि जेह
चंद्रप्रभु मदिर मलु जालाल नयर एह
जिहां चंद्रप्रभु जिनराजरे। मन० ४

मुक्ति पुरीने पामवा माहन प्रतापी देव
माणक निश दिन चाहता, चरण कमलनी सव
प्रभु सवा शिव सुखदायर ॥ मन० ५

सुविधिनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग–प्रभु आप अविचल मामी छो)

सुविधि जिणद सुखकारा छा, भविपोने लागो प्यारा छा

प्यारा छो भववारा छो, प्रभु भवथी पार उतारोने । १

मोहराय ने दूर निवारो, दया प्रभुजी दिल मां धारो
स्वामी सेवक नो छे दावो, भवथी पार उतारोने । २

चार गतिमां फरियो स्वामी, तुम दर्शन न लह्यु गुणधामी
दया करी द्यो दर्शन स्वामी, भवथी पार उतारोने । ३

दर्शन पामी प्रभुजी तमारु, हैडु हरखे छे प्रभु मारु
ध्यान धरु छुं हुं मनोहारु, भवथी पार उतारोने । ४

दर्शने दुरित दूरज जावे, आधि व्याधि दुर गमावे
कुमति प्रभुजी पास न आवे, भवथी पार उतारोने । ५

मोहन दर्शन आपनु पामी, आव्यो प्रभु मुक्तिनो कामी
माणेकने ये पद आपोने, भवथी पार उतारोने ॥ ६

शीतलनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—नागरवेलीयो रोपाव, तारा शुद्ध चित्तोमा)

शीतल जिनने वसाव, तारा दिलने सोहाव
प्रभुनुं तान लगाव तारा दिलने सोहाव
प्रभु त्रण भुवन मां गाजे, त्रण गढमां विराजे
समोवशरण मां गाजे, तारा दिलने सोहाव । १

प्रभु वाणी अमृत प्याला, भवि पिये भर भर प्याला

पावे गुण रसाला, तारा दिलने सोहाव । २
प्रभु योजनगामिनी वाणी, सुणे सहु हित आणी
देवे सुखनी खाणी, तारा दिलने सोहाव । ३
तु कठिन करमने काप, धरी गुण अमाप
रहे न भवनो ताप, तारा दिलने सोहाव । ४
प्रभु मुक्ति मंदिर मां वास, प्रेमी मोहन सुवास
आपो माणेक ने खास, तारा दिलने सोहाव ॥ ५ ॥

श्रेयांसनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग—जगजीवन जगवाल हो)

श्री श्रेयांसजिन सेवीये, आणी अधिक सनेह लालरे
देव मवि दग्ध्या सही, नावे तुम मम तेह लालरे । श्री० १
गुणमणि भंडार छो, कहेतां नावे पार ।
म लेवा आव्यो सही, दूजो नही दातार ला० श्री० २
भव समुद्रमां जीवने, प्रवहण जेम आधार ।
पार उतारो भव थकी, तुम विना नही तारनहार ला० श्री० ३
चउगतिनां दुःख परवा, हरवा कष्ट अजाल ।
आव्यो प्रभु शरण सही, जाणी दीन दयाल ला० श्री० ४
मोहन ध्यान प्रभु तणु, धयु मुक्तिना काज ।
सूरि प्रताप मधूकर पर, माणक अविचल राज ला० श्री० ५

वासुपूज्य प्रभुनुं स्तवन

(राग—हवे सुबाहु कुमर इम विनवे)

वासुपूज्य प्रभु अवधारजो, विनंती जगदाधार,
प्रभुजी मोरारे
परम पदने पामीया, वरीया शिववधु नार । वा० १
राग निवार्यो वैरागथी, क्रोध शमथी कर्यो दूर । प्र०
लोभ वार्यो संतोषथी, माया करी चकचूर । वा० २
कर्म कलंक निवारीने, वरिया पंचम नाण । प्र०
समोवसरणमां बेसीने, वरसावी अमृत वाण । वा० ३
सेवा दर्शने जे दूर रह्या, भमिया घोर संसार । प्र०
सुर नर नृप सेवा करे, करवा सफल अवतार । वा० ४
नर भव पुन्ये पामीने, पाम्यो दर्शन आज । प्र०
सेवक जाणी तारजो, सीजे वंछित काज । वा० ५
मुक्ति तणां सुख मोटकां, वंछु हु लेवा तेह । प्र०
सूरि प्रतापना माणेकने, अक्षय सुख द्यो अेह । वा० ६

विमलनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—भारी बेडाने हु नाजुक नार)

विमल जिनेश्वर साहिबा रे लाल
अवधारो सेवक अरदासरे, दीन दयाल मुने तारजोरे लाल,

दर्शन दुरित निकंद तुरे लाल ।

दुःख दारिद्र दुर पलायरे । दीन० १

सायर चदने निरखी, पद्मिनी देखी सुर

तेम जिनचंदने निरखी, होये आणंद पूर

प्रभु निरखी हरख उमरायरे । दीन० २

सारमां सार जाण्यो सही, जिनवरनो आधार

क्यां थीजे जाउ हवे, भलीया तारणहार ।

तारो स्वामी दया प्रभु साररे । दीन० २

उपदेश देई तारीया, दुष्ट करम करनार

ते जाणी आव्यो सही, प्रभु तमे दरबार ।

आव्यो परम पदने काजरे । दीन० ३

मुक्तिनां सुख शाश्वतां, मुखथी कह्यां न जाय

केम करी पामु प्रभु, अर्पो एह उपाय ।

हरी कर्म पामु प्रभु एहरे । दीन० ४

मुक्ति मोहन कारणे, विमलता करो मुज

विमल जिनेश्वर साहिबा ए अरज छे मुज ।

करो माणक सुख भंडार रे । दीन० ५

श्री अनंतनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—ईडर आवा आवली रे)

अनंत जिनेश्वर माहरारे, जग तारक जगदेव;
गुणनिधि माहे मानीलारे, सुरनर करता सेवरे।
भवियां वंदो अनंत जिनराय, सेवे सुरनर रायरे। भ० १
मोहनगारी मुरती रे, मोहे सुरनर वृन्द,
नयणां मांही अमी झरे रे, मुख पुनमनो चंदरे। भ० २
वदन कमल प्रभु आपनुं रे निरखी मन हरखाय,
लक्षण सोहे अति भलां रे, एक एक सवाय। भ० ३
रात दिवस प्रभु ताहरूं रे, नाम जपु जिनराय;
आण वहुं शिर ताहरीरे, जब लगे होये आयरे। भ० ४
मोहन गुण छे आपना रे, कमल जेम सुवास।
सूरि प्रतापना माणेकनो रे कीजे शिवपुर वासरे। भ० ५

भालक भंडन धर्मनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—जिणंद तोरे अब मैं शरणे आयो)

प्रभुजी मोरा धर्म जिनेश्वर प्यारा,
धर्म जिनेश्वर साचा साहिब, गुणमणि भंडारा। प्र० १
दर्शन तोरे आयो प्रभुजी, भव दुःखना हरनारा। प्र० २

धर्म जिनेश्वर धर्मज आपो, भवजल पार उतारा। प्र० ३
दु:ख दरियामां पडता जीवोने, प्रवहण ज्यु आधारा। प्र० ४
आधि व्याधि दूर हटावो, हावे सेवक सुखकारा। प्र० ५
मानक मदन धर्म जिणदत्ती, आपो अक्षय सुख सारा। प्र० ६
सूरिमोहन गुरुराज प्रतापे, करो माणेक भवपारा। प्र० ७

॥ ईडर गढ मंडन—शांतिनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥
(राग—महावीर तुमारी मनोहर मूरति निरखी मन हरखाय)

प्रभु शांति जिनेश्वर माहरा निरखी, मन मारू हरखाय;
तुम मूरत मोहनगारी, भवियांने लागे प्यारी
भव भवना दूर निवारीए, ए आप सुख भीकार। प्रभु० १
तुम भाल मनोहर मोहे, निरखीने मनडा मोहे;
कई पातिक दूर विछोहर तुम आणा धरी हितकार। प्र० २
प्रभ प्राण थकी छो प्यारा भव तापना हरनारा;
जगमांहा अमृत धारा तुम ध्यान धरू सुखकार। प्र० ३
प्रभु [illegible] गढ विराजो परचा तुमारा साजो;
म[illegible]ाना माज काजो र मस्वशांति पामे अपार। प्र० ४
[illegible] नारत्य भाग नयनोने आनन्दकारी;
[illegible] भक्ति मारीए धरी तन मन धन लगाय। प्र० ५

प्रभु मुक्ति कमलमें सारू, ध्यान मोहन कीधु तमारू;
प्रभु प्रतापे देजो प्यारू रे, गणि माणेक विजय गाय ।प्र० ६

कुंथुनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग भवियां नवपद जगमा सार)

कुंथु जिनेश्वर राय, भवियां सेवे सदा सुख थाय
शूरराय कुल भानु प्रगट्यो, कुल उदय कर नार । भवि० १
श्री राणी माताना जाया, दिककुमारि हुलराय । भवि० २
सुरगिरिये जिनवरजी केरा, जन्माभिषेक कराय । भ० ३
घाती अघाती कर्म खपावी, ज्ञान केवल प्रगटाय । भ० ४
नाथ निरंजन शरण लह्याथी, वेगे शिवपुर जाय । भ० ५
जगजन तारक जगत बंधु, सुरपति शीश नमाय । भ० ६
मोहन प्रतापे प्रभु मले तो, माणेक सुखीयो थाय । भ० ७

अरनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—शांति जिनेश्वर साचा साहेब)

अढारमा अर जिनवर पामी, सेवे शिवपुर कामी;
हो जिनजी मुज मन्दिरीये प्रभु आवो १
नाथ निरंजन जगदाधारा, गुण मणि भंडारा । हो०मुज २
दुष्ट करमने दुरे करवा,करवा आतम सारा । हो०मुज ३

तारक जाणी सुरपति पूजे, कर्म रिपुओ धुजे। हो० मुज ४
चक्री जिन दोय पदवी पामी, शिवरमणीना कामी।
हो० मुज ५
सूरि प्रतापे अरजी ध्याने, माणेक शिवपद पामे। हो० मुज ६

मल्लीनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग—पद्म प्रभुजीर अकलछगा राजा)

मल्ली जिनेश्वर दर्शन दीजीये, कृपा करि जगनाथ
दर्शन दुर्लभ पामे जीवड़ा, ते होवेरे सनाथ । मल्ली० १
मिथ्या वासना कारमी गयी, दर्शने दुरित पलाय
कर्म पडल विखराये व समे, आपदा दुरे रे जाय । म०२
विण दरसने चउगतिमां रुल, रवल ठामोरे ठाम
दु खनो श्रणी तह मिना लहे,सीज न वछीत काम । म०३
नयणां चाह प्रभुन निरखवा, मन चाह मलवारे काज
रसना जिनवर गुण गावा भणी करवा आतम काज। म०४
शिवसुख भागी शिव सुख आपीये, अविनासी महाराज
अक्षय खजान खोट नही हुवे पाइ मुक्ति नु राज । म०५
माहन गारा साहिय माहरा, गुणमणिना भडार
सूरिप्रतापना माणेकना प्रभु, आवागमन निवार । म०६

मुनिसुव्रत प्रभुनुं स्तवन

(राग—साहेब शिव वसिया)

मुनिसुव्रत जिनराजजी रे, साहेब चतुर सुजान,
जिनवर दिल वसिया।
दिल वसे भवदुःख खशेरे, पामे अविचल ठाम। जिन० १
वदन कमल सोहे भलुंरे, जेम पूर्णिमा चंद। जिन० २
नैन प्रभुना निर्मलारे, गंगा सम जल नीर। जिन० ३
शांत सुधारस देहमांरे, लक्षण सहस्र ने आठ। जिन० ४
वाणी योजन गामिनीरे, बावना चन्दन शीत। जिन० ५
केवल लई मुक्ति वर्यारे, भोगवो सुख अनन्त। जिन० ६
जगबांधव प्रभु में लह्यारे, वरवा शिव वधुनार। जिन० ७
भवोदधि तारक माहरारे, दीन उद्धारक देव। जिन० ८
सूरि प्रतापे माणेकनो रे, कीजिए भवनो अन्त। जिन० ९

नमिनाथ प्रभुनुं स्तवन

(राग—मल्लि जिनजो व्रत लीजे रे)

नमि जिनराजजी प्रभु मारा रे, भवबंधनना हरनारारे।
तुम नामे नव निधि सारा। नमि० १
मोहमायामां नवि लेपायारे, राग द्वेषथी नहीं घेराया रे।

शुभ ध्याने कर्म खपाया। नमि० २
प्रभु पचम ज्ञानने सयवार, कोटि सुर ओच्छव करवारे
भवि जीवना पाप नं हरता। नमि० ३
सुर नर नरेंद्र पूजायारे, शिर उपर छत्र धरायारे,
बे बाजु चामर विंझाया। नमि० ४
दया भावं प्रभुजी तारोरे, हवे आशरो एक तमारोरे,
मारा आवागमन निवारोरे। नमि० ५
प्रभु तारक बिरुद धरावोरे, जन्म मरण दुःख हटावोरे
स्वामी सेवकनो छे दावोरे। नमि० ६

नेमिनाथ प्रभुनु स्तवन

(राग—आज तारा चरण पामी, हैये हर्ष अपार है)

नेमि जिणदनी मुरत मारी, निरखतां आनन्द है। नं० १
निर्विकारी ब्रह्मचारी, काया जस नीलवर्ण है। नं० २
भाल अष्टमी चन्द जाणो, वदन कमल मनोहार है। नं० ३
एक हजारने आठ अंग, लक्षणा सुखकार है। नं० ४
पशुओं उगारा राजुल तारी, किया शिवपुर धाम है। नं० ५
मल्लिकमल ने ध्याय प्राणी, मोहन करी शुभ भाव है। नं० ६
प्रभु प्रताप प्र मलता, माणक सुख अपार है। नं० ७

जावाल मंडन गौडी पार्श्व स्तवन

प्रभु गौडी पार्श्व जिनने, दिल मां वसावोरे
अजर अमर पद पावो। दिल० १

प्रगट प्रभावी देवा, चाहुं चरणनी सेवा
देजो देवाधिदेवा। दिल० २।

दया के सिन्धु स्वामी, आतम गुणके धामी
मुक्ति वधु के कामी। दिल० ३।

कमठ कुं बोध किया, नाग बचाइ लिया
नवकार मंत्र दिया। दिल० ४।

नाग सुर पद पाया, विद्युन्माली भगाया
उपसर्ग दूर कराया। दिल० ५।

जावाल नयरे आया, गौडीजी दर्शन पाया
हरखे प्रभु गुण गाया। दिल० ६।

मुक्तिपुरीए मारा, वास करावो सारा
माणेक करी भव पारा॥ दिल० ७॥

वीर प्रभुनु स्तवन

(राग—परदेशी मुख्या टोपी वाला ना टोला उतर्यां)

प्रभुजी वीर जिणंद ने वंदिये

वदसा भवोभवना दुख जायरे,

उपगारि प्रभु वीर जिनेश्वर साहिबा। १

प्रभुजी पुरुषोत्तम परमेश्वरु

साश्वत लह्यु मुक्ति केरु राजर। उप० प्र० वी० २

प्रभुजी अक्षय खजानो छे आपनो

शोभित ज्ञानरयणे भरपूर रे। उप० प्र० वी ०३

रत्नत्रयी ने समकित आपजो

जेथी पामु भव केरो पाररे। उप० प्र० वी० ४

प्रभु तुमे इन्द्रभूत्यादिक उधर्या

तार्या रे घोर करम ना करनाररे। उप० प्र० वी० ५

मुक्ति कमले मन मोह्यु माहरु

मोहन जेनी प्रतापी सुवासरे। उप० प्र० वी० ६

ज्ञात नदन प्रभुजी मुने तारजो

माणेकनो करो शिवपुर वास रे॥ उप० प्र० वी० ७

॥ स्थूलीभद्रनी सज्झाय ॥

(राग भरत की थइ बैठा वैरागी—)

नर भव रत्न चिंतामणि जाणी, जाणी अथिर संसार,

प्रथम लेई स्थूलीभद्रजी आव्या, पाम्या ने आगार,

मुनिवर स्थूलीभद्र हितकार ।१।
कोश्या कहे स्थूलीभद्र नेरे, एशुं किधूं काज,
कोण मल्यो तुमने धुतारो, कोणे भोलविया आज,
वालम जी नहि छोडूं हवे साथ ।२।
गुरु वयणे असार संसार ने, जाणी छोड्यो परि-वार,
नरक नी खाण ने मुत्र नी क्यारी, जाणी ने छोड़ी नार,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।३।
गुरु आणा लेई तुम घेरे, प्रतिबोधवा हुं आयो,
सुख संसारी दुःख देनारा, मृग जल जेम जीव धायो,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।४।
मोहे भान भूलेलो ज्यारे, तुम आवासे वसियो,
तुम सामु हवे नहीं जोवुं, वैरागे मन धसियो,
कोश्या जी विपय थी मनडो वार ।५।
काम शत्रु में कबजे कीधो, मात समान तुम जाणी,
तारा चरित्र थी नही चलूं, पाप घणुं दुख खाणी,
कोश्या जी विपय थी मनडो वार ।६।
भोग ने विप किंपाक थी अधिका, जाण्या अति दुखदाय,
हवे हुं नथी भान भुलेलो, जाण्यो में धर्म सवाय,

कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।७।

विषय रावण राज्य गुमाव्यु, पद्मोत्तर राज्य भ्रष्ट,
चन्द्रप्रद्योतन दासीमां मोहयो, नरके मणीरथ दुष्ट,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।८।

शीयल यश कीर्ति होय जगमां, सङ्कट सवि दूर जाय,
अग्नि जल जम शीतल होय, सर्प कुसुमनी माल,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।९।

सुदर्शन नी आपदा नाठी, शूली सिंहासन थाय,
नर राय देव गावत गुण गाय, चरणों में शीश नमाय,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।१०।

सात विषय नी दूर निवारी, धर समकित सुखकार,
व्रता श्रावक ना बार पाली, कर सफल अवतार,
कोश्या जी विषय थी मनड़ो वार ।११।

विषय मां अंध बनी हूं स्वामी, नाच गान बहु कीध,
षट् रस भोजन लीधा साथ, आंख उघी नवि कीध,
मुनिवर सांचा कया उपगार ।१२।

क्षणिक सुख मां जन्म गुमाया धर्म न कीधा लगार,
मांचा गुरु मनार्थी तुम, कीधा मम उपगार,

मुनिवर सांचो कर्यो उपगार ।१३।
भवसमुद्रे पड़ती मुझ ने, समकित नाव देइ तारी,
धर्म जिनन्द नो पालीस प्रीते, तुमे खरा उपगारी,
मुनिवर सांचो कर्यो उपगार ।१४।
प्रतिबोधी कोश्या वेश्या ने, पाली संयम सार,
स्वर्ग मांहि मुनिवर जी पोंच्या, जाशे मुक्ति मझार,
मुनिवर सांचो कर्यो उपगार ।१५।
शियल व्रते सुखी कोश्या जी, निशदिन मुनि गुण गाय,
चौरासी चौवीसी नामज रहेशे, नामे नव निधि थाय,
मुनिवर साचो कर्यो उपगार ।१६।
विजय मोहन सूरि राय प्रतापे, माणेक विजय पन्यास,
निशदिन ए मुनिवर ने गावे, तन मन धरी उल्लास,
मुनिवर साचो कर्यो उपगार ।१७।

अमर कुमार नी सज्झाय ढाल १

(राग—ओधवजी संदेशो केजो मारा श्याम ने)

राजगृही नगरी नो श्रेणिक राजियो,
चित्रशाला करावे अतिमन भाय जो।
थाती दिने ते राती पड़ी जती,

ओह बोलावे ओझी ने श्रेणिक राय जो ।
कर्म तणी गति ने तुमे सांभलो । १ ।
तीर्थपति पण दु खो पामे कर्मथी,
कर्म बनाव क्षणमां राजने रक जो ।
रक ने पण राज्यपति बनावशे,
सुख दु ख कर्म विना न देवे कोय जो । कर्म० २ ।
कहे ओझी बालक बत्रिश लक्षणो,
हामीज तो थाये महल तैयार जो ।
राये ढिंढारा फरव्यो आखा शहर मां,
बालक साटे तोली दऊ सोना मोहर जा । कर्म० ३ ।
ब्राह्मण ऋषभदत्त भद्रा नारीए
होमवा आप्या बालक अमरकुमार जो ।
सोना मोहरा तोली आपी नें लीधो
होमवा माट बालक अमरकुमार जो । कर्म० ४ ।
आंम नाखी अमर कहे मात तातनें
होमवा मुझनें क्या आपा दयाल जो ।
तात कहे माता बंधे ताहरी
माता पत्य बोलै वयण विशाल जो । कर्म० ५ ।

माता कहे सारु खावा ने जोइये

काम काज करवू नही लगार जो।

वालक रोतो सांभली दोड़ी आव्या,

काका काकी मासी फुवा ते वारजो।क० ६।

वेन पण तिहां कने आवी हती,

तो पण कोई ए बचाव्यो नहीं तेह जो।

भरे वजारे राय सेवक लेई गया,

वाल चण्डाले वेच्यो कहे एह जो। क० ७।

अमरकुमर कहे राखो कोईक मुजनें,

सेवक थइ नें रहीश हुं दिन रात जो।

लोको कहे मुलथी राजाये लीयो,

हवे केम अमारा थी रखाय जो। क० ८।

राज सभा मां वालक नें लेई आविया,

राजाने कहे कुमार शीश नमाय जो।

मुले दीधो मात पिता ये तुझनें,

माहरो दोष तेहमां नहीं कोय जो।क० ९।

ब्राह्मणो कहे जलदी करो हे राजवी,

विलम्ब करवो तेहमां नहीं सार जो।

गगोदके नवरावी पदन परखिया,
फूलनी माला घाली गले मनोहार जो । क० १० ।
होमनी पासे लाव्या अमरकुमार नें
वदो भणे ब्राह्मणो सुणी यार जो ।
वोजो घन अनर्थ क्यां सुखी करे,
आशा वारो कहे माणक हितकार जो । क० ११ ।

ढाल २ जी
(राग—लाल गुलाबी आंगी बनी रे)

हवे अमरकुमर मन चिन्तवे रे,
दीधो मुनिए नवकार हो लाल ।
दु खिया नां दु ख चूरतो रे
मंत्र माहें सिरदार हो लाल ॥
कीधां कर्म छुटे नहीं रे,
विण भोगवियां तेह हो लाल । १ ।
अग्नि शिखा शीतल थव रे,
सप हाय फूलनी माल हो लाल ।
दु ख टले एना नामथी रे,
ध्यान धरु सुखकार हो लाल । की० २ ।

मंत्र ना ध्याने सुरेन्द्र आवियो रे,
अग्नि ज्वाला करी शीत हो लाल।
सोनाना सिंहासने थापीने रे,
सुरपति गुणगाय हो लाल। की० ३।
राय सिंहासन थी पड्यो रे,
मुखे छुटियां लोही हो लाल।
ब्राह्मण सहु लांबा पड्या रे,
बाल हत्या ना फल तेह हो लाल। की० ४।
नवकार मंत्रना जले करी रे,
कुमरे साजो कार्यो राय हो लाल।
राय कहे राज्य पाट ताहरूं रे,
तूं रायनें हूं दास हो लाल। की० ५।
राज्य न जोइये माहरे रे,
लेशूं संयम सुखकार हो लाल।
लोच करी संयम लियो रे,
करे श्मसाने काउसग्ग हो लाल। की० ६।
ऋषभदत्त भद्रा नारीये रे
वेंची लिधी सोना मोहरो हो लाल।

कांईक दाटी भोयमां रे,

आवी कहे कोई घाल हो लाल । की० ७ ।

मात कहे मुझ थयूं रे,

राजा मन लझे सही हो लाल ।

वैरभावे छरी लेईने रे,

आवी मार्यो मुनिराय हो लाल । की० ८ ।

शुभ ध्याने स्वर्गे गया रे,

बारमे बावीश सागर आय हो लाल ।

भद्रा घेर जावे हांसथी रे,

वाघण मळी तणी धार हो लाल । की० ६ ।

पापीनी मारी तेनी समे रे,

छठ्ठी नर्के आय हो लाल,

बावीस सागर आउखुं र,

दुःख भय तिहां जाय हो लाल । की० १० ।

कर्म थी मित्रा शत्रु थन रे,

शत्रु मित्र ते थाय हो लाल ।

मर नर क देवन्द्र नं र

कम न छाड़े लगार हा लाल । की० ११ ।

ओगणी बाणु साल मां रे

सिद्ध क्षेत्र मांहे कीध हो लाल।

कर्म विपाक नवकार मंत्रनु रे

फल जाणवा कह्य ुं एह हो लाल। की० १२।

मुक्ति कमल मनोहार छेरे,

मोहन तेनी सुवास हो लाल।

सूरि·प्रतापे शिव सुख मलेरे,

होवे माणेक सुखकार हो लाल। की० १३।

श्री विजय हीर सूरीश्वरजी महाराज ना सज्झाय

(राग इडर आम्बा आमली रे)

प्रहलाद पुर सोहामणु रे, तिहां वसे कूरा सेठ

दया धर्म सदा धरेरे, ओर ने माने वेठ।

चतुर नर वंदो हीरसूरिराय, वंदता पाप पलाय च० १

त्रण काले जिन पूजतारे, प्रतिक्रमण दोय वार

न्याय थी द्रव्य मेलवेरे, जिन आणा शिर धार च० २

शीयलवंती तेहनीरे, नाथी नामे नार

पुत्र प्रसवे शुभ दिनेरे, ओच्छव नो नहि पार च० ३

नाम थापे हीर जेहनु रे, वृद्धि पामे तेह

दान धार धरसनोरे, गुरु मल्या गुण गेह ध० ४
हीर ने सयम आपतारे, दानविजय सूरि राय
हीर हर्ष नाम थापतारे, पाटणे महोत्सव थाय ध० ५
अनुक्रम पडित हुवारे, स्वपर शास्त्र ना जाण
वाचक पद नाडलाई मरि, सूरि पद सिरोहि ठाण ध० ६
अकबर बादशाह एकदारे, बैठा झरोखा मांहि
भाविका चम्पा नामनीरे, पैसे धर्मी त्यांहि ध० ७
कर्म क्षय करवा भणीरे, करवा सफल अवतार
छ मासनी तपस्या कररे, मघमां हर्ष अपार ध० ८
बादशाह पूछे चाल्यावीनेरे, तप करो कोने पसाय
चम्पा कहे सुणो राजवीरे, देवगुरु पसाय ध० ९
देव वीतराग जाणीयेरे, गुरु महाव्रतधार
हीरविजय सूरिवररे, गुण गणना भडार ध० १०
प्रभावो नाम गुरु तणु रे, सुणी हर्ष अपार
बोलाव्या गधारथीरे, शुभ दइ समाचार ध० ११
विहार करता आवीयारे फतपुर मझार
सघ सकल स्वागत करे, ओच्छवनो नही पार ध० १२
अकबर सूरि सन्मुख जइरे करे सूरीनो सत्कार

सूरिश्वर देशना दीयेरे, सयल जीव उपगार च० १३
मरण पामता जीवनेरे, दीये सोवन कोड
राज्यऋद्धी सवि जो दीयेरे, नावे अभयदाननी जोड च० १४
हिंसा करे जे जीवनीरे, दूर्गति जावे तेह
अभयदान जे दीयेरे, स्वर्ग जावे तेह च० १५
अकबर कहे सूरिजीनेरे, मुज सरखु कहो काम
सूरि कहे पर्वमां वडोरे, पर्युपणा अभिराम च० १६
पडह अमारि तणोरे, पर्युषणनी मांय
आठ दिवस लगे दीजीयेरे, अभयदान उत्साय च० १७
निर्लोभी गुरु तणुरे, सुणी वचन उदार
राय कहे सूरजीनेरे, ओर दिवस मुज चार च० १८
श्रावण वदी दशमी थकीरे, बार दिवस सुखकार
भादरवा सुद छठ दीनेरे, पालु पलावु दया सार च० १६
गुजरात मालव देशमांरे, अजमेरने फतेपुर
दिल्ली लाहोर मुलतानमारे, फरमान काढे सनुर च० २०
गुरु साथे लेइ आवीयारे, डामर सरोवर पास
सर्वे जीवोने छोडी दीधारे, अभयदान देइ खास च० २१
वांचक शाति चंद्रनारे, उपदेशथी बादशाह

छमास अमारि घोषणारे, कराव उत्साह च० २२
सवाक्षेर चकली सणीरे, छीम त्यागे नरराय
अटक देश जीती करीरे, गुरु गुण गावे गाय च० २३
गुरु श्री हीर परिवाररे, ऊना नगरे आम
सोलक्षे बावन सालमांरे, गुरु स्वर्ग सीधाय च० २४
ओगणी नेवु सालमांरे, फलोधी करि चोमास
धरि मोहनना प्रतापथीर, मागे माणेक शिववास च० २५

श्री मेघकुमारनी सज्झाय

(राग—हवे सुबाहु कुमार एम विनवे)

हवे मेघकुमार एम विनवे, तुमे सांभलजो एक वात
माडी मोरीरे
मा में देशना सुणी प्रभु तणी, हवे छोडीस हुं संसार
माडी मोरीरे, अनुमति आपो मारि मातजी १
हारें आपा श्रेणिक तात नरश्वरू, रुडी राजग्रही नां
शिरताज आया मोरार
मणि हीरा माणेक अति घणां, ए सहु बाहर काज
जाया मोरार, मत लथी अति दोहलो २
हारें माडी नरक निगोदमां दुख सह्यां, कहेतां न आवे
पार माडी मोरारे

जन्म मरण दुख टालवा, अमे लेइशु संयमभार माडी
अनु० ३

हांरे जाया आहार करवो काचलीये, सुवुं भांय संथार
जाया मोरारे
पाय अणवाणे चालवुं, तुं छे अति सुकुमार जा० व्रत० ४

हांरे माडी बत्रीश नारीओ परिहरि, शालीभद्रं व्रत काज
माडी मोरीरे
शिवकुमारे पांचसो तजी, कीधां आतम काज मा० अ० ५

हांरे माजी सुबाहु कुमारे तजी, परिहरि पांचशे नार मा०
राज्य ऋद्धि दुरे तजी, सुख पाम्या अपार मा० अ० ६

हांरे जाया आठ नारीयो ताहरी, रुपे छे रंभा समान जा०
छोडी न जाये जोबन वये, तारा नित करे गुणगान
जाया० व्रत० ७

हांरे दुर्गतिनि ए दीवडी, ए छे नरकनी खाण माडी०
नागणथी पण दुखकरि, जाणी सुणी जिनवाण मा०
अनु० ८

हांरे जाया शीयाले शीत अति गणी, उनाले वा वाय जा०

घरशालो लागे दोहालो, घरस मढीये न जाय

आया० प्रत० ६

हरि माजी नरभव उत्तम पामीने, मुणी जिनवर पाण

माझी मोरीरे

अथिर ससार में जाणीयो, जाणीयो दुखनी खाण

मा० अनु० १०

हरि जाया अंतराय हवे नही करु, तुमे लेज्यो सयम सार

आया०

ओच्छव कर्यो अति भलो, लीघु सयम वीर प्रमु पास

जाया० मा० सुखेथी सयम पालजो ११

हरि जाया आराधी सयम सुखकरु, सहीया परिसह घोर

सायाo

अनुत्तर विमाने उपना नही दुखनो जिहां जोर

जाया० सुखे० १२

हरि जाया महाविदेहे नरभव लेइ, लेइ सयमभार

जाया०

पचम ज्ञानन पामीने जामी मुक्ति मझार

। जा सु० १३

हांरे जाया ओगणीश बाणु सालमां, तीर्थ तलाजा मझार
जाया०
साचादेव सुपसायथी, रची जेठ मासे सुखकार
। जाया० सुखे० १४
हांरे जाया मोहनसूरिजीना पटधरु, नामे प्रताप सूरीश
जाया०
तस शिष्य माणेक विजये, गाया गुण जगीश
। जाया० सुखे० १५

कर्म राजानी सज्झाय

कर्म करे सो होइ, जगतमां कर्म करे सो होई
हृदये विचारि जोइ, जगतमां कर्म करे सो होइ ।
देवेंद्रने तीर्थंकर आदि, कर्मथी सुख दुख पाम्या
बांध्यां कर्म विना भोगवियां, रहे सदा ते जाम्या ।ज० १
साठ हजार पुत्र सगरना, विणसतां लागी न वार
चक्री सगरने सोले रोगे, कीधो अति खुवार । ज० २
सुभुम चक्री सायर पडियो, ब्रह्मदत्त अंधो होइ
लक्ष्मणे रावण मारीयोरे, कर्म विना न होइ । ज० ३
छपन्न क्रोड़ जादवनो राणो, कृष्ण जल विना मुवो

पांचे पांडवे द्रौपदी हारी, बार बरस दुख जुवो । ज० ४
वेचाण पामी राणी सुतारा, कुमार नाग डसाया
मगी वण घर पाणी लाम्या, जुवो हरिश्चन्द्र राया । ज० ५
पुगणा पांजर भणीक राजा, मदनमाला वेचाणी
धरमी नर पण कर्मथी पावे, सुख दुख त्यो आणी । ज० ६
सूर्य चन्द्र दाघ छे प्रतापी, रात दिवस रहे फरता
नलराजा पण जुगटे हार्या, बार बरस रहा फरता । ज०७
सुदर्शनन शूलीये धराव्या, सिंहासन थयु आणो
राय खमाने पाय पडीने, ते करमथी जाणो । ज० ८
चौद पुरवन धारण करता जीव निगोदे पडीया
आद्र कुमारन नर्गीपणने कम पुरवनो नडीया । ज० ९
कम न छाडे काइन प्राणी, रक हाय के राया
एम जाणी कम मत बांधो एम कहे जिनराया । ज० १०
मुक्तिकमलने ध्यावे प्राणी कम रहित थई जाय
माणेकविजय कम हटावो अजर अमर पद पाय । ज०११

धन्नमुनिनी सज्झाय

(मेतारज मुनिनी देशी

मुनि माहा मन मोहरुजी, देवकी कहे मुनिराय

त्रणवारे आव्या तुमेजी, लेवा शुद्ध आहार ।
मुनिवर धन दिवस मुझ आज १
मुनि कहे सुण देवकीजी, छ छीये अमे भाइ
त्रण जोडीये निसर्याजी, शुद्ध आहार मन लाइ । मु० २
सरखी वय सरखी कलाजी, सरखा संप शरीर
देखी तु भूली पड़ीजी, ते जाणो तुम धीर । मु० ३
पूछे स्नेहथी देवकीजी, कोण गामे तुम वास
कोण माता तुम तणीजी, कोण पिता तुम खास । मु० ४
भदीलपुर पिता वसेजी, गाहावइ सुलसा मात
नेम प्रभुनी सुणी देशनाजी, हुओ वैराग्य विख्यात । मु० ५
बत्रीश क्रोड सोवन मुकीजी, मुकी बत्रीश नार
एक दिने संयम लियोजी, जाणी असार संसार । मु० ६
कर्म कठिन ने बालवाजी, छठ तप कीधो उदार
ते तपना अमे पारणंजी, आव्या नगर मझार । मु० ७
नाना मोटा घेर जइजी, तुम घेर आव्या जाण
कही प्रभु पासे गयाजी, गुरु आणा प्रमाण । मु० ८
सुणी वचन साधु तणांजी, देवकी करे विचार
बालपणे निमीत्तीये जी, कह्य पोलास मझार । मु० ९

पांचे पांडवे द्रौपदी हारी, बार वरस दुख सुखो । ज० ४
वेचाय पामी राणी सुतारा, कुमार नाग डसाया
भरी सण घर पाणी लाव्या, दुखो हरिश्चन्द्र राया । ज० ५
पुराणा पांजर भणीक राजा, चदनवाला वेचाणी
धरमी नर पण कर्मथी पावे, सुख दुख त्यो जाणी । ज० ६
सूर्य चन्द्र दाय छे प्रतापी, रात दिवस रहे फरता
नलराजा पण मुगट हार्या, बार वरस रह्या फरता । ज०७
मदशनन शूलीये चढाव्या, सिंहासन थयु आणी
राय खमावे पाय पडीने, ते करमथी जाणो । ज० ८
चौद पुरवने धारण करता, जीव निगोद पडीया
आद्र कुमारने नदीषेणने कर्म पुरवनां नडीया । ज० ९
कर्म न छोडे काइन प्राणी, रंक हाय के राया
एम जाणी कर्म मत बांधो, एम कहे जिनराया । ज० १०
मुक्तिकमलने ध्यावे प्राणी, कर्म रहित थई जाय
माणेकविजय कर्म हटावो अजर अमर पद पाय । ज०११

षट्मुनिनी सज्झाय

(मेतारज मुनिनी—देशी

मुनि मोक्ष मन माहरुंभी, देवकी कहे मुनिराय

तपगच्छ गगने दीपताजी, सुर्य सम सूरि राय
मोहन प्रतापनो जाणीयेजी, माणेक प्रणमे पाय । मु० १६

रात्री भोजननी सज्झाय

(राग—कहे जो चतुर नर ए कोण नारी)

सांभलजो तुमे मधुरी वाणी, वीर जिनेश्वर केरीरी
नरभव रुडो पुण्ये पामी, धर्म करो सुख कामीरे । सां० १
जीवदया पुन्यवंता पालो, आरंभ दुर निवारीरे
व्रत पचखाण धरो बहु प्रीते, रात्रि भोजन निवारीरे । सां० २
रात्री भोजनमां पाप घणेरु, ए जिनवरनी वाणीरे
दुर्गतिनु दातार ए जाणी, दूरे तजो भवि प्राणीरे । सां० ३
घुवड वींछीने मांजर केरा, कागादिना भव पावेरे
परमाधामीनी नरके पीडा, जीव अतुल ते पावेरे । सां० ४
मांसनो दोष रात्रि भोजनमां, पाणीये रुधिर जाणोरे
मारतंड रुषी एणी परे बोले, ते जिनवाणी प्रमाणोरे । सां० ५
हंस वणिक घणु दुख पायो, ए व्रत लेइ विराधीरे
केशव तेहना नाना भाईये, पाली राज्य ऋद्धि लीधीरे । सां० ६
शरीरे छिद्र घणा ते पडीयां, दुर्गंध थइ अपाररे
नरक सम वेदना उपनी, कोइ करे नही साररे । सां० ७

पुत्र प्रभावी आठनांजी, तुमे होशोरे माय
जा बीजी जन्म दीये जी, तो शुठी मुम्म घात । मु० १०
नेमी जिन सशय टालशेजी, जइ पूछु मन भाय
रथमां बेमी दवकीजी, जइ धाया जिनराय । मु० ११
नेमी कहे सुणो दवकीजी, पुत्र तणो अधिकार
मुनिवर दखी तुमनेजी, स्नेह हुआ अपार । मु० १२
सुत छ ये छ ताहराजी, उदर धर्या नव मास
हरीणगमषी दवताजी, जन्मतां ह्या तुम्म पास । मु० १३
सक्या सुलमानी कनजी सुलमा हर्ये अपार
पुन्य प्रभावे पामीयाजी धन नारी अपार । मु० १४
सुणी वाणी प्रभु तणीजी, जइ वाद्या मुनिराय
गुण गाय पुत्रा तणांजी दवकी चिंता थाय । मु० १५
कृष्ण रथ आराधीयाजी दवकीन सुख हत
गजसुकुमाल खलावीयाजी त पण सयम लत । मु० १६
कम खपावा पामीयाजी छ मुनि कवल नाण
गजसुकुमाल लथांजी सुख मुक्तिनां जाण । मु० १७
आगणा नव्रु मालमांजी करि फलोधी चोमास
मादरवा वदा सातमजा मुनि गुण गाया खास । मु० १८

तपगच्छ गगने दीपताजी, सुर्य सम सूरि राय
मोहन प्रतापनो जाणीयेजी, माणेक प्रणमे पाय । मु० १६

रात्री भोजननी सज्झाय

(राग—कहे जो चतुर नर ए कोण नारी)

सांभलजो तुमे मधुरी वाणी, वीर जिनेश्वर केरीरी
नरभव रुडो पुण्ये पामी, धर्म करो सुख कामीरे । सां०१
जीवदया पुन्यवंता पालो, आरंभ दुर निवारीरे
व्रत पचखाण धरो बहु प्रीते, रात्रि भोजन निवारीरे । सां०२
रात्री भोजनमां पाप घणेरु, ए जिनवरनी वाणीरे
दुर्गतिनु दातार ए जाणी, दूरे तजो भवि प्राणीरे । सां०३
घुवड वींछीने मांजर केरा, कागादिना भव पावेरे
परमाधामीनी नरके पीडा, जीव अतुल ते पावेरे । सां०४
मांसनो दोष रात्रि भोजनमां, पाणीये रुधिर जाणोरे
मारतंड रुषी एणी परे बोले, ते जिनवाणी प्रमाणोरे । सां०५
हंस वणिक घणु दुख पायो, ए व्रत लेइ विराधीरे
केशव तेहना नाना भाईये, पाली राज्य ऋद्धि लीधीरे । सां०६
शरीरे छिद्र घणां ते पडीयां, दुर्गंध थइ अपाररे
नरक सम वेदना उपनी, कोइ करे नही साररे । सां०७

इमना रोगने दुर निवार्यो, व्रत तणे पसायेर
मात पिता राजादिक जीवो, पाली सुरपद पायेरे । सां०८
मुक्तिकमलने लेशो प्राणी, मोहन ए व्रत पालीरे
सुरि प्रतापे माणक पावे, शिवपधु लटकालीरे ॥ सां०९

श्री पुर्युपण पर्वनी गहुली

(राग—वीरे समकीत दीपक मेलवो)

वीरे पर्व पजुसण आवीयां,
" कीजे धर्मनो काजरे, गुणवता प्राणी,
सीरे पर्व पजुसण आवियां,
" आरम सवि टालीये,
" दीजिये अभय दानर । गु० पर्व ।
" मासमां भादरवा भलो,
" आठ दिवस सुखकाररे । गु० पर्व ।
" दलयुन खांडयु नही,
" नायु धायु त्यागरे । गु पर्व ।
" जिन पूजाने पासह घली,
" गुरु वदनने दानरे । गु० पर्व ।
" सायाया करी फल मुकीने,

" पछी सुणीये जिनवाणरे। गु० पर्व।
" नव वाचना कल्पसूत्रनी,
" सांभलजो धरि बहु मानरे। गु० पर्व।
" अमारी पडह वगडावजो,
" धरजो धरमनु ध्यानरे। गु० पर्व।
" मोहनसूरि गुरुराजनो,
" माणेक विजय सुखकाररे, गु० पर्व।

२

(पुखल वड विजये जयोरे)

पर्व पजुसण आवीयांरे, पर्व मांहे शिरदार
अमारी घोषणा करावीयेरे, आठ दिवस सुखकार
भविकजन जिनवाणी सुखकार। भवि०
आरंभ सवि छोड़ीयेरे, करिये व्रत पचखाण
भावे गुरुने वंदीयेरे, सुणीये जिनवर वाण। भवि०
सोहागण सवि मलीरे, गावे मंगल गीत
पारणां स्वामी भाइनांरे, कीजिये मन प्रीत। भवि०
सत्तरभेदी पूजा करोरे, करो धरमनां काम
प्रभु पूजो भला भाव शुंरे, पामो मुक्तिनु धाम। भवि०

कल्पसूत्रनी वाचनारे, सुणे एकवीस वार
सवि सामग्री साथसु रे, तो पामे भवपार । भवि०
दान दया पूजा वलीरे सामायिक पौषध
करीये ने करावीयेरे, श्रावक सुखी समृद्ध । भवि०
मुक्तिकमल आशा मणीरे, मोहन कीजे भाव
माणकविजयने सुरुर, एहीज मुक्तिनु भाव ॥ भवि०

३

(राग—साहेबजी)

कल्पसूत्रनी देशना साहेबजी, सुणता हरख अपार रे
भवि सुणो, जिनवर देशना साहेबजी
गुणमां विनय गुण छे सा० दानमां अभयदान रे । भवि०
गिरिवरमां सुरगिरि, सा० तीर्थमां विमलगिरींद रे । भ०
मंत्र माहे नवकार छे सा मंत्रमां कल्पज होय रे । भ०
नवमा पूर्वथी उधयु सा० भद्रबाहुय सार रे । भ०
वीर निर्वाणथी जाणाय सा नवमा श्राण सारु । भ०
धृवसेन नृप शोक कारण सा वल्भीपुर मझार । भ०
नृप आगमना काजाय सा पर्व पजुसण मांय रे । भ०
ए तपनो महिमा घणो सा कहेतां नावे पार रे ।। भ

अचल शक्र सिंहासन, सा० चलीयुं तपने प्रभाव रे । भ०
रायनी पीडा संहरी सा० कीधी संघनी सार रे । भ०
अठम तप नागकेतुये, सा० कीधो बालपणा मांय रे । भ०
राज्य लही नगरी तणु, सा० अनुक्रमे पंचमज्ञान रे । भ०
मुक्तिमंदिरमां जइ वस्या, सा० पामिया सुख अपार रे । भ०
मोहनसूरि गुरुराजनी, सा० पाटे प्रताप सूरी होय रे । भ०
तेहनो बालुडो विनवे, माणेक प्रणमी पाय रे । भ०

४

(मालण गुंथी लाव गुणीयल गजरो)

जंबुद्वीप दक्षिण भरतमा, माहणकुंड नाम नगरमां
हांरे आषाढ शुद छट्ठ आव्या, भविजन सुणजो एक चित्ते
सुरलोकथी रुषभदत्त गेहे, देवानदा ब्राह्मणी देहे ।
हांरे अवतरीया गुण गेह । भवि०
चौद सुपन देखे मनोहार, प्रभु आव्या गर्भ मझार ।
हांरे देवानंदा, हरख अपार भवि०
पियु आगल सुपननी वात, कहे देवानदा सुप्रभात ।
हांरे पुत्र होशे कुल विख्यात । भवि०
ब्राह्मण घेर आव्या जाणी, स्तवे शक्र भावना आणी ।

कल्पसूत्रनी वाचनारे, सुणे एकवीस वार
सवि सामग्री सायस्तु रे, ते पामे भवपार । भवि०
दान दया पूजा वलीरे सामायिक पौषध
करीये ने करावीयेरे, श्रावक सुखी समृद्ध । भवि०
मुक्तिकमल आशा मणीरे, मोहन कीजे भाव
माणकविजयने खरुर, एहीज मुक्तिनु भाव ॥ भवि०

३

(राग—साहेबजी)

कल्पसूत्रनी देशना साहेबजी, सुणता हरख अपार रे
भवि सुणा, जिनवर देशना साहेबजी
गुणमां विनय गुण छे, सा० दानमां अभयदान रे । भवि०
गिरिवरमां सुरगिरि, सा० तीर्थमां विमलगिरींद रे । भ०
मंत्र मांहे नवकार छे सा० सूत्रमां कल्पज होय रे । भ०
नवमा पूर्वथी उधयूं सा० भद्रबाहुए सार रे । भ०
वीर निर्वाणथी जाणाय सा० नवसो एंशु साल । भ०
ध्रुवसेन नृप नाके कारण सा० वलभीपुर मझार । भ०
नृप अग्मना काजाय सा० पर्व पजुसण मांझ रे । भ०
ए तपना महिमा घणा सा० केर्ता नावे पार रे ।। भ०

अचल शक्र सिंहासन, सा० चलीयुं तपने प्रभाव रे । भ०
रायनी पीडा संहरी सा० कीधी संघनी सार रे । भ०
अठम तप नागकेतुये, सा० कीधो बालपणा मांय रे । भ०
राज्य लही नगरी तणु, सा० अनुक्रमे पंचमज्ञान रे । भ०
मुक्ति मंदिरमां जइ वस्या, सा० पामिया सुख अपार रे । भ०
मोहनसूरि गुरुराजनी, सा० पाटे प्रताप सूरी होय रे । भ०
तेहनो बालुडो विनवे, माणेक प्रणमी पाय रे । भ०

४

(मालण गुंथी लाव गुणीयल गजरो)

जंबुद्वीप दक्षिण भरतमां, माहणकुंड नाम नगरमां
हांरे आषाढ शुद छट्ठे आव्या, भविजन सुणजो एक चित्त
सुरलोकथी रुषभदत्त गेहे, देवानंदा ब्राह्मणी देहे ।
हांरे अवतरीया गुण गेह । भवि०
चौद सुपन देखे मनोहार, प्रभु आव्या गर्भ मझार ।
हांरे देवानंदा, हरख अपार भवि०
पियु आगल सुपननी वात, कहे देवानंदा सुप्रभात ।
हांरे पुत्र होशे कुल विख्यात । भवि०
ब्राह्मण घेर आव्या जाणी, स्तवे शक्र भावना आणी ।

हांरे धर्मशास्त्रथी उत्तम जाणी   मवि०

भणिक सुत मेघकुमार, प्रभु देशना सुणी सार ।

हांरे लीधु सयम सुख मकार ।   मवि०

पूरव भव मेघने जणावी, हाथी भवे दया जे भावि ।

हांरे स्थिर कीधा दुख हरावी ।   मवि०

तेम मुजने प्रभुजी तारो, कह माणेक दास तुमारो ।

हांरे मारा आवागमन निवारो ।   मवि०

५

(राग-भरतनी पाटे भुपति रे)

इन्द्र इव मन चींतवेर, ए अणघटतु होय ।   सलुणा

जिन चक्री बलदेवजीरे नीच कुल न हाय ।   सलुणा

काया कर्म छूटे नहींरे विण भोगवीयां तेह ।   सलुणा

मरिचा भव नाव गोत्रथीरे आव्या माहणगेह । स० की०

नीच कुलथी संहरीरे मूकाय उत्तम कुल ।   सु०

ए आचार मुज साधनारे भाख्या तेह अमल । स० की०

हरिणगमेषी देवनरे करता आणा तेह ।   स०

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेह ।   स की०

[illegible] [illegible] [illegible] गणी विशला उर ।   स

मुको जइ श्री वीरनेरे. ए आणा सनुर। स० की०
जे रयणी प्रभु मंहयांरे, क्षत्रिय कुल मझार। स०
सुपन चतुदश मांटकारे, जोवे त्रिशला मनोहार। स० की०
वीजे वखाणे सांभलोरे, चार सुपन अधिकार। स०
सूरि मोहन पद सेवतारे, माणेकविजय जयकार। स० की०

६

(राग-आछे लाल)

त्रिशला राणी जेह, सुदर स्वपनां एह
आछे लाल, पांचथी चौदे जोवतांजी।
सिद्धारथ राय कुल, धन धान्ये भरपुर
आछे लाल, राय राणा सेवा करेजी।
रयण सोवनने फूल, जेनु न थाये मूल
आछे लाल, कुबेर वृष्टि तिहां करेजी।
होस्ये पुत्र रतन, करशु तेहना जतन
आछे लाल, वर्द्धमान नाम थापशुजी।
अंग चालनथी जोय माताने दुख होय
आछे लाल, ए जाणी स्थिर रह्याजी।
माताने दुख अपार, वरत्यो हाहाकार

जेंनी वृद्धि थइ अति घणी, तेथी गुण निष्पन्न नाम । प्र०
नाम रुडु वर्धमान थापीयु, क्रीडा करे मित्रोनी साथ । प्र०
आंवली क्रीडा करता हता, तिहां मिथ्यात्वी देव । प्र०
सर्प रुपे देवने जालीने, दूर फेंक्यो प्रभुये ताम । प्र०
हस्ति स्कंध उपर प्रभु निसरी, जावे निशाले भणवा काज। प्रभु०
इन्द्र ब्राह्मणनु रुप लेइने, तिहां आव्यो ते ततकाल । प्र०
वेसाड़ी पंडितना आसने, प्रभुने पुछया संदेह, प्र०
टाल्या संदेह पंडित तणा, पंडित करे गुणगान । प्र०
योवन वय प्रभु पामीया, नारि यसोदा परण्या ताम । प्र०
लोकांतिक देवनी विनती, तीर्थ प्रवर्तावो नाथ । प्र०
वार्षिक दान देइ प्रभु निसर्या, वरघोड़े संयमने काज । प्र०
नरनारी टोले मली हरखतां, जोवे श्री वर्द्धमान कुमार। प्र०
संयम लेइ प्रभु पामीया, चोथु मनःपर्यव ज्ञान । प्र०
सूरि मोहन प्रतापथी ए कह्यो, माणकविजये अधिकार। प्र०

८

(राग-पीतल लोटा जले भर्या रे)

देश विदेश प्रभु विचरेरे, कर्म कटक करवा दूररे साहेली ।
उपसर्ग जीतिने पामीयारे, केवलज्ञान मनोहाररे । साहेली
वीर वंदने चालीयेरे ।

देवेंद्रना हुकमथीरे, केवलज्ञानने स्थानरे, सा
समोवसरण दवे रुध्धुर, सुरनर मल्या तिणे ठामरे। वीर०
देखो उलग्या आकाशथीरे, जोवे इन्द्रभूति तामरे सा
मारा प्रभावे दवतारे, यज्ञमां आवे सामरे । वीर ०
समावमरण आवा जोइनेर, चिंता करे मन मांहीरे सा
वांदीने आवता लोकनेरे, पूछे इन्द्रभूति त्यांहीरे । वीर०
कोनी पासे जइ आवियारे, ते कहो मुजने आमर सा
सर्वज्ञ देवने वांदीनेरे, कीधो आतम काजरे । वीर०
सर्वज्ञ जाणी कोपीयोरे, मुज बेठे बीजो कोणरे सा
वाग्वादे वाद जीतियारे, मुजथी जावे दुरमाण्परे । वीर०
मुज शिष्या पण आइनेर, आव जीतिने तहरे सा
तापण सिंहो जाइनेरं, सर्वज्ञ जोवु एहरे । वीर०
पांच सत शिष्ये आवीयारे, दखी प्रभुने तेहर सा
ब्रह्मा के महादेवजीर विष्णु सम नही केहरे । वीर०
ब्रह्मा आदि कोइ छे नहीं र, ए छ सिद्धारथ नद रे सा
अंतिम तीर्थपति जि छ र वीर नाम सव पद रे। वीर०
मुनि कमलन पामसा र माहन प्रभु गुण गान रे, सा
माणकविजय गावता र प्रभु माणानु करी पान रे। वीर०

६

(राग—काली कमलीवाले तुमको लाखो प्रणाम)

समोवसरणमां वीर, प्रभुजी, करे वखाण ।

वीर प्रभु तिहां संशय जाणी, इन्द्रभूति नाम लीधु जाणी ।
प्रतिबोधवा तिणे ठाम । प्रभुजी०

संशय टाल्यो गोयम केरो, जेथी न थाये भवनो फेरो ।
शुद्ध मारग सुखकार । प्रभुजी०

वीर चरणोमां शीश नमावी, संयम लीधु मान हटावी ।
थया प्रथम गणधार । प्रभुजी०

इन्द्रभूतिनु संयम देखी, आव्या वादे प्रभुने देखी ।
लीधु संयम सार । प्रभुजी०

एकादश गण प्रभुना, चौद हजार मुनि विभुना ।
साध्वी छत्रीस हजार । प्रभुजी०

एक लाखने उपर जाणो, ओगणसाठ श्रावको प्रमाणो ।
जे समकिती धार । प्रभुजी०

त्रण लाखने अढार हजार, सोहे श्राविका प्रभुनी सार ।
प्रभुजीनो परिवार । प्रभुजी०

पावापुरीमां प्रभुजी आवी, देवशर्मा प्रतिबोधने लावी ।
कर्या गोयमने दूर । प्रभुजी०

देवेंद्रना हुकमथीरे, केवलज्ञानने स्थानरे, सा
समोवसरण देवे रच्युरे, सुरनर मल्या तिणे ठामरे । वीर०
देवो उतरता आकाशथीरे, जोवे इन्द्रभूति तामरे सा
मारा प्रभावे देवतार, यज्ञमां आवे तामर । वीर०
समोवसरण जाता जाइनेर, चिंता करे मन मांहीरे सा
वांदीने आवता लोकनेरे, पूछे इन्द्रभूति त्यांहीरे । वीर०
कोना पासे जइ आवियार, ते कहो मुजने आजरे सा
सर्वज्ञ देवने वांदीनेर, कीधा आतम काजरे । वीर०
सर्वज्ञ जाणी कांपीयार, मुज बेठ बीजो कोणर सा
वादमां वाद जीतिथार, मुजथी आवे पुरमाजरे । वीर०
मुज शिष्या पण जाइनेर, आव जीतिने तहरे सा
तापण तिहां जाइनेर, सर्वज्ञ जोयु एहरे । वीर०
पांच सा शिष्य आवीयारे देखी प्रभुने तेहरे सा
ब्रह्मा क महादेवजीर विष्णु सम नही देहरे । वीर०
ब्रह्मा आद कोई छ नहीं र, एछ सिद्धारथनंद रे सा
अंतिम तीर्थपतिज छ र वीर त्सले भव फंद र । वीर०
मुक्ति कमलन पामवा र मोहन प्रभु गुण गान रे, सा
माणकविनय गावता र प्रभु वाणीनु करी पान रे । वीर०

६

(राग—काली कमलीवाले तुमको लाखो प्रणाम)

समोवसरणमां वीर, प्रभुजी, करे वखाण ।

वीर प्रभु तिहां संशय जाणी, इन्द्रभूति नाम लीधु जाणी।
प्रतिबोधवा तिणे ठाम । प्रभुजी०

संशय टाल्यो गोयम केरो, जेथी न थाये भवनो फेरो ।
शुद्ध मारग सुखकार । प्रभुजी०

वीर चरणोमां शीश नमावी, संयम लीधु मान हटावी ।
थया प्रथम गणधार । प्रभुजी०

इन्द्रभूतिनु संयम देखी, आव्या वादे प्रभुने देखी ।
लीधु संयम सार । प्रभुजी०

एकादश गण प्रभुना, चौद हजार मुनि विभुना ।
साध्वी छत्रीस हजार । प्रभुजी०

एक लाखने उपर जाणो, ओगणसाठ श्रावको प्रमाणो ।
जे समकिती धार । प्रभुजी०

त्रण लाखने अढार हजार, सोहे श्राविका प्रभुनी सार ।
प्रभुजीनो परिवार । प्रभुजी०

पावापुरीमां प्रभुजी आवी, देवशर्मा प्रतिबोधने लावी ।
कर्या गोयमने दूर । प्रभुजी०

अमावस्या कारतिक मास केरी, देशना देइ अति मल्हेरी।
पाम्या शिवपद सार। प्रभुजी०
देवेन्द्र करे विहां दिवाली, राग गोयमे लीधो वाली।
पाम्या केवल सार। प्रभुजी०
कर्म खपावी शिवपद लीधु, माणेकविजयनु कारज सीधु।
पामे भवजल पार॥ प्रभुजी०॥

१०

(राग—भविजन भोगमा शहेरनी माथके)

बेनी चालोने जइए सेलांके, व्याख्यान सुणवारे लोल
,, काशी देशनो राणोके, अश्वसेन छे रे ,,
,, वामादेवीना नदके, पास कुमर मलार ,,
, नाग उगार्यो एकके, दया दिल लावीनेरे ,,
,, कमठने प्रतिमाध्योके, धर्म बतावीनेरे ,,
,, नवकार मंत्र सुणावीके, धरणेन्द्र कर्यारे ,,
,, कमठ थया मरि त्यकके, विद्युन्मालीयोरे ,,
, पार्श्वकुमार शुद्धके, भयम आदर्योरे ,,
परिसह सह्या अनकके कमठादिकनारे ,,
कर्म खपाया पाम्याके, केवल ज्ञान सहुरे ,,

बेनी प्रतिबोधी भवि जीवके, शिवपद पामीयारे लोल
,, माणेक विजय एहके, शिवपद चाहतोरे ,,

११

(वाडीना भमरा द्राख मीठीरे सोरठ देशनी)

जीरे शौरिपुरे सोहे भलो, जीरे राय समुद्रविजयरे
गुणवंती बेनी, चालोने जइये उतावली।
जीरे शिवादेवीना नंदला, जीरे होवे नेम कुमाररे गुण०
,, आयुधशाले बतावीयु, जीरे कृष्णने निज बलरे गुण०
,, कुमारपणे गृहे रह्या, जीरे लीधो संयम भाररे गुण०
,, कर्म खपावी केवल वर्या, जीरे तारी राजुल नाररे गुण०
,, आंतरा बावीश जिनतणा, जीरे सुणता हर्ष न मायरे गुण०
,, इक्ष्वाकु कुल चंद्रमा, जीरे मरुदेवानो नंदरे गुण०
,, शस्त्रकलाने शास्त्रकला, जीरे बताव्यु नीतिने व्यवहाररे गुण०
,, आदिरायने आदिमुनिवरु, जीरे आदि जिनवर एहरे गुण०
,, संयम आपीने तारीया, जीरे पुत्र पौत्रादि परिवाररे गुण०
,, केवल पामी दीधु मायने, जीरे जइ रह्या मुक्ति आवासरे गुण०
,, स्थवीरावलीने समाचारि, जीरे सुणीये धरि बहुमानरे गुण०
,, स्थूलिभद्रने वज्रस्वामीना, जीरे एह सुणो अधिकाररे गुण०

अमावस्या कारतिक मास करी, देशना देइ अति
पाम्या शिवपद ।
दवेन्द्र करे तिहां दिवाली, राग गोयमे
पाम्या केवल ।
कर्म खपावी शिवपद लीधु, माणेकविजयनु
पामे भवजल पार

१०

(राग—भविजन प्राणम्या शहेरनी मां

बेनी चालोने अइए वेलांके, व्याख्यान
,, काशी देसनो राणोके, अश्वसेन छ
,, वामादेवीना नदके, पास कुमर भ
, नाग उगार्यो एकके, दया दिल ल
,, कमठने प्रतिबोध्याके, धर्म बताव
,, नवकार मत्र सुणावीके, धरणेन्द्र
,, कमठ थयो मरि देवके, विद्युन्मा
, पार्श्वकुमारे शुद्धके, सयम आदय
, परिसह सह्या अनेकके, कमठा
कर्म खपावी पाम्याके, केवल

मात पिता सम कोण हवेजी, करशे अम संभाल
व्यसनथी कोण निवारशेजी, कोण छुडावे जंजाल मो० ६
जीवाजीव पुन्य पापनेजी, आश्रवने वली बंध
संवरने निर्जरा वलीजी, वली मोक्ष छे तत्व मो० १०
हेय ने छाड़ावताजी, उपादेय ओलखाय
ज्ञेय ने अंगी करवुजी, कोण देशे बताय मो० ११
विहार विहार शु ं करोजी, पाछा वलो गुरुराज
भव सागरमां बुडातांजी, खरा तुमे जहाज मो० १२
शुन्य पड्यो उपासरोजी, जोइ दुखज थाय
पाछा वली थोडु रहोजी, दिल दया जरी लाय मो० १३
गुरु कहे तुम सांभलोजी, ए साधुनो आचार
चोमासु ं पुरु थयेजी, जावु ं बीजे सार
श्रावकजी जैन धर्म सुखकार। १४
वहेतु पाणी निर्मलुजी, बांध्यु गंदुरे होय
विचरे ते साधु भलाजी, डाघ न लागे कोय श्रा० १५
छती शक्ति ये नवी रहेजी, एक ठामे मुनिराय
रहेतां संयम नवि रहेजी, ए जिनवाणी जोय श्रा० १६

जीरे मुक्तिकमलने ध्यावजो, जीरे मोहन करी ध्यानरे गुण०
,, धर्म प्रतापे पामशो, जीरे मायेक कहे एहरे ॥ गुण०

गुरु महाराज नगरमां पधारे ते वखतनी गहुली

जीरे उत्सव रंग वधामणां,
जीरे पधार्या सदगुरुराज, गुरुने वधावीय।
जीरे पुन्य उदय थयो माहरो,
जीरे वधावो सदगुरु राय। गुरु०
जीरे शांत दांत महत छे,
जीरे ज्ञानी गुरु गुरु गुणवंत। गुरु०
जार पंच महाव्रत पालता,
जीरे पालता पांच आचार। गुरु०
जार छकाय रक्षा नित कर,
जीरे जीव दया प्रतिपाल। गुरु०
जीर प्राण जतां पण नवि कर,
जार रात्रि भोजन सेह। गुरु०
जीर मात पिता परिवारन,
जीर छाड्या सयम काज। गुरु०

जीरे सद्गुरु शीख भली परे,
जीरे शिर धरे गुरु राय । गुरु०
जीरे गुरु सेवाथी ज्ञानी थइ,
जीरे विचरे देश विदेश । गुरु०
जीरे उपदेश देई प्रतिबोधतारे,
जीरे देता धरमनु दान । गुरु०
जीरे समकित सुद्धज आपीने,
जीरे करावे दूर मिथ्यात्व । गुरु०
जीरे पुन्य उदय थयो संघनो,
जीरे पधार्या ज्ञानी गुरुराज । गुरु०
जीरे आलस प्रमाद दूरे करी,
जीरे सांभलो जिनवरवाण । गुरु०
जीरे सांभली धर्मने आ धरो,
जीरे नित करो व्रत पचखाण । गुरु०
जीरे मोहन मुक्ति मंदिरे,
जीरे खरो धरम प्रताप । गुरु०
जीरे सूरि प्रताप पसादथी,
जीरे माणेक विजय कहे एह । गुरु०

गुरु महाराज विहार करती वखतनी गहुंली

पाय लागीने विनवुं जी, विनवुं शीस नमाय
वात विहारनी सांभलीजी, हैये दुखज थाय ।
मोरा गुरुजी, मत करो आप विहार । १
दर्शन थातु आपनुंजी, भवजल तरवा जहाज
तुम दर्शन विण किम जशेजी, दहाडा कहो गुरुराज । मो० २
वखाण सुणवा दिल घणुं जी, तलसी रहे गुरुराज
दोडी दोडी आवताजी व्याख्यान सुणवा काज । मो० ३
वात सुणी विहारनीजी, नयने वछूट्या रे नीर
दिल दया मन आणजोजी, रहो रहो सयम धीर । मो० ४
उपदेश विना किम फलजी, मुज मन करीरे आश
धर्म कर्म करी सुणीगुरुजी, गुरु विना कहो खास । मो० ५
व्याख्यान काण सुणावशेजी, काण देश धर्मलाभ
पचखाण करशुं क्यां जइजी विना गुरु अन्य ग्राम । मो० ६
सयम न लिधां पातरांजी अमुलख हृदा रे हाय
कइ वांधीन चालियाजी लइ चलाने साथ । मो० ७
धीर वचन प्राण आपशोजी, काण करशे उपगार
भव वनमां आ जीवन जी तुम छो तारणहार । मो० ८

मात पिता सम कोण हवेजी, करशे अम संभाल
व्यसनथी कोण निवारशेजी, कोण छुडावे जंजाल मो० ६

जीवाजीव पुन्य पापनेजी, आश्रवने वली बंध
संवरने निर्जरा वलीजी, वली मोक्ष छे तत्व मो० १०

हेय ने छाड़ावताजी, उपादेय ओलखाय
ज्ञेय ने अंगी करवुजी, कोण देशे बताय मो० ११

विहार विहार शु' करोजी, पाछा वलो गुरुराज
भव सागरमां बुडातांजी, खरा तुमे जहाज मो० १२

शुन्य पड्यो उपासरोजी, जोइ दुखज थाय
पाछा वली थोडु रहोजी, दिल दया जरी लाय मो० १३

गुरु कहे तुम सांभलोजी, ए साधुनो आचार
चोमासु' पुरु थयेजी, जावु' बीजे सार
श्रावकजी जैन धर्म सुखकार। १४

वहेतु पाणी निर्मलुजी, बांध्यु गंदुरे होय
विचरे ते साधु भलाजी, डाघ न लागे कोय श्रा० १५

छती शक्ति ये नवी रहेजी, एक ठामे मुनिराय
रहेतां संयम नवि रहेजी, ए जिनवाणी जोय श्रा० १६

मुक्ति मदिर जवा मणीजी, मोहन करजोरे माथ
माणक विजय कहे एहवुजी, जैन धर्म छे नाव भा० १७

अंत समयनी आराधना

मुजने चार शरणां होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी।
केवली धर्म प्रकाशिया, रत्न अमुलख लाध्युंजी। मु० १
चउगति तणां दु ख छेदवा, समरथ सरणां एहोजी।
पूर्व मुनिवर ज हुआ, तणे शरणां कीधां तहोजी। मु०२
ससार मांह जीवने धरमनां शरणां धारोजी।
गणि समयमंदर एम मणे कल्याण मगलकारोजी। मु०३

लाख चोराशी जीव खमावीये मन धरि परम विवकोजी
मिच्छामि दुकड़ दीजिये जिनवचन लहिये टेकोजी।
लाख । १

सातलाख भूदग सात दाउना दश चौद वनना भेदोजी
षट विगलसुरतिरि नारका चउचउचउद नरना भदोजी।
लाख । २

मुज रग नहा काइ[illegible] सा सा मित्र स्वभावाजी
गणि समयसुन्दर एम कहे पामीये पुण्य प्रभावाजी।
लाख । ३

पाप अढार जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी साखेजी
आलोयां पाप छुटीये, भगवंत एणी परे भाखेजी । पाप० १
आश्रव कषाय दोय बंधवा, वली कलह अभ्याख्यानोजी
रति अरति पैशुन्य निंदना, माया मोह मिथ्यातोजी । पाप० २
मन वचन कायाये जे कर्या, मिच्छामि दुक्कड तेहोजी
गणि समय सुन्दर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म
एहोजी । पाप० ३

धन्य धन्य ते दिनमुज क्यारे होशे, हुं पामीश संयम शुद्धोजी
पूर्व ऋषि पंथे चालशुं, गुरु वचन प्रतिबुद्धोजी । ध० १
अंत प्रांत भिक्षा गोचरी, रण वन काउसग्ग लहीशुंजी
समता शत्रु मित्रे भावशुं, सम्यक सुद्धो धरशुंजी । ध० २
संसारनां संकट थकी, हुं छुटीश, जिन वचने अवतारोजी
धन्यधन्य समयसुंदर ते घड़ी, तो हु पामीश भवनो
पारोजी ॥ धन्य० ३

श्री शत्रुंजय तीर्थना एकवीस नाम ना। गुणगर्भित एकवीस खमासमण ना दोहा

१ सिद्धाचल समरूँ सदा, सोरठ देश मझार ।
मनुष्य जन्म पामी करी, वन्दू वार हजार । १ ।

अगवसन मन भूमिका, पूजोपगरण सार ।
न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार । २ ।
कार्तिक सुदि पूनम दिने, दश कोटि परिवार
द्राविड ने वारिखिल्लजी, सिद्ध थया निरधार । ३ ।
तिण कारण कार्तिक दिने, दश कोटि परिवार ।
आदि जिन सन्मुख रही, खमासमण बहुवार । ४ ।
एकवीस नामें वर्णव्यो, तिहां पहिलु अभिधान ।
शत्रुंजय शुकरायथी, जनक वचन बहुमान । ५ ।
(अहिंया दरेक सिद्धाचल समरू सदाए दुहो कहेवो
एम दरेके खमासमणा देतां कहेवो)
१ समासमया सिद्धाचल, पुंडरीक गणधार,
लाख सवा महातम कह्युं, सुरनर सभा मझार । ६ ।
चैत्री पूनम ने दिन, करी अणसण एक मास,
पांच कोडी मुनि साथशुं, मुक्ति निलय मां वास । ७ ।
तिण कारण पुंडरीक गिरि, नाम थयूं विख्यात,
मन वच काय वन्दिये उठी नित्य प्रभात । सि० ८ ।
३ वीस क्रोडशुं पांडवा मोक्ष गया इण ठाम,
एम अनंत मुगते गया सिद्धक्षेत्र तिण नाम । सि० ९ ।

४ अडसठ तीरथ न्हावतां, अंग रंग घडि एक
तुंबी जल स्नाने करी, जाग्यो चित्त विवेक । १० ।
चन्द्रशेखर राजा प्रमुख, कर्म कठिन मलधाम,
अचल पदे विमला थया, तेणे विमलाचल नाम ।
सि० ११ ।

५ पर्वत मां सुरगिरि वडो, जिन अभिषेक कराय,
सिद्ध हुआ स्नातक पदे सुरगिरि नाम धराय । १२ ।
भरतादि चौदे क्षेत्रमां, ए समो तीरथ न एक
तेणे सुरगिरि नामे नमो, जिहां सुरवास अनेक ।
सि० १३ ।

६ अस्सी योजन पृथुल छे, ऊंचपणे छब्बीस,
महिमां ए मोटो गिरि, महागिरि नाम जगीश । सि० १४ ।

७ गणधर गुणवंता मुनि विश्व माहे वंदनीक
जेहवो तेहवो संयमी, विमलाचल पूजनीक । १५ ।
विप्रलोक विषधर समा, दुखिया भूतल मान
द्रव्य लिंग कण क्षेत्र सम, मुनिवर छीप समान । १६ ।
श्रावक मेघ समा कह्या, करता प्रन्यतन काम,

पुण्यनी राशि वधे घणी, तेणे पुण्यराशि नाम ।
सि० १७

८ सयमधर मुनिवर घणा, तप तपता एक ध्यान ।
कर्म वियोग पामिया, केवल लक्ष्मी निधान । १८ ।
लाख एकाणु शिव वर्या, नारदशु अणगार ।
नाम नमु तेण आठमु, श्रीपद गिरि निरधार ।
सि० १९ ।

९ श्री सीमधर स्वामीये, ए गिरि महिमा विलास ।
इन्द्रनी आग वर्णव्या, तेणे ए इन्द्र प्रकाश । सि० २० ।

१० दश कोटि अणुव्रत धरा, भक्तं जमाडे सार ।
जन तार्थ यात्रा करं, लाभतणा नहि पार । २१ ।
तह थकी सिद्धाचल, एक मुनिने दान ।
दतां लाभ घणा हुवे महातीर्थ अभिघान । सि० २२ ।

११ प्राय ए गिरि शाश्वता, रहेशे काल अनंत ।
शत्रु जय महात्म्य सुणी, नमो शाश्वत गिरि संत ।
सि० २३ ।

१२ गौ नारी बालक मुनि, चउहत्या करनार ।
यात्रा करतां कारतकी, न रहे पाप लगार । २४ ।

जे पर दारा लम्पटी, चोरीना करनार।
देवद्रव्य गुरुद्रव्यना, जे वली चोरन हार । २५ ।
चैत्री कारतकी पूनमे, करे यात्रा इन ठाम।
तप तपतां पातिक टले, तेणे द्रढ़शक्ति नाम।
सि० २६ ।

१३ भव भय पामी निकल्या, थावच्चा सुत जेह।
सहस मुनिशुं शिव वर्या, मुक्तिनिलय गिरि तेह।
सि० २७ ।

१४ चन्दा सूरज वेउ जणा, उभा इण गिरि शृंग।
वधावियो वरणव करी, पुष्पदंत गिरि रग । सि० २८ ।
१५ कर्म कठिण भवजल तजी, इह पाम्या शिव सद्म।
प्राणीपद्म निरंजनो, वंदो गिरि महापद्म । सि० २९ ।
१६ शिवबहु विवाह उत्सवे, मंडप रचियो सार।
मुनिवर वर बैठक भणी, पृथ्वी पीठ मनोहार। सि० ३०।
१७ श्री सुभद्रगिरि नमो, भद्र ते मंगल रूप।
जल तरु रज गिरवर तणी, शीश चढ़ावे भूप। सि० ३१।
१८ विद्याधर सुर अप्सरा, नदी शेत्रुंजी विलास।
करता [illegible]

१९ बीजा निरनाणी प्रभु, गई चौवीसी मझार।
 दस गणधर मुनिमां वडा नामे कदंब अणगार ॥ ३३।
 प्रभु वचन अणसण करी, मुक्तिपुरी मां वास।
 नाम कदंबगिरि नमो, तो होय लील विलास। सि॰ ३४।
२० पाताले जस मूल छे, उज्वल गिरिनो सार।
 त्रिकरण योग वन्दता, अल्प होये संसार। सि॰ ३५।
२१ तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादिक सुख भोग
 ज वछे ते संपजे, शिव रमणी संयोग। ३६।
 विमलाचल परमेष्ठिनो, ध्यान धरे षट् मास।
 तेज अपूर्व विस्तरे, पूरे सघली आस। ३७।
 त्रीजे भव सिद्धि लहे ए पण प्रायिक वाच।
 उत्कृष्ट परिणाम थी, अन्तर मुहुर्त साच। ३८।
 सर्व काम दायक नमो, नाम करी ओलखाण।
 श्री शुभवारविजय प्रभु, नमता कोडि कल्याण। सि॰ ३९।

श्री विजयकमल सूरीश्वरजी महाराज नी
जयन्ती नु काव्य

सूरिवर छ सुखकार, सूरिवर है सुखकार; भवियां।
पावन तारण जाणियर, सिद्धाचल गुणखाण। भ॰ सूरि

देवचन्द सेठि तिहां वसेरे, मेघबाई पुत्र कल्याण । भ० सूरि
दुःखनी खाण संसार नेरे, त्यागी थया अणगार । भ० सूरि
मुक्तिविजय गुरु धारियारे मुक्ति मारग दातार । भ० सूरि
कमलविजय नाम जेहनुंरे, गणिसूरि पदना धार । भ० सूरि
शान्त स्वभावी जे हतांरे, गुण गुणी ना लेनार । भ० सूरि
मरुधर मालव दक्षिणेरे, गुजरातने सौराष्ट्र । भ० सूरि
विचर्या देश विदेश मांरे, करता भवि उपगार । भ० सूरि
बारडोली चौमासुं करेरे, संघमा हर्ष न माय । भ० सूरि
ओगणी चुम्मोतेर आसो मासनीरे, विजया दशमी जाण
भ० सूरि
समाधि थी सुरीश्वरोरे स्वर्गे सिधाव्या जाण । भ० सूरि
गुणी नां गुण गावतांरे गुण प्रकटे मनोहार । भ० सूरि
मोहन प्रतापे पामशेरे, माणेक गुण जगदीश । भ० सूरि

आ० विजयकमल सूरीश्वर स्वर्ग जयंतीनुं गीत

(राग-पितल लोटा जले भर्या रे)

पावन तीरथ जाणिये रे, नामे शत्रुंजय जाण रे
साहेली स्वर्ग जयंति ने उजवोरे
तिहां देवचन्द सेठियो रे, मेघबाई पुत्र कल्याण रे सा० स्व०

दुखनी खाण ससार ने रे, आणी लिये सयम भार रे
सा० स्व०

मुक्तिविजय गुरु धारिया रे, कमलविजय जे थाय रे
सा० स्व०

पन्यास गणि पद धारता रे, पछी सूरि पद ना धार रे
सा० स्व०

प्रतिबोधी केई जीवने रे, आया देई उपदेश रे
सा० स्व०

सूरतादिक नगर ना रे, दूर कर्या घणा कलेश रे
सा० स्व०

बारडोली गाम ना भाग्यथीर, छेल्लु चौमासु थायरे
सा० स्व०

ओगणी चुमाधर आमो मासनीर, विजाया दशमी जाणरे
सा० स्व०

समाधीया सूरीश्वरार, स्वर्ग सिधाव्या जेहरे
सा० स्व०

गुणीना गुण गावतार, गुण प्रगट मवि आयरे
सा० स्व०

सरि मादनना प्रताप नार माणक गुरु गुण गायरे
सा० स्व०

आत्महित सिखामण पद

तेरो जन्म सफल तूं कर लेरे   तेरो जन्म०

सिद्ध स्वरूपी साहेब पामी,
ध्यान प्रभु का धर लेरे तेरो० ,,

चिन्तामणि सम नर भव पायो,
मोह माया कुं तज देरे तेरो० ,,

मिथ्या वासना दूर हटावी,
नरक तिरी गति हर देरे तेरो० ,,

शुद्ध देव गुरु निश दिन ध्यायी,
समकित निर्मल कर लेरे तेरो० ,,

धरम करम कुं करले प्राणी,
तम तिमिर कुं हर लेरे तेरो० ,,

शुद्धातमे जिणंद ने सेवी,
मुक्ति वधू कुं वर लेरे तेरो० ,,

मोहन प्रतापी जिनवर ध्याने,
माणेक शिवपद वर लेरे तेरो० ,,

श्री नेम प्रभुजी नी जान

जादव कुल सोहे भलुं रे, जिहा नेमि जिन अवतार
प्रभुजी तारी जानमां रे

दुखनी खाण ससार ने रे, आषी लिये सयम भार रे
सा० स्व०

मुक्तिविजय गुरु धारिया रे, कमलविजय जे थाय रे
सा० स्व०

पन्यास गणि पद धारता रे, वली सूरि पद ना धार रे
सा० स्व०

प्रतिबोधी केई जीवने रे, सार्या देई उपदेश रे
सा० स्व०

सूरतादिक नगर ना रे, दूर कर्या घणा क्लेश रे
सा० स्व०

बारडोली गाम ना भाग्यथीरे, छेल्लु चौमासु थायरे
सा० स्व०

ओगणी चुमोत्तर आसो माससनीर, विजया दशमी जाणरे
सा० स्व०

समाधीथी सूरीश्वरोर, स्वर्गे सिधाव्या जेहरे
सा० स्व०

गुणीना गुण गावतारे, गुण प्रगटे सवि आयरे
सा० स्व०

सरि मोहनना प्रताप नोरे, माणेक गुरु गुण गायरे
सा० स्व०

भव भ्रमणाने वारवा, आव्यो तुम दरबार
प्रभु तुंहीज तारणहार खरो । प्र० २

दर्शन लेवा आवियो, द्यो दर्शन जिनराज
दर्शन थी दर्शन लही, पामु अविचल राज
पामे दर्शन तरे संसार खरो । प्र० ३

धन्य दिवस माहरो, धन्य घड़ी सुखकार
जे दिने प्रभु भेटिया, सफल थयो अवतार
अवतार हवे मुज दूर करो । प्र० ४

चउगतिना दुःखमां, रुलीयो काल अनंत
नाथ हवे हुं आवियो, सार करो भगवंत
भगवंत भव निस्तार करो । प्र० ५

भालक नगरमां भाग्यथी, भेटया धर्म जिणंद
शरण लह्यु प्रभु आपनुं, वारो कर्म ना फंद
हरे कर्म होवुं भवपार खरो । प्र० ६

मुक्ति मोहन मंदिरे, वास करावो नाथ
अवर न याचुं हे प्रभु, तुम पासे जगनाथ
प्रतापे माणेक सनाथ करो । प्र० ७

कई दिशे जानो आवसर, फिहाँ उड़े अबीर गुलाल प्रभु०
कौण घाड़ कौण हाथीयेरे, कौण छे रथ पलाण प्रभु०
कृष्ण घाड़ बलदव हाथीयेर, नेमजी रथ पलाण प्रभु०
राजुल उभी गाखड़ेर जुवे जानोनी वाट प्रभु०
आया रथड़ा पाछा वालवा र, मूच्छा पाम्या राजूल प्रभु०
चन्दन जल छांटे पछी रे, थया राजुल सावधान प्रभु०
वरसी दान न दइनेर, सहसावने दीक्षा लीध प्रभु०
दीन पचावन मं पामियां रे, पामियां केवल ज्ञान प्रभु०
राजुले प्रथम आदयु रे, प्रतिवोध्या रह नेम प्रभु०
नम राजुल मुगत गयां र, रह नेमी शिवधाम प्रभु०
खरि प्रतापे शिवपुरमरि, माणिक विजय करे वास प्रभु०

मालक मवन धर्मनाथनु स्तवन

प्रभु धर्म जिणंद भवपार करो
मारी भव अनवनी फेरी हरो।
वदन चन्द्र मम मोहतु, काया कंचनवान
लक्षणे लक्षीत देहड़ी, करतां पामु न मान
एक हजार आठ लक्षणा खरो। प्र० १
तुम चरणे शिर माहरु, नमतां लागे न वार

भव भ्रमणाने वारवा, आव्यो तुम दरबार
प्रभु तुंहीज तारणहार खरो। ३

दर्शन लेवा आवियो, द्यो दर्शन जिनराज
दर्शन थी दर्शन लही, पासु अविचल राज
पामे दर्शन तरे संसार खरो। प्र०

धन्य दिवस माहरो, धन्य घड़ी सुखकार
जे दिने प्रभु भेटिया, सफल थयो अवतार
अवतार हवे मुज दूर करो। प्र० ४

चउगतिना दुःखमां, रुलीयो काल अनंत
नाथ हवे हुं आवियो, सार करो भगवंत
भगवंत भव निस्तार करो। प्र० ५

भालक नगरमां भाग्यथी, भेटया धर्म जिणंद
शरण लह्युं प्रभु आपनुं, वारो कर्म ना फंद
हरे कर्म होवुं भवपार खरो। प्र० ६

मुक्ति मोहन मंदिरे, वास करावो नाथ
अवर न याचुं हे प्रभु, तुम पासे जगनाथ
प्रतापे माणेक सनाथ करो। प्र० ७

राजगृही तीर्थनु स्तवन

नयना सफल मयी, आज मोरी नयना सफलमयी
राजगृहीमें मुनिसुव्रतकी, मुरती गुणे भरी । आ० न ।
च्यवन जनम दीक्षाने कवल, मुनिसुव्रतनां सही । आ० न
चौद चोमासां वीर जिणंदे, किया इहां आवी करी । आ० न
गौतमादि गणधर प्रभु वीरना, शिव गया भवतरी । आ०न
वैभव त्यागी संयम धार्यो, धन्ना शालीभद्र सही । आ० न
वैभारगिरि पर अणसण करके सुरपद पाया सही । आ० न
विपुलगीरिने रत्नगिरी ज्यां, उदय सोवन गीरि । आ० न
पंचम वैभारगिरीवर वंदो, भवोभव दुख हरी । आ० न
मोहन प्रतापी माणेक तारो, भवभय दूर करी । आ० न

पच्चक्खाण सूत्र

॥ दिनक पच्चक्खाण ॥

१ नमुक्कार सहिय मुट्ठसहिय पच्चक्खाण

उग्गए सूर नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअ पच्चक्खाइ
चउव्विहंपि आहार असण, पाण, खाइम साइम अन्नत्थणा
भोगेण सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तिया
गारेण वोसिरइ ॥

२ पोरसी साढ़पोरसी पच्चक्खाण

- उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरसि, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं-अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेण, वोसिरइ।

३ पुरिमुड्ढ-अवड्ढ-पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, पुरिमुडढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न-त्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

४ एगासण, बियासणा का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं पोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, . दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। विगइओ पच्चक्खाइ-अन्न-

त्थणाभोगेण, सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थ संसट्ठेण, उक्खित्त विवेगेण, पडुच्चमक्खिएण। पारिट्ठावणिया गारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण। एगासण पच्चक्खाइ तिविहंपि आहार-असणं, खाइम, साइम अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण, सागारियागारेण, आउण्टणपसारेण गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहु लेवेण वा,ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

५ आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं पोरिसिं, साड्ढ पोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। आयंबिल पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेण उक्खित्त विवेगेण पारिट्ठावणियागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। एगासण

पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं आउंटण-पसारेणं, गुरुअभुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेण वा, वहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

६ तिविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणभोगेणं, सहसा-गारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणहार पोरिसिं, सांढ पोरिसिं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाई-चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेणवा बहु लेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

त्थणाभोगेण सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थ ससट्ठे ण, उक्खित्त विवेगेण, पडुच्चमक्खिएण। पारिट्ठावणिया गारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण। एगासण पच्चक्खाइ तिविहंपि आहार-असण, खाइम, साइम-अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण, सागारियागारेण, आउट्टणपसारेण गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहु लेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

५ आयंबिल का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअ, पोरिसिं, साड्ढ पोरिसिं मुट्ठिसहिअ पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहार असण पाण, खाइम साइम-अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण,। आयंबिल पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण, लेवालेवेण, गिहत्थससट्ठेण उक्खित्त विवेगेण, पारिट्ठावणियागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। एगासण

पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं. सागारियागारेणं आउंटण-पसारेणं, गुरुअभुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

६ तिविहार उपवास पच्चक्खाण

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणभोगेणं, सहसा-गारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं। पाणहार पोरिसिं, साढ पोरिसिं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाई-चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं। पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा, अच्छेणवा बहु लेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ।

७ चउव्विहार पच्चक्खाण उपवास

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठ पच्चक्खाइ। चउव्विहपि आहार असण, पाणं खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सव्व समाहिवत्तियागारेण वोसिरइ।

रात के पच्चक्खाण

८ पाणहार पच्चक्खाण

पाणहार दिवस चरिम पच्चक्खाई-अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

९ चउव्विहार पच्चक्खाण

दिवस चरिम पच्चक्खाई चउव्विहपि आहार-असणं, पाणं, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेण सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरई।

१० तिविहार पच्चक्खाण

दिवस चरिम पच्चक्खाई तिविहपि आहार, असणं, खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरा-गारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरई।

११ दुविहार पच्चक्खाण—

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ-दुविहंपि आहारं, असणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरई।

१२ देसावगासियं पच्चक्खाण

देसावगासिअ उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ—अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहि वत्तियागारेणं वोसिरई॥

पोसह पच्चक्खाण सूत्र

करेमि भते ? पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ, शरीरसकार पोसहं सव्वओ वंभचेर पोसहं सव्वओ, अव्वावार—पोसहं सव्वओ, चउव्विहं पोसहं ठामि। जावदिवसं आहोरत्तं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं। मणेणं, वायाए, कायेणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पोसह पारने का सूत्र

सागर चन्दो कामो, चंन्द वडिंसो सुदंसणो धन्नो।

जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीवी अंतेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद काम देवाय, जास पससइ भयव दढव्व यत्त महावीरो ॥ २ ॥ पौषधव्रत विधि से लिया, और विधि से पूर्ण किया, तथापि कोई अविधि हुई हो सो मन, वचन, और काया से मिच्छामि दुक्कड ।

श्री वीश स्थानक तप विधि

पदनु नाम	काउसग्ग	साथीया	खमासमणा	प्रदक्षिणा	नौकरवाली
णमो अरिहंताणं	२४	२४	२४	२४	२०
,, सिद्धाणं	१५	१५	१५	१५	२०
,, पवयणस्स	४५	४५	४५	१५	२०
,, आयरियाणं	३६	३६	३६	४५	२०
,, थेराणं	१०	१०	१०	३६	२०
,, उवज्झायाणं	२५	२५	२५	१०	२०
,, लोयेसव्व साहुणं	२७	२७	२७	२७	२०
,, नाणस्स	५	५	५	५	२०
,, दंसणस्स	६७	६७	६७	६७	२०
,, विणयस्स	१०	१०	१०	१०	२०
,, चरित्तस्स	७०	७०	७०	७०	२०
,, बंभवयधारिणं	६	६	६	६	२०
,, किरीयाणं	२५	२५	२५	२५	२०
,, तवस्स	१२	१२	१२	१२	२०
,, गोयमस्स	२८	२८	२८	२८	२०
,, जीणाणं	२०	२०	२०	२०	२०
,, संयमधारिणं	१७	१७	१७	१७	२०
,, अभिनवनाणस्स	५१	५१	५१	५१	२०
,, सुयस्स	२	१२	१२	१२	२०
,, तित्थस्स	५	५	५	५	२०

सूचना

आतपमा दरके पदना वीश वीश उपवासकरी आपवा जोइये, ऐम एकेक पदनीओलीपुरी थाय ते एकेक ओली छ महिनामां पुरी थवी जोइये ऐटले दश वर्षे विस ओली पूरी थाय ।

वीश वीश उपवास सुधी एकेक पदनु आराधन करवु, ऐटलेएकेक पदनु वीशवार गणणु काउसग्ग, खमासमणां साथीया आदि करवां कोई कोई पद नाममां फेरफार छे ते आरीते १५ मु दान १६ वैयावच्च, २० मु प्रवचन ।

बीस स्थानक तपमां खमासमण देतां बोलवाना

दोहा

जे जे पदनो जेटला खमासमण देवाना होय त्यारे तेपदनो दुहो दरकेवखत बोली खमासमण देवां

पहलु अरि-	परमपद परमेष्ठीमां, परमेश्वर भगवान
हंत पद	चार निक्षेप ध्याइये, नमो नमो जिनभाण १
बीजु सिद्ध	गुण अनंत निर्मलथया, सहज स्वरूप उजास
पद	अष्टकर्ममल क्षय करी, सिद्धि भये नमो तास २
त्रीजुं प्र	भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत वृष्टि
वचन पद	त्रिभुवन जीवने सुखकरी जय २ प्रवचन द्रष्टि ३
चोथुं आ	छत्रीस छत्रीसी गुणे, युग प्रधान मुणिंद
चार्य पद	जिनमत पर जाणता, नमो नमो ते सूरींद ४
पांचमु	तजी परपरणती रमणता, लहे निज भाव स्वरूप
थीविर पद	स्थिर करता भविलोकने जय २ थीवीर अनुप ५
छठु उ	बोध सुक्ष्म विणु जीवने न होय तत्व प्रतीत
पाध्याय	भणे भणावे सूत्रने जय जय पाठक गीत ६
सातमु साधु	स्याद्वाद गुण परिणम्या रमता समता संग
	साधे शुद्धानन्दता नमो साधु शुभ रंग ७

आठमुं ज्ञान	अध्यातम ध्याने करी, विघटे भवभय भीति
पद	सत्य धर्मते ज्ञान छे नमो नमो ज्ञाननी रीति
नौमु दर्शन	लोकालोकना भावजे, केवली भाषित जेह
पद	सत्य करि अवधार तो, नमो नमो दर्शन तेह ६
दशमु वि-	शौचमूलथी महागुणी, सर्व धर्मनो सार
नय पद	गुण अनंतनो कंदए, नमो २ विनय अचार १०
ग्यारमु चा-	रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फल कही सदीव
रित्र पद	भावरयणनु निधानछे, जय जय संयम जीव ११
बारमु ब्रह्म-	जिन प्रतिमा जिनमदिरा, कंचननां करे जेह
चर्य पद	ब्रह्मचर्यथी बहु फल लहे, नमो नमो सीयल सुदेह १२
तेरमु क्रिया	आत्मबोध विणु जे क्रिया, ते तो बालक चाल
पद	तत्वारथथी धारीये, नमो क्रिया सुविसाल १३
चौदमु तप	कर्म खपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण
पद	पच्चास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण १४
पदरमुं गोयम	छट्ठ छट्ठ तप करे पारणुं, चउनाणी गुणधाम
पद	ए सम शुभ पात्र को नही, नमो नमो गोयम स्वाम १५

सोलमुं जिन पद	दोष अठारे क्षय गया, उपन्या गुण जस अंग वैयावच करिये मुदा, नमो नमो जिनपद सग १६
सतरमुं संयम पद	शुद्धातम गुणमे रमे, तजी इन्द्रिय आसस थीर समाधि सतोषमां, जय जय संयम वश १७
अठारमुं अभिनव ज्ञान पद	ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल अजर अमर पद फल लहो, जिनवर पदवी फुल १८
उन्नीसमुं श्रुत पद	वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुख लीन १६
वीसमुं तीर्थ पद	तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज परमानन्द विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज २०

श्री सिद्धचक्र (नवपद) ओली विधि

क्रम	पदना नाम	नवकार वाली	काउस्सग्ग लोगस्स	खमा समण	साथीया	प्रदक्षिणा	वर्ण	जात
१	ओं ह्रीं नमो अरिहंताणं	२०	१२	१२	१२	१२	श्वेत	चोखा
२	,, नमो सिद्धाणं	२०	८	८	८	८	रकत	घउं
३	,, नमो आयरियाणं	२०	३६	३६	३६	३६	पीलो	चणा
४	,, नमो उवज्जायाणं	२०	२५	२५	२५	२५	नील	मग
५	,, नमो लोओ सव्व साहुणं	२०	२७	२७	२७	२७	कृष्ण	अड़द
६	,, दंसणस्स	२०	६३	६३	६३	६३	श्वेत	चोखा
७	,, नानस्स	२०	५१	५१	५१	५१	,,	,,
८	,, चरित्रस्स	२०	७०	७०	७०	७०	,,	,,
९	,, तवस्स	२०	१२	१२	१५	१२	,,	,,

आतप आसो अने चैत्रनी सुद ७ थी १५ सुधी रोज आंबिल थी करवो, एम वर्षमां बे वार करीने साडा चार वर्षे नव ओली पुरी करवी, अने यंत्र प्रमाणे क्रिया, गणणु विगेरे करवां, त्रिकाल, देववंदन, पूजा, पडिलेहणा, पडिक्कमणादि करवु, विस्तारे करनारे महामंडलनी स्थापना, विधान, वर्ण, मुजब आराधन गुरुगमथी जाणवा योग्य छे।

सोलमुं जिन दोष अढारे क्षय गया, उपन्या गुण जस अंग
पद वैयावच्च करिये मुदा, नमो नमो जिनपद संग १६
सतरमुं संयम शुद्धातम गुणमे रमे, तजी इन्द्रिय आशंस
पद थीर समाधि संतोषमां, जय जय संयम वंश १७
अढारमुं ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल
अभिनव अजर अमर पद फल लहो,
ज्ञान पद जिनवर पदवी फुल १८
उनीसमुं वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन
श्रुत पद ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय
श्रुत सुख लीन १९
वीसमुं तीर्थ तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज
पद परमानंद विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज २०

सातमु ज्ञानपद — ज्ञानावरणी जे कर्मछे, क्षय उपसम तस थायेरे
तो हुये एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायेरे वी० ७

आठमु चारित्र — जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतोरे
लेश्यासुद्ध अलंकर्यो, मोह वने नवि भमतोरे वी० ८

नवमु तप पद — इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगेरे
तप ते एहिज, आतमा वर्ते निज गुण भोगेरे वी० ९

श्री सिद्धचक्रनु, चैत्यवंदन, स्तवन अने थोय

चैत्यवन्दन

जय जय श्री अरिहंत भानु, भविक कमल विकासी
लोका लोक स्वरूप रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी १
समुद्धात शुभ केवली, क्षयकृत मल राशी
शुक्ल चरम सुचि पादसे, भयो बर अविनाशी २
अंतरंग रिपुगण हणीये, हुआ अप्पा अरिहंत
तसु पद पंकज नित रहे, हीर धरण विकसंत ३

स्तवन

नवपद धरजो ध्यान भवियां, नवपद धरजो ध्यान
ए नवपदनु ध्यान करतां, जीव पामे विशराम भवि० १
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणस्वाण भ० २

नवपद ओलीमां दरके पदे बोलवाना दुहा

पहेलु अरि- अरिहतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्यायेरे
हंत पद मेद छद करी आतमा, अरिहत रुपी थायेरे
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांमलजो चित लाइरे
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सवि
आइरे, वी० १

बीजु सिद्ध रुपातीत स्वभाव ज, केवल दसण नाणीरे
पद ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण
खाणीरे वी० २

त्रीजु आ- ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे
चार्य पद पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे वी० ३
चोथु उ- तप सज्झाय रस सदा, द्वादश अंगना ध्यातारे
पाध्याय पद उपाध्याय ते आतमा, जग बांधव जग
भ्रातारे वी० ४

पांचमु अप्रमत्त ज नित रहे, नवि हरखे नवि सोचेरे
साधु पद साध सुधा ते आतमा शु मुंडे शु लोचेरे वी० ५
छट्ठु शम संवेगादिक गुणा क्षय उपसमे जे आवेरे
दर्शन पद दर्शन तेहिज आतमा शु होय नाम धरावेरे, वी० ६

सातमु ज्ञानपद — ज्ञानावरणी जे कर्मछे, क्षय उपसम तस थायेरे
तो हुये एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायेरे वी० ७

आठमु चारित्र — जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतोरे
लेश्यासुद्ध अलंकर्यो, मोह वने नवि भमतोरे वी०८

नवमु तप पद — इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगेरे
तप ते एहिज, आतमा वर्ते निज गुण भोगेरे वी०९

श्री सिद्धचक्रनु, चैत्यवंदन, स्तवन अने थोय

चैत्यवन्दन

जय जय श्री अरिहंत भानु, भविक कमल विकासी
लोका लोक स्वरूप रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी १
समुद्धात शुभ केवली, क्षयकृत मल राशी
शुक्ल चरम सुचि पादसे, भयो बर अविनाशी २
अंतरंग रिपुगण हणीयें, हुआ अप्पा अरिहंत
तसु पद पंकज नित रहे, हीर धरण विकसंत ३

स्तवन

नवपद धरजो ध्यान भवियां, नवपद धरजो ध्यान
ए नवपदनु ध्यान करतां, जीव पामे विशराम भवि० १
अरिहत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणस्वाण भ० २

दर्शन ज्ञान चरित्र ये उत्तम, तप तपो करी बहुमान भ० ३
आसो चैत्रनी सुदी सातमथी, पुनम लगे परमान भ० ४
एम एकाशी आंबील कीजे, वर्ष साडा चारनु मान भ० ५
पडिकमणां दोय टकनां कीजे, पडीलेहण बे वार भ० ६
देववदन त्रण टकनां कीजे, देवपूजा त्रिकाल भ० ७
बार आठ छत्रीस पचीसनो, सत्यावीस सडसठसार भ० ८
एकावन सीत्तर पचासनो, काउसग्ग करो सावधान भ० ९
एकेक पदनु गणणु गणीये दोय हजार प्रमाण भ० १०
ए विधिये ज तप आराधे, ते पामे भवपार भ० ११
करजोडी सेवक गुणगावे, मोहन गुणमणि माल भ० १२
तास शिष्य मुनि हम कहेछे, जनम मरण दुःख वार भ० १३

थोय

जिन शासन वांछीत पुरणदेव रसाल, भावे भवि भणिये सिद्धचक्रगुण माल तिहु काल एहनी, पूजा करे उजमाल, ते अजर अमर पद सुख पामे सुविशाल। १

श्री पाट परम्परा

श्री वर्धमानस्वामीने नम श्री गौतमस्वामीने नम.

श्री सुधर्मास्वामीथी वीर प्रभुनी

५८	पाटे जगतगुरु अकबर बादशाह प्रतिबोधक श्री विजयहीरसूरिजी	
५९	श्री विजयसेनसूरिजी	महाराज
६०	श्री विजयदेवसूरिजी	"
६१	श्री विजयसींहसूरिजी	"
६२	पं० श्री सत्यविजयजी	"
६३	पं० श्री कपुरविजयजी	"
६४	पं० श्री क्षमाविजयजी	"
६५	पं० श्री जिनविजयजी	"
६६	पं० श्री उत्तमविजयजी	"
६७	पं० श्री पद्मविजयजी	"
६८	पं० श्री रुपविजयजी	"
६९	पं० श्री कीर्तीविजयजी	"
७०	पं० श्री कस्तुरविजयजी	"
७१	पं० श्री मणिविजयजी दादा	"
७२	पं० श्री बुद्धिविजयजी (बुटेराय)	"

चार शाखा

७३	गच्छपति श्री मुक्तिविजयजीगणी	(मुलचंदजी)
७४	विजयकमलसूरिजी	"
७५	विजयमोहनसूरिजी	"

तीर्थगुण माणेकमाला का प्राप्ति स्थान

शाः--कपूरचन्दजी हांसाजी

आवाल (जि० सिरोही, मारवाड़)

खेरा बाबूलाल विट्ठलदास

पता— जैन मन्दिर के पास

खेरा, वाया मेहसाणा (गुजरात)

रायसाहब बाबू लक्ष्मीचंद सुचंती

पता–जैन श्वेताम्बर कारखाना

पावापुरी, (बिहार जि० पटना)

सेठिया-जैन-ग्रन्थमाला पुष्प नं० २६

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

प्रतिक्रमण-सूत्र

(मूल विधि-सहित)

अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी
जैन कान्फ्रेन्स द्वारा प्रमाणित

प्रकाशक—

भैरोंदान जेठमल सेठिया

बीकानेर

वीर नि० सं० २४६१

पचमावृत्ति
२०००

विक्रम सं० १९९१

तीर्थगुण माणेकमाला का प्राप्ति स्थान

शा:—कपूरचन्दजी हांसाजी

आवाल (जि० सिरोही, मारवाड़)

बोरा बाबूलाल विट्ठलदास

पता— जैन मन्दिर के पास

मेरा वाया मेहसाणा (गुजरात)

रायसाहब बाबू लक्ष्मीचंद सुचंती

पता-जैन श्वेताम्बर कारखाना

पावापुरी, (बिहार जि० पटना)

सेठिया-जैन-ग्रन्थमाला पुष्प नं० ३६

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

प्रतिक्रमण-सूत्र

(मूल विधि-सहित)

अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी
जैन कान्फ्रेन्स द्वारा प्रमाणित
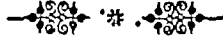
प्रकाशक—
भैरोंदान जेठमल सेठिया
बीकानेर
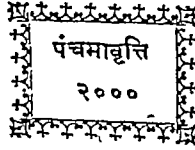
वीर नि० सं० २४६१ | पंचमावृत्ति २००० | विक्रम सं० १९९१

श्रावक प्रतिक्रमण

मूल पाठ

—.❀'❀'०.✱'०'❀:❀'—

।। अथ इच्छामि णं भंते का पाठ ।।

इच्छामि णं भंते तुब्भेहिं अब्भणुण्णाएसमाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि, देवसियणाणदंसणचरित्ताचरित्ततवअइयार चिंतणट्ठं करेमि काउस्सग्गं ॥

।। अथ इच्छामि ठामि का पाठ ।।

इच्छामि ठामि*काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइ-

---

*आवश्यक आगमो० पृष्ठ ७७८ में 'ठाइउ' (करने के लिए) है। किन्तु 'ठामि' पाठान्तर प्रचलित है। इसलिए यही रक्खा गया है।

यारा कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिं तिओ, अणायारो, अणिच्छियव्वो, असावगपा उग्गो, नाणे तह दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामा इए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं, कसायाणं, पंचण्हमणु व्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडियं, जं विरा-हियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ २ ॥

॥ ज्ञान के अतिचार का पाठ ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे, इस तरह तीन प्रकार आगमरूप ज्ञान के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—जं वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं सुटठुदिण्णं, दुटठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाए सज्झाइयं, सज्झाए न सज्झाइयं, भणतां गुणतां विचारतां ज्ञान और ज्ञानवन्तकी आशातना की हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

॥ दर्शन सम्यक्त्व का पाठ ॥

अरिहंतो मह देवो जावज्जीवाय सुसाहुणो गुरुणो
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥
परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि ।
वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥

इअ सम्मत्तस्स पंच अइआरा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते आलोउं—"संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडपसंसा, परपासंड-संथवो" इस प्रकार श्रीसमकितरत्न पदार्थ के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—श्रीजिन वचन सच्चा कर श्रद्धया न हो, प्रतीत्या न हो, रुच्या न हो १, परदर्शन की आकांक्षा की हो २, पारपाखंडी की प्रशंसा की हो ३, परपाखंडी का परिचय किया हो ४, धर्मफल प्रति संदेह किया हो ५, मेरा सम्यक्त्वरूपरत्न पर मिथ्यात्वरूपी रज—मैल लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ४ ॥

बारह स्थूल अतिचार ।

पहला स्थूल—प्राणातिपातविरमणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—रोष वश

से गाढ़ा बन्धन बांधा हो १, गाढा घाव घाला हो २, अवयव का छेद (चाम आदि का छेद) किया हो ३, अधिक भार भरा हो ४, भात पाणी का विच्छेद किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं, अर्थात् जो मैंने दिवस सम्बन्धी अतिचार किया हो तो उससे उत्पन्न हुआ मेरा पाप निष्फल हो।

दूजा स्थूल-मृषावाद विरमणव्रत के विषय जो कोइ अतिचार लगा हो तो आलोउं—सहसाकार से किसी के प्रति कूड़ा आल (झूठादोष) दिया हो १, रहस्य (गुप्त) बात प्रगट की हो २, स्त्री पुरुष का मर्म प्रकाशित किया हो ३, मृषा (झूठा) उपदेश दिया हो ४, कूड़ा लेख लिखा हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तीजा स्थूल-अदत्तादान विरमणव्रत के विषय जो कोइ अतिचार लगा हो तो आलोउं–चोर की चोराइ हुइ वस्तु ली हो १, चोर को सहायता दी हो २ राजविरुद्ध काम किया हो ३, कूड़ा तोल कूड़ा माप किया हो ४, वस्तु में भेल संभेल की हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

चौथा स्थूल*स्वदारसंतोष-परदारविवर्जनरूप मैथुन विरमणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं+ इत्तरियपरिग्गहिया से गमन किया हो १, ÷अपरिग्गहिया से गमन किया हो २, अनंग-क्रीड़ा की हो ३, पराये का विवाह नाता कराया हो ४, कामभोग की तीव्र अभिलाषा की हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

पांचवां स्थूल-परिग्रह-परिमाणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-खेत्त-वत्थु का परिमाण अतिक्रमण (उल्लंघन) किया हो १, हिरण्य सुवर्ण का परिमाण अतिक्रमण किया हो २, धन-धान्य का परिमाण अतिक्रमण किया हो ३, दोपद-चौपद का परिमाण अतिक्रमण किया हो ४, कुविय-सोना चांदी के सिवाय और धातु का

---

*स्वदारसतोष परदारविवर्जनरूप, ऐसा पुरुष को बोलना चाहिये और स्त्री को स्वपतिसन्तोष परपुरुषविवर्जनरूप, ऐसा बोलना चाहिये। +छोटी उम्रवाली विवाहिता स्वस्त्री से गमन किया हो।

÷ अपरिगृहीता—अपरिग्गहिया—वाग्दान (सगपन) होने पर भी विधि के अनुसार विवाह होने से पहले उससे गमन किया हो।

परिमाण अतिक्रमण किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

छठे दिशिव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-उड्ढ (ऊंची) दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो १, अधो (नीची) दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो २, तिरछी दिशा का परिमाण अतिक्रमण किया हो ३, क्षेत्र बढ़ाया हो ४, क्षेत्र-परिमाण के भूल जाने से पंथ का संदेह पड़ने पर आगे चला हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सातवां उपभोगपरिभोग-परिमाणव्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-पच्चक्खाण उपरान्त सचित्त का आहार किया हो १, सचित्त पडिबद्ध का आहार किया हो २, अपक्क (अपक्व) का आहार किया हो ३, दुपक्क (दुष्पक्व) का आहार किया हो ४, तुच्छौषधि का आहार किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पन्द्रह कर्मादान सम्बन्धी कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-इंगालकम्मे १, वणकम्मे २, साडीकम्मे

३, भाडीकम्मे ४, फोडीकम्मे ५, दन्तवाणिज्जे ६, लक्खवाणिज्जे ७, रसवाणिज्जे ८, केसवाणिज्जे ९, विसवाणिज्जे १०, जंतपीलणकम्मे ११, निल्लंछण-कम्मे १२, दवग्गिदावणया १३, सर दह-तलाय-सोसणया १४, असईजणपोसणया १५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदंड-विरमण व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-कामविकार पैदा करने की कथा की हो १, भंड-कुचेष्टा की हो २, मुखरीवचन बोला हो ३, अधिकरण* जोड़ रक्खा हो ४, उपभोग-परिभोग अधिक बढ़ाया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

नववें सामायिक व्रत के विषय जो कोई अति-चार लगा हो तो आलोउं-मन वचन और काया के अशुभ योग प्रवर्त्ताये हों ३, सामायिक की स्मृति न की हो ४, समय पूर्ण हुए बिना सामायिक पारी हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

---

*अधिकरण—आरम्भ का साधन—हथियार—औज़ार ।

दशवें देसावगासिक-व्रतके विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—नियमित सीमा के बाहिर की वस्तु मंगवाई हो १, भेजवाई हो २, शब्द कर के चेताया हो ३, रूप दिखा करके अपने भाव प्रगट किए हों ४, कंकर आदि फेंककर दूसरे को बुलाया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

ग्यारहवें पडिपुन्न-पौषध-व्रतके विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं—पौषध में शय्या संथारा न देखा हो या अच्छी तरह न देखा हो १, प्रमार्जन (पडिलेहण) न किया हो या बेदरकारी से किया हो २, उच्चार-पासवण की भूमि अच्छी तरह न देखी हो या अविधि से देखी हो ३, पुंजी न हो या पुंजी हो तो अच्छी तरह न पुंजी हो ४ उपवासयुक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो ५, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

बारहवें अतिथिसंविभाग-व्रत के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं-सूजती (कल्पनीय) वस्तु सचित्त में डाली हो १ सचित्त से ढांकी हो २,

आप सुजता होते हुए–दुसरा के पास से दान दिराया होय (अपनी वस्तु पराई कही) हो ३, मच्छर (ईर्ष्या) भाव से दान दिया हो ४, भोजन समय टाल कर साधुओं से प्रार्थना की हो अथवा दान देने की भावना न भाई हो ५, जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ संलेखना के पांच अतिचार का पाठ ॥

संलेखना के विषय जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोउं–इहलोगासंसप्पओगे, परलोगा-संसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, (मा मज्झ हुज्ज मरणंतेवि सड्ढापरूवणम्मि अन्नहाभावो) अर्थात् मरणान्त कष्ट के होने पर भी मेरी श्रद्धा प्ररूपणा में फरक आया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ अठारह पापस्थान का पाठ ॥

अठारह पापस्थान आलोउं (१) पहिला प्राणा-तिपात, (२) दूजा मृषावाद, (३) तीजा अदत्ता-दान, (४) चौथा मैथुन, (५) पांचवां परिग्रह, (६) छट्ठा क्रोध, (७) सातवां मान, (८) आठवां माया, (९) नववां लोभ, (१०) दशवां राग, (११) ग्यारहवां

॥ तस्स सव्वस्सका पाठ ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियदुच्चिंतिय-दुचिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि ।

॥ चत्तारि मंगलका पाठ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंतसरणं पवज्जामि, सिद्धसरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

अरिहंतोंका शरणा, सिद्धोंका शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररूपित धर्मका शरणा, चार शरणा, दुर्गति हरणा, और शरणा नहीं कोय । जो भवि प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय ॥

॥ दंसण समकित का पाठ ॥

दंसणसम्मत्त—परमत्थसंथओ वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्त सद्दहणा । एवं समणोवासएणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा

द्वेष, (१२) बारहवां कलह, (१३) तेरहवां अभ्याख्यान, (१४) चौदहवां पैशुन्य, (१५) पनरहवां परपरिवाद, (१६) सोलहवां रतिअरति, (१७) सतरहवां माया मृषावाद, (१८) अठारहवां मिथ्या दर्शन-शल्य, इन अठारह पापस्थानों में से किसी का मैंने सेवन किया हो कराया हो या करते हुए का अनुमोदन किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

॥ इच्छामि खमासमणो का पाठ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो-कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्प किलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता मे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कमं। आवस्सियाए पडिक्कमामि। खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमि च्छोवयारागए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

॥ तस्स सव्वस्सका पाठ ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियदुच्चिंतिय-दुचिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि ।

॥ चत्तारि मंगलका पाठ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंतसरणं पवज्जामि, सिद्धसरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

अरिहंतोंका शरणा, सिद्धोंका शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररूपित धर्मका शरणा, चार शरणा, दुर्गति हरणा, और शरणा नहीं कोय । जो भवि प्राणी आदरे, तो अक्षय अमर पद होय ॥

॥ दंसण समकित का पाठ ॥

दंसणसम्मत्त—परमत्थसंथओ वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्त सद्दहणा । एवं समणोवासएणं सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा

ते आलोउं-संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंडीप संसा परपासंडीसंथवो, एवं पांच अतिचार मध्ये जो कोई अतिचार लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

बारह व्रतों तथा अतिचारों के पाठ ॥

पहिला अणुव्रत—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं त्रसजीव—बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय, पंचिंदिय जान के पहिचान के सङ्कल्प करके उसमें स्वसंबन्धी-शरीर के भीतर में पीडाकारी, सापराधी को छोड़ निरपराधी को आकुट्टी की बुद्धि [हनने की बुद्धि] से हनने का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा एसे पहिले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रत के पच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समाय रियव्वा, तंजहा ते आलोउं-बंधे वहे छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। जो मे देवसिओ अइयाराकओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

दूजा अणुव्रत थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, कन्नालिए, गवालिए, भोमालिए, णासावहारो (थापणमोसा) कूडसक्खिज्ज संधिकरणे मोटी कूडी साख इत्यादिक मोटा झूठ बोलने का पच-

क्खाण, जाव जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, एवं दूजा स्थूल मृषावादविरमण व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं सहसब्भक्खाणे, रहस्सब्भक्खाणे, सदारमंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तीजा अणुव्रत-थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, खात खनकर, गांठ खोलकर, ताले पर कुंजी लगाकर, मार्ग में चलते को लूट कर, पड़ी हुई धणियाती मोटी वस्तु जानकर लेना इत्यादि मोटा अदत्तादान का पच्चक्खाण, सगे सम्बन्धी, व्यापार सम्बन्धी तथा पड़ी निर्भ्रमी वस्तुके उपरान्त अदत्तादान का पच्चक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि मणसा, वयसा, कायसा, एवं तीजा स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतुल्लकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

चौथा अणुव्रत-थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, सदारसंतोसिए, अवसेस मेहुणविहिं का पच्चक्खाण जाव जीवाए, देवदेवी सम्बन्धी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा, तथा मनुष्य तिर्यंच सम्बन्धी एगविहं एगविहेणं न करेमि कायसा, एवं चौथा थूल मेहुणवेरमणव्रतके पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं-इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनंगक्रीडा, परविवाहकरणे, कामभोगतिव्वाभिलासे, जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

पांचवां अणुव्रत-थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं, धन-धान्य का यथापरिमाण, खेत्तवत्थु का यथापरिमाण, हिरण्ण सुवण्ण का यथापरिमाण, दुपयचउप्पय का यथापरिमाण, कुवियधातु का यथापरिमाण, जो परिमाण किया है, उसके उपरान्त अपना करके परिग्रह रखने का पच्चक्खाण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवं पांचवां स्थूल परिग्रहपरिमाण-व्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं-धण-

धन्नप्पमाणाइक्कमे, खेत्तवत्थुप्पमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्णप्पमाणाइक्कमे, दुपयचउप्पयप्पमाणाइक्कमे कुवियप्पमाणाइक्कमे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

छठा दिशिव्रत--उड्ढदिशि का यथापरिमाण अहोदिशि का यथापरिमाण, तिरियदिशि का यथापरिमाण एवं यथापरिमाण किया है, इसके उपरान्त आगे जाकर पांच आस्रव सेवन का पच्चक्खाण, जाव जीवाए* दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवं छठे दिशिव्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं— उड्ढदिसिप्पमाणाइक्कमे, अहोदिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरिअदिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुड्ढा, सइअन्तरद्धा, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सातवां अणुव्रत–उवभोगपरिभोगविहिं पच्चक्खायमाणे उल्लणियाविहि १, दंतणविहि २, फलविहि ३, अब्भंगणविहि ४, उवट्टणविहि ५, मज्जणविहि ६, वत्थविहि ७, विलेवणविहि ८, पुप्फविहि ९, आभरणविहि १०, धूवविहि ११, पेज्जविहि १२, भक्खणविहि १३,

* 'एगविह तिविहेणं' भी कोई कोई बोलते हैं।

ओदणविहि १४, सूपविहि १५, विगयविहि १६, साग विहि १७, महुरविहि १८, जिमणविहि १९, पाणी अविहि २०, मुखवासविहि २१, वाहणविहि २२, उवा णहविहि २३, सयणविहि २४, सचित्तविहि २५, दव्व विहि २६, इत्यादि का यथापरिमाण किया है, इसके उपरान्त उपभोग परिभोग वस्तु को भोगनिमित्त से भोगन का पच्चक्खाण, जावजीवाए, एगविहं तिविहेणं, न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवं सातवाँ उपभोग परिभोगे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—भोयणाओ य, कम्म-ओ य, भोयणओ समणोवासयाणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं — सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धाहारे, अप्पोलिओसहि-भक्खणया, दुप्पोलिओसहिभक्खणया, तुच्छोसहि भक्खणया, कम्मओणं समणोवासयाणं पन्नरस कम्मा दाणाइं जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं तंजहा ते आ लोउं—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणि-ज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसो-सणया, असईजणपोसणया जो मे देवसिओ अइ-यारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

आठवां, अणट्ठादण्डविरमणव्रत—चउव्विहे अणत्थदंडे पण्णत्ते, तंजहा—अवज्झाणाचरिए, पमायाचरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, एवं आठवां अणट्ठादंड सेवन का पच्चक्खाण (जिसमें आठ आगार· आए वा, राए वा, नाए वा, परिवारे वा, देवे वा, नागे वा, जक्खे वा, भूए वा, एत्तिएहिं आगारेहिं अन्नत्थ) जावजीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवं आठवां अणट्ठादंडविरमणव्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—कंदप्पे, कुक्कुइए मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोग-परिभोगाइरित्ते जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

नववां सामायिकव्रत—सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ऐसी सद्दहणा परूपणा तो है सामायिक का अवसर आये सामायिक करूँ तब फरसना करके शुद्ध होऊँ, एवं नववें सामायिकव्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं—मणदुप्पणिहाणेणं, वयदुप्पणिहाणेणं, कायदुप्पणिहाणेणं, सामाइयस्स सइ अकर-

णयाए, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणयाए जो मे देवसियो अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

दसवां देसावगासिकव्रत–दिनप्रति प्रभातसे प्रारंभ करके पूर्वादिक छहों दिशाकी जितनी भूमिका की मर्यादा रक्खी हो उसके उपरान्त आगे जाकर पांच आश्रव सेवने का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा जितनी भूमिका की हद रक्खी उसमें जो द्रव्यादिक की मर्यादा की है उसके उपरान्त उपभोग परिभोग निमित्त से भोगने का पच्चक्खाण जाव अहोरत्तं एग विहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवं दशवां देसावगासिक व्रतके पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं–आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाए, रूवाणुवाए, बहियापुग्गलपक्खेव, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

ग्यारहवां पडिपुन्न पोषधव्रत–असण पाणं खाइमं साइमं का पच्चक्खाण, अबंभसेवन का पच्चक्खाण, अमुक मणिसुवर्ण का पच्चक्खाण, माला-वन्नग-विलेवण का पच्चक्खाण, सत्थ-मुसलादिक-सावज्जजोग सेवन

का पच्चक्खाण, जावअहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा कायसा, ऐसी सद्दहणा परूपणा तो है पोसहका अवसर आये पोसह करूं तब फरसना करके शुद्ध होऊं, एवं ग्यारहवां पडिपुन्नपोषधव्रतका पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं-अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सेज्जासंथारए, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सेज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवण भूमी, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवण-भूमी, पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

बारहवाँ अतिथिसंविभागव्रत—समणे निग्गंथे फासुयएसणिज्जेणं — असणपाणखाइमसाइमवत्थुपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं पाडिहारियपीढफलगसेज्जासंथारएणंओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे विहरामि, ऐसी हमारी सद्दहणा परूपणा है, साधु साध्वी का योग मिलने पर निर्दोष दान दूं तब शुद्ध होऊं। एवं बारहवें अतिथिसंविभागव्रत के पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा ते

आलोउं—सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपिहणया कालाइक्कमेपरोवएसे मच्छरियाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ बड़ी संलेखणा का पाठ ॥

अह भंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणा आराहणा पौषधशाला पूंजे, पूंजके उच्चार-पासवण भूमिको पडिलेहे, पडिलेहके गमणागमणे पडिक्कमेपडि क्कमके दर्भादिक संथारा संथारे संथारके दर्भादिक संथारा दुरूहे दुरूहके पूर्व तथा उत्तर दिशि सन्मुख पल्यं कादिक आसन से बैठ बैठ के "करयलसंपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"नमो त्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं" ऐसे अनन्त सिद्धों को नमस्कार करके, "नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपाविउकामाणं" जयवंते वर्तमानकाले महा विदेह क्षेत्र में विचरतेहुए तीर्थंकरों को नमस्कार करके अपने धर्माचार्यजी को नमस्कार करता हूँ। साधुप्रमुख चारो तीर्थ को खमाके, सब जीव राशि को खमाके पूर्व जो व्रत आदरे हैं उनमें जो अतिचार दोष लगे हो वे सब आलोचके पडिक्कमकरके निंदके निःशल्य होकरके, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सव्वं मुसा

वायं पच्चक्खामि, सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि, सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, सव्वं कोहं माणं जाव सव्वं मिच्छादंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, ऐसे अठारह पापस्थानक पच्चक्खके सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि, जावजीवाए ऐसे चारों आहार पच्चक्खके जंपि य इमं सरीरं, इट्ठं, कंतं, पियं, मणुण्णं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, भण्डकरण्डगसमाणं, रयणंकरंडगभूयं मा णं सीया, मा णं उण्हा, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसमसगा, मा णं वाहियं पितियं, कप्फियं, संभीमं, सन्निवाइयं विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंतु-एवं पि ये णं चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु, ऐसे शरीर वोसरा के, "कालं अणवकंखमाणे विहरामि" ऐसी मेरी सद्दहणा परूपणा तो है, फरसना करूं तो शुद्ध होऊं, ऐसेअपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-आराहणाए पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरि-

आलोउं—सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपिहणया कालाइक्कमेपरोवएसे मच्छरियाए जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ पछी संलेखणा का पाठ ॥

अह भंते अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणा आराहणा पौषधशाला पूंजे, पूंजके उच्चार-पासवण भूमिको पडिलेहे, पडिलेहके गमणागमणे पडिक्कमेपडि क्कमके दर्भादिक संथारा संथारे संथारके दर्भादिक सं थारा दुरूहे दुरूहके पूर्व तथा उत्तर दिशि सन्मुख पल्यं कादिक आसन से बैठ बैठ के "करयलसंपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—"नमो त्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं" ऐसे अनन्त सिद्धों को नमस्कार करके, "नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपाविउकामाणं" जयवंत वर्तमानकाले महा विदेह क्षेत्र में विचरतेहुए तीर्थंकरों को नमस्कार करके अपने धर्माचार्यजी को नमस्कार करता हूँ। साधुप्रमुख चार तीर्थ को खमाके, सर्व जीव राशि को खमाके पहले जो व्रत आदरे हैं उनमें जो अतिचार दोष लगे हों वे सर्व आलोयके पडिक्कमकरके निंदके निःशल्य होकरके, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सव्वं मुसा

वायं पच्चक्खामि, सव्वं अदिन्नादाणं पच्चक्खामि, सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि, सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, सव्वं कोहं माणं जाव सव्वं मिच्छादंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, ऐसे अठारह पापस्थानक पच्चक्खके सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि, जावजीवाए ऐसे चारों आहार पच्चक्खके जंपि य इमं सरीरं, इट्ठं, कंतं, पियं, मणुण्णं, मणामं, धिज्जं, विसासियं, समयं, अणुमयं, बहुमयं, भण्डकरण्डगसमाणं, रयणंकरंडगभूयं मा णं सीया, मा णं उण्हा, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसमसगा, मा णं वाहियं पितियं, कप्फियं, संभीमं, सन्निवाइयं विविहा रोगायंका परिसहा उवसग्गा फासा फुसंतु-एवं पि य णं चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु, ऐसे शरीर वोसरा के, "कालं अणवकंखमाणे विहरामि" ऐसी मेरी सद्दहणा परूपणा तो है, फरसना करूं तो शुद्ध होऊं, ऐसेअपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-आराहणाए पंच अइआरा जाणियव्वा न समायरि-

यव्वा तंजहा ते आलोएं-इहलोगासंसप्पओगे, पर लोगासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्प ओगे, कामभोगासंसप्पओगे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स धम्मस्स का पाठ ।

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए तिविहेण पडि क्कंतो वंदामि जिणचउव्वीसं ।

॥ पांच पदों की वंदना ॥

पहिले पद श्री अरिहंतजी अपन्य बीस तीर्थंकरजी, उत्कृष्ट एक सौ साठ तथा एक सौ सित्तर देवाधिदेवजी, उन में वर्तमान काल में बीस विहरमानजी महाविदेहक्षेत्र में विचरते हैं एक हजार आठ लक्षण के धरणहार चौंतीस अतिशय पैंतीस वाणी करके विराजमान चौंसठ इन्द्रों के वंदनीय अठारह दोष रहित, बारह गुण सहित अनन्त ज्ञान अनन्त-दर्शन अनन्त चारित्र, अनन्त-बल-वीर्य्य अनन्त सुख दिव्यध्वनि भामण्डल स्फटिक-सिंहासन, अशोक वृक्ष कुसुमवृष्टि देवदुन्दुभि छत्र और चँवर, इन आठ महा प्रतिहार्यों से युक्त, पुरुषाकार पराक्रम के धरणहार, अढ़ाई

द्वीप पन्द्रह क्षेत्र में विचरें, जघन्य दो क्रोड केवली, और उत्कृष्ट नवक्रोड़ केवली, केवलज्ञान केवलदर्शन के धरणहार सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव के जाननहार।

॥ सवैया ॥

नमो श्री अरिहंत, करमों का किया अन्त, हुवा सो केवलवंत, करुणा भंडारी हैं, अतिशय चौतीस धार, पेंतीस वाणी उच्चार, समझावें नर नार, पर उनकारी हैं। शरीर सुन्दराकार, सूरज सो झलकार, गुण हैं अनन्तसार, दोष परिहारी हैं, कहत तिलोक-रिख, मन वच काय करि, लुलि लुलि बारम्बार वंदना हमारी हैं ॥ १ ॥

ऐसे अरिहत भगवन्त दीनदयाल महाराज! आप की अविनय आशातना (दिवस सम्बंधी) की हो तो बारम्बार हे अरिहंत भगवन्! मेरा अपराध क्षमा करिये, हाथ जोड, मान मोड़, सीस नमा कर १००८ वार नमस्कार करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि।

आप मंगलीक हो उत्तम हो हे स्वामी! हे नाथ! आपका इस भव परभव भव भव में सदाकाल शरण हो।

दूजे पद श्री सिद्ध भगवान् महाराज पन्द्रह भेदे अनन्त सिद्ध हैं, आठ कर्म खपाय के मोक्ष पहुंचे हैं। (१) तीर्थसिद्धा (२) अतीर्थसिद्धा (३) तीर्थंकरसिद्धा (४) अतीर्थंकरसिद्धा (५) स्वयं-बुद्धसिद्धा (६) प्रत्येकबुद्धसिद्धा (७) बुद्धबोधितसिद्धा (८) स्त्रीलिंगसिद्धा (९) पुरुषलिंगसिद्धा (१०) नपुंसकलिंगसिद्धा (११) स्वलिंगसिद्धा (१२) अन्यलिंगसिद्धा (१३) गृहस्थलिंगसिद्धा (१४) एकसिद्धा (१५) अनेकसिद्धा, जहां जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं दुख नहीं, दारिद्र नहीं, कर्म नहीं काया नहीं मोह नहीं, माया नहीं चाकर नहीं, ठाकर नहीं भूख नहीं तृषा नहीं, मोक्ष में जोत विराजमान सकल कार्य सिद्ध करके चवदे प्रकारे पन्द्रह भेदे अनन्ते सिद्ध भगवन्त हुए, अनन्त सुखों में तल्लीन, अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन क्षायिक समकित, निराबाध अटल अवगाहना, अमूर्त, अगुरु लघु, अनन्त-वीर्य आठ गुण करके सहित हैं।

॥ सवैया ॥

सकल करम टार वश कर लियो काल मुगति में रमण आत्म आतमा को तारी है। देवन सकल भाव हुआ है अनन्त रस सदा ही ज्ञायक भाव भये अविकारी है। [illegible] [illegible] स्वर आवे नाहीं अवारूप अनुप सरूप रूप ऐसे सिद्धधारी है। [illegible] है त्रिलोकीनाथ [illegible] प्रभु, [illegible] [illegible] [illegible], वंदना हमारी है ॥ १ ॥

ऐसे सिद्ध भगवन्तजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय अशातनाकी हो तो बारम्बार हे सिद्ध भगवन् मेरा अपराध क्षमा करिये, हाथ जोड़, मान मोड़ सीस नमाकर १००८ वार नमस्कार करता हूँ।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"।

यावत् भव भव आपका शरण होओ।

तीजे पद श्री आचार्यजी* छत्तीस गुण करके विराजमान पाच महाव्रत पालें पाँच आचार पालें, पाच इन्द्रिय जीतें, चार कषाय टालें, नव वाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य्य पालें, पाच समिति तीन गुप्ति शुद्ध आरधें, आठ सम्पदा (१ आचारसम्पदा, २ श्रुतसम्पदा, ३ शरीरसपदा, ४ वचनसंपदा, ५ वाचनासपदा, ६ मतिसंपदा, ७ प्रयोगमतिसंपदा, ८ सग्रहपरिता) सहित हैं।

॥ सवैया ॥

गुण हैं छत्तीस पुर, धरत धरम उर, मारत करम क्रुर, सुमति विचारी है। शुद्ध सो आचारवंत, सुन्दर है रूप कंत, भण्या सबही सिद्धन्त, वाचणी सुप्यारी है। अधिक मधुरवेण, कोई नहीं लोपे केण, सकल जीवाका सेण, कीरत अपारी हैं, कहत हैं

*आचार्यजी—संप्रदाय के आचार्य

शिरोमणिश्व विलक्षरी वेश धीश ऐसे आचाय्यं ताकु वंदना हमारी है ॥

ऐसे आचारज न्याय पक्षी, संक्रिक परिणामी, परमपूज्य, कल्पनीक, अचित्त वस्तु के सहयाहार, सचित्त के त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुण के अनुरागी सौभागी हैं, ऐसे श्री आचार्यजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो वारम्वार हे आचार्यजी महाराज मेरा अपराध आप क्षमा करिये, हाथ जोड़, मान मोड़ शीस नमा कर १००८ बार नमस्कार करता हूँ।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"

मत्थएण भव भव आप का शरण होज्यो ॥

श्री धर्माचार्यजी महाराज को वंदना—नमस्कार हो, जो पांच आचार पालें पांच इन्द्रिय जीतें जियकोहे, जियमाणे, जियमाये जियलोभ नाणसम्पन्ने दंसणसम्पन्ने चरित्तसम्पन्ने तापबसम्पन्ने मंजमणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे, ग्राम नगर पुर पट्टण सन्निवेशादि में विचरें, धन्य है वह ग्राम नगर जहाँ हमारे धर्माचार्य विराजे हैं जिनका वचनामृत सुने हैं, कान पवित्र कर हैं दर्शन कर नेत्र पवित्र कर हैं सूझता आहार पानी शुद्ध भाव से बहराय के परम उपकारी अनेकगुणधारी हमारे

धर्माचार्य* श्री श्री श्री १००८ श्री ....के चरण कमल में एक हज़ार आठ तिक्खुत्ता के पाठ से त्रिकाल विधिसहित मन वचन काया करके हाथ जोड़ मान मोड वंदना करूं हूं, अविनय आशातना हुई हो भुज्जो भुज्जो अपराध खमजो, भव भव में आप का शरण होजो।

चौथे पद श्री उपाध्यायजी, पच्चीस गुण करके सहित (ग्यारह अंग बारह उपांग चरणसत्तरी करणसत्तरी इन पच्चीस गुण करके सहित) तथा ग्यारह अंग को पाठ अर्थ सहित सम्पूर्ण जानें और १४ पूर्व के पाठक निम्नोक्त बत्तीस सूत्र के जानकार, ग्यारह अंग (१) आचाराग, (२) सूअगडाग, (३) ठाणांग, (४) समवायाग, (५) विवाहपन्नत्ती (६) णायाधम्मकहा (ज्ञाता धर्मकथा), (७) उपासगदसा (८) अंतगडदसा, (९) अणुत्तरोववाई, (१०) पण्हावागरणं (प्रश्नव्याकरणं) (११) विवागसुय (विपाकश्रुत)।

बारह उपाग—(१) उववाई, (२) रायप्सेणी, (३) जीवाभिगम, (४) पन्नवणा, (५) जबूदीवपन्नत्ती, (६) चन्दपन्नत्ती, (७) सूरपन्नत्ती, (८) निरयावलिया, (९) कप्पवडंसिया, (१०) पुप्फिया, (११) पुप्फचूलिया (१२) वण्हिदसा।

चार मूलसूत्र—(१) उत्तरज्झयणा (उत्तराध्ययन), (२) दसवेगालियसुत्त, (दशवैकालिक), (३) णंदीसुत्त (नंदीसूत्र), (४) अणुयोगद्दारं—(अनुयोगद्वारा)।

---

* धर्माचार्यजी—गुरु महाराज, जिन के पास समकित ली हो।

चार छेद—(१) दसासुयक्खंधो (दशाश्रुतस्कन्ध), (२) विहक्कप्पो (बृहत्कल्प), (३) ववहारसुत्त (व्यवहारसूत्र) (४) निसीहसुत्तं (निशीथसूत्र) और बत्तीसवाँ आवस्सगं (आवश्यक), इत्यादि अनेक ग्रन्थ के जानकार, सात नय, निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण आदि स्वमत तथा अन्य मत के जानकार, मनुष्य या देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पण जिन सरीखे, केवली नहीं पण केवली सरीखे हैं।

॥ सवैया ॥

पढत इग्यार अंग करमोंसु करे जंग पाखंडी को मान भंग करत हुसियारी है। चवदे पूरव धार जानत आगम सार भविन के सुखकार भमता निवारी है। पढावे भविक जन स्थिर कर देत मन तप कर तावे तन ममता निवारी है। कहत है तिलोकरिख ज्ञानभानु परतिख ऐसे उपाध्याय ताकुं वंदना हमारी है।

ऐसे उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्वरूप अंधकार का मेटनहार, समकित रूप उद्योत का करनहार, धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर कर सारए, वारए, धारए इत्यादिक अनेक गुण करके सहित हैं। ऐसे श्री उपाध्यायजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो वारम्वार हे उपाध्यायजी महाराज मेरा अपराध क्षमा करिये हाथ जोड़ मान मोड़ सीस नमा कर १००८ बार नमस्कार करता हूं।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"

यावत् भव भव आप का शरण होश्रो ॥

पांचवें पद 'नमो लोए सव्वसाहूण' कहिये अढाई दीप पंद्रह क्षेत्र रूप लोक के विषे सर्व साधुजी जघन्य दो हजार करोड, उत्कृष्ट नव हजार करोड जयवंता विचरें, पांच महाव्रत पालें, पाच इन्द्रिय जीतें, चार कषाय टालें, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मनसमाधारणीया, वयसमाधारणीया, कायसमाधारणीया, नाणसम्पन्ना, दंसणसम्पन्ना, चारित्तसम्पन्ना, वेदनीयसमा अहियासनीया, मरणान्तिकसमा अहियासनीया हैं, ऐसे सत्ताईस गुण करके सहित, पांच आचार पालें, छह काय की रक्षा करें, सात कुव्यसन, आठ मद छोड़े, नव वाड सहित ब्रह्मचर्य्य पालें, दश प्रकार यति धर्म धारें, बारे भेदे तपस्या करें, सत्रह भेदे संयम पालें, अठारह पाप को त्यागें, बाईस परिषह जीतें, तीस महामोहनीय कर्म निवारें, तेतीस आशातना टालें, बयालीस दोष टाल के आहार पानी लेवें, सैतालीस दोष टाल के भोगें, बावन अनाचार टालें, तेड्या [बुलाया] आवे नहीं, नोतिया जीमे नहीं, सचित्त के त्यागी, अचित के भोगी, लोच करें, खुले पैर चालें, इत्यादि कायक्लेश करें, और मोह ममता रहित हैं ॥

चार छेद—(१) दसासुयक्खंधो (दशाश्रुतस्कन्ध), (२) बिहक्कप्पो (बृहत्कल्प) (३) ववहारसुत्त (व्यवहारसूत्र) (४) निसीहसुत्त (निशीथसूत्र) और बत्तीसवाँ आवस्सग (आवश्यक), इत्यादि अनेक ग्रन्थ के जानकार, सात नय, निश्चय व्यवहार, चार प्रमाण आदि स्वमत तथा अन्य मत के जानकार, मनुष्य या देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पण जिन सरीखे केवली नहीं पण केवली सरीखे हैं।

॥ सवैया ॥

पढत इग्यार अंग करमोंसु अड़े जंग पाखण्डी के मान भंग करन हुसियारी है। चवदे पूरव धार जानत आगम सार भविन के सुखकार भ्रमता निवारी है। पढावे भविक जन स्थिर कर देत मन तप कर तावे तन ममता निवारी है। ध्यान है निकलंकित शाममसु वरतित ऐसे उपाध्याय ताकुं वंदना हमारी है।

एस उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्वरूप अंधकार का मेटनहार, समकित रूप उद्योत का करनहार धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर कर सारण वारण, धारण, इत्यादिक अनेक गुण करके सहित हैं। एस श्री उपाध्यायजी महाराज आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो बारम्बार हे उपाध्यायजी महाराज मेरा अपराध क्षमा करिये हाथ जोड़ मान मोड़, सीस नमा कर १००८ बार नमस्कार करता हूं।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि"

यावत् भव भव आप का शरण होश्रो ॥

पांचवें पद 'नमो लोए सव्वसाहूण' कहिये अढाई द्वीप पंद्रह क्षेत्र रूप लोक के विषे सर्व साधुजी जघन्य दो हजार करोड, उत्कृष्ट नव हजार करोड जयवंता विचरें, पांच महाव्रत पालें, पांच इन्द्रिय जीतें, चार कषाय टालें, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मनसमाधारणीया, वयसमाधारणीया, कायसमाधारणीया, नाणसम्पन्ना, दंसणसम्पन्ना, चारित्तसम्पन्ना, वेदनीयसमा अहियासनीया, मरणान्तिकसमा अहियासनीया हैं, ऐसे सत्ताईस गुण करके सहित, पांच आचार पालें, छह काय की रक्षा करें, सात कुव्यसन, आठ मद छोड़ें, नव वाड सहित ब्रह्मचर्य पालें, दश प्रकार यति धर्म धारें, बारह भेदे तपस्या करें, सत्रह भेदे संयम पालें, अठारह पाप को त्यागें, बाईस परिषह जीतें, तीस महामोहनीय कर्म निवारें, तेतीस आशातना टालें, बयालीस दोष टाल के आहार पानी लेवें, सैंतालीस दोष टाल के भोगें बावन अनाचार टालें, तेडिया [बुलाया] आवे नहीं, नोतिया जीमे नहीं, सचित्त के त्यागी अचित्त के भोगी, लोच करें, खुले पैर चालें, इत्यादि [illegible] रें, और मोह ममता रहित हैं।

॥ सवैया ॥

आदरी संयम भार करणी करे अपार समिति गुपति धार विकथा निवारी है ममता करें न लगार सावद्य न बोले वाण कुमति कषाय हाण क्रिया भण्डारी है। ज्ञान भणे आठु जाम खोले मरमांत धरम धरम को करे काम ममता कुं मारी है। कहत है तिलोक रिख करमां को टाले विख, ऐसे मुनिराज ताकुं वंदना हमारी है।

ऐसे मुनिराज महाराज आप की (दिवस सम्बन्धी) अविनय आशातना की हो तो वारम्वार हे मुनिराज मेरा अपराध क्षमा करिये हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर १००८ बार नमस्कार करता हूँ।

"तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि ॥

सदा [illegible] आपका शरण होज्यो ॥

॥ दोहा ॥

अनंत चौबीसी जिन नमुं, सिद्ध अनन्ते कोड़।
केवल ज्ञानी गणधरा वंदू बे कर जोड़ ॥
दोय कोड केवलधरा विहरमान जिन बीस।
सहस्र युगल कोडी नमूं साधु नमु निशदीस ॥
धन साधु धन साध्वी धन धन है जिनधर्म।
ये समर्या पातक झरे टूटे आठों कर्म ॥

अढाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र मे श्रावक श्राविका दान देवें, शील पाले, तपस्या करें, शुद्ध भावना भावें, संवर करें, सामायिक करें, पोसह करें, प्रतिक्रमण कर, तीन मनोरथ चिंतवें, चौदह नियम चितारें, जीवादिक नव पदार्थ जाने, श्रावक के इक्कीस गुण करके युक्त एक व्रतधारी, जाव बारह व्रतधारी भगवंत की आज्ञा मे विचरें ऐसे बडों से हाथ जोड पैर पडके क्षमा मागता हूँ, आप क्षमा करें आप क्षमा करने योग्य हैं, और छोटों से समुचे खमाता हूँ ॥

॥ चौरासी लाख जीवाजोंणी (जीवयोनि) का पाठ ॥

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउ-काय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य। ऐसे चार गति में चौरासी लाख जीवाजोणी के सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त हालते चालते जीवों को उठते बैठते जानते अजानते किसी जीव को हनन किया हो, कराया हो, हनता प्रति अनुमोदन किया हो, छेदा हो, भेदा हो, किलामणा उपजाइ हो, मन, वचन, काया, करके अठारह लाख चोवीस हजार एक सौ बीस (१८२४१२०) प्रकारे *तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

नोट—जीवतत्व के ५६३ भेदोंको अभिहयादि दशोंके साथ गुणाकार करने से ५६३० भेद होते हैं। फिर इनको राग और

॥ खामेमि सव्वे जीवा का पाठ ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥
एवमहं आलोइय, निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

देवसियपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं
(मैं दिवस सम्बन्धी प्रायश्चित्त की शुद्धि के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ)

॥ समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ ॥

गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं पोरिसियं साड्ढपोरिसियं, (अपनी अपनी इच्छा अनुसार) तिविहंपि चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं,

---

दूसरे के साथ त्रिगुणाकार करने से ११२६ भेद बनते हैं। फिर इन्हीं को मन वचन कायाके साथ त्रिगुणा करने से ३३७८ भेद होते हैं अपितु इनको ही तीन करणों के साथ संयोजन कर देने से १०१३४ भेद बन जाते हैं अपितु इनमें भी फिर तीन कालके साथ गुणाकार करने से ३०४०२ भेद हो जाते हैं। फिर इनको अरिहन्त, सिद्ध, साधु, देव, गुरु और आत्मा इस प्रकार छै से गुणाकार करने पर १८२४१२ भेद बनते हैं अर्थात् इस प्रकार से मैं मिच्छामि दुक्कडं देता हूँ और फिर पाप कर्म न करने की इच्छा करता हूँ ॥

साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तारागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं * वोसिरामि ।

दोहा

आगे आगे दव वले, पीछे हरिया होय ।
बलिहारी उस वृक्ष की, जड़ काट्या फल होय ॥

शम संवेग निर्वेद अनुकम्पा आस्था देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ, धर्म केवली भाषित दयामय, और सच्चे की सद्दहणा झूठे का बार बार मिच्छा मि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अविरति का प्रतिक्रमण, प्रमाद का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण, अशुभ योग का प्रतिक्रमण, इन पांच प्रतिक्रमणों में से किसी का प्रतिक्रमण न किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

गये काल का प्रतिक्रमण, वर्त्तमान काल का संवर, भविष्य (आवते) काल का पच्चक्खाण में कोई दोष लगा हो तो तस्स मि मिच्छा दुक्कडं ।

* स्वयं पच्चक्खाण करना हो तब 'वोसिरामि' ऐसा बोले और जब दूसरे को पच्चक्खाण कराना हो तो 'वोसिरे' ऐसा बोले ।

॥ खामेमि सव्वे जीवा का पाठ ॥

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ॥
एवमहं आलोइय निंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं॥

देवसियपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं

(मैं दिवस सम्बन्धी प्रायश्चित्त की शुद्धि के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ)

॥ समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ ॥

गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं पोरिसियं साड्ढपोरिसियं, (अपनी अपनी इच्छा अनुसार) तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं, असणं पाणं, खाइमं,

---

इनके साथ त्रिगुणाकार करने से ११२६ भेद बनते हैं। फिर इन्हीं को मन वचन काया के साथ त्रिगुणाकार करने से ३३७८ भेद होते हैं परन्तु इनको ही तीन करणों के साथ संयोजन कर देने से १०१३४ भेद बन जाते हैं परन्तु इनको भी फिर तीन काल के साथ गुणाकार करने से ३०४०२ भेद हो जाते हैं। फिर इनको अरिहन्त सिद्ध साधु देव गुरु और आत्मा इस प्रकार छै से गुणाकार करने पर १८२४१२ भेद बनते हैं अर्थात् इस प्रकार से मैं मिच्छामि दुक्कडं देता हूं और फिर पाप कर्म न करने की इच्छा करता हूं।

साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तारागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं * वोसिरामि ।

दोहा

आगे आगे दव बले, पीछे हरिया होय।
बलिहारी उस वृक्ष की, जड़ काट्या फल होय ॥

शम संवेग निर्वेद अनुकम्पा आस्था देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रन्थ, धर्म केवली भाषित दयामय, और सब की सद्दहणा झूठे का बार बार मिच्छा मि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अविरति का प्रतिक्रमण, प्रमाद का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण, अशुभ योग का प्रतिक्रमण, इन पांच प्रतिक्रमणों में से किसी का प्रतिक्रमण न किया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

गये काल का प्रतिक्रमण, वर्त्तमान काल का संवर, भविष्य (आवते) काल का पच्चक्खाण में कोई दोष लगा हो तो तस्स मि मिच्छा दुक्कडं ।

---

* स्वयं पच्चक्खाण करना हो तब 'वोसिरामि' ऐसा बोले और जब दूसरे को पच्चक्खाण कराना हो तो 'वोसिरे' ऐसा बोले ।

॥ प्रतिक्रमण करने की विधि ॥

निरवद्य स्थान में शुद्धतापूर्वक एक आसन पर बैठ कर तीन-बार तिक्खुत्तो के पाठ से श्रीशासनपति को या वर्तमान में अपने गुरु महाराज को खड़े हो वंदना करके चउवीसत्थव की आज्ञा ले कर चउवीसत्थव करें। चउवीसत्थव में इरियावहियाए का पाठ १ तस्स-उत्तरी का पाठ १ कहके काउस्सग्ग करें। काउस्सग्ग में दो लोगस्स का ध्यान करें, मन में १ नवकार मंत्र, बोलके काउस्सग्ग पारें, फिर प्रगट चार ध्यान का पाठ (ध्यान में मन वचन काया चलित हुए हों आर्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया हो, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्याया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) बोलकर १ लोगस्स का पाठ बोल के दो बार नमोत्थुणं का पाठ बाया गोडा ऊँचा रखके बोलें। पीछे श्रीमहावीरस्वामी की तथा गुरु की देवसिय प्रतिक्रमण ठाने की आज्ञा लेवें। बाद इच्छामि णं भंते का पाठ बोलें। पीछे नवकार मंत्र का उच्चारण करें फिर तिक्खुत्तो का पाठ। कहकर प्रथम आवश्यक की आज्ञा मांगें। प्रथम आवश्यक में करेमि भंते का पाठ बोलकर पीछे "इच्छामि ठामि" का पाठ कहें, पीछे तस्सउत्तरी का पाठ उच्चारण करके काउस्सग्ग करें। काउ

नोट—सामायिक की विधि सामायिक सूत्र पुस्तक से जान लेवें।

स्सगमें १४ ज्ञानके अतिचार का, ५ सम्यक्त्व का; ६० बारह व्रतों का, १५ कर्मादान का, ५ संलेखणा का, एवं ९९ अतिचारों का, अठारह पापस्थानकों का, इच्छामि ठामि का और नवकार मंत्र का पाठ चिंतवन करके काउस्सग्ग पालें, काउस्सग्ग में प्रत्येक पाठ की समाप्ति में मिच्छा मि दुक्कडं के वदले 'आलोउं' चिंतवें। काउस्सग्ग पालते समय "नमो अरिहंताणं" यह शब्द प्रगट कह कर आर्तध्यान रौद्रध्यान आदि बोलके पहला आवश्यक समाप्त करें। बाद तिक्खुत्तो के पाठ से दूसरे आवश्यक की आज्ञा मांगें।

दूसरे आवश्यक मे एक लोगस्स का पाठ कह के सामायिक चउवोसथव ये दो आवश्यक पूरे हुए। बाद तिक्खुत्तो के पाठ से तीसरे आवश्यक की आज्ञा मांगें, तीसरे आवश्यक मे इच्छामि खमासमणो का पाठ दो वक्त बोलें।

खमासमणो की विधि॥

प्रथम जहाँ निसीहियाए शब्द आवे तब दोनों गोड़े खड़े करके दोनों हाथ जोडकर बैठे तथा ६ आवर्तन करें सो इस प्रकार-प्रथम 'अहो' 'कायं काय' यह शब्द उचारते ३ आवर्तन होते हैं सो कहते हैं—दोनों हाथ लंबे कर हाथ की दश अगुलियाँ भूमि पर लगा के तथा गुरुचरण स्पर्श करके मुँह से "अ" अक्षर नीचे स्वर से कहें, फिर ऐसे ही दश अंगुलियाँ अपने मस्तक पर लगा के "हो" अक्षर ऊँचे स्वर से कहें, ये दोनों अक्षर कहने से पहिला आवर्तन

होता है, इस प्रकार "का" और "यं" ये दो अक्षर उच्चारते दूसरा आवर्तन हुआ, इस तरह "का" और "य" ये दो अक्षर कहने से तीसरा आवर्तन हुआ। फिर "जत्ता भे जवणिज्जं च भे" शब्द उच्चारते ३ आवर्तन होते हैं, वे इस तरह—प्रथम "ज" अक्षर मंद स्वर से "त्ता" अक्षर मध्यम स्वर से और "भे" अक्षर उच्च स्वर से, इस तरह से ऊपर मुजब बोलें, ये तीन अक्षर बोलने से प्रथम आवर्तन हुआ। और इसी प्रकार "ज, व, णि" ये तीन अक्षर त्रिविध स्वर से ऊपर मुजब कहने से दूसरा आवर्तन हुआ। तथा इसी प्रकार "ज्जं, च, भे" ये तीन अक्षर त्रिविध स्वर से पूर्ववत् बोलने से तीसरा आवर्तन हुआ, एवं ३ + ३ = ६ आवर्तन १ पाठ में बोलें और जहाँ "तित्तीसन्नयराए" शब्द आवे तब खड़ा होकर पाठ समाप्त करें, इसी मुताबिक खमासमणो का दूसरा पाठ बोलें उसमें भी ६ आवर्तन पूर्ववत् करें। दूसरे खमासमणो में 'आवस्सियाए पडिक्कमामि" ये १० अक्षर न कहें। इस प्रकार दो खमासमणा देकर सामायिक एक, चउवीसत्थव दो वंदना तीन ये तीन आवश्यक पूरे हुए। अब चौथा आवश्यक की तिक्खुत्तो के पाठ से आज्ञा लें।

नोट—खमासमणा में जहाँ "तित्तीसन्नयराए" शब्द आवे उस वक्त पहिले एक बार होवे दूसरी बार नहीं।

पीछे खड़े हो कर ६६ अतिचारों का पाठ जो काउस्सग्गमें चिंतन किया था वह सब यहा प्रगट कहें, फरक इतना ही है कि काउस्सग्ग में प्रत्येक पाठ की समाप्ति में "मिच्छा मि दुक्कडं" की जगह 'आलोउ' कहा था सो आलोउं के बदले प्रगट "मिच्छा मि दुक्कड" कहें बाद श्रावक सूत्र पढने की आज्ञा मागे, पीछे "तस्स सव्वस्स" का पाठ उच्चारण करें, फिर नीचे बैठकर दाहिना (जीवण) गोडा ऊचा रखकर दोनों हाथ की दशों ही अंगुलियाँ मिलाकर गोडे के ऊपर रक्खें, पीछे नवकार मंत्र कह के "करेमि भंते" का पाठ पढकर "चत्तारि मंगल" का पाठ बोलें, बाद 'इच्छामि ठामि" का पाठ तथा "इरियावहियाए" का पाठ कहें, बाद "आगमे तिविहे" का पाठ पढकर दंसणसमकित तथा बारह अणुव्रत स्थूलसहित कहें। फिर ऐसे समकित पूर्वक बारह-व्रत सलेखणा सहित, इनके विषय जो कोई अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार जानते अजानते मन, वचन, काय करके सेवन किया हो, सेवन कराया हो सेवन करते हुए को अनुमोदन किया हो तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान् की साख से "मिच्छा मि दुक्कडं" कह के अठारह पापस्थानक और "इच्छामि ठामि" का पाठ बोलें फिर खडे होकर हाथ जोड के "तस्स धम्मस्स" का पाठ उच्चारण करें, बाद दो खमासमणा पूर्ववत् विधि सहित दे करके भाववंदना करने की आज्ञा लें, फिर दोनों गोड़ा नमाय के गोडा ऊपर दोनों हाथ जोड के मस्तक को नीचे नमाय कर एक

नवकार मंत्र कह के पांच पदों को वंदना करें। फिर सीधे बैठ के अनंत चौबीसी कह के अढाई द्वीप का पाठ बोलकर चौरासी लाख जीवयोनि का पाठ उचार के "खामेमि सव्वे जीवा" का पाठ बोलकर अठारह पापस्थानक कहे, फिर सामायिक एक, चउवीसत्थव दो वंदना तीन, प्रतिक्रमण चार, ये चार आवस्यक पूरे हुए, बाद खड़ा होके पांचवां आवश्यक की तिक्खुत्तो के पाठ से आज्ञा लेकर "देवसियपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं" बोलकर बाद नवकार मंत्र, करेमि भंते का पाठ, इच्छामि ठामि का पाठ, और तस्स उत्तरी का पाठ कह के काउस्सग्ग करें काउस्सग्ग में देवसिक राइसिक प्रतिक्रमण में ४ लोगस्स पाक्षिक प्रतिक्रमण में १२ लोगस्स, चौमासी प्रतिक्रमण म २ लोगस्स संवत्सरी प्रतिक्रमण में ४०" लोगस्स का काउस्सग्ग करें। फिर काउस्सग्ग पारें, आर्तध्यान रौद्रध्यान आदि चार ध्यान का पाठ प्रगट बोलके एक लोगस्स कहें, बाद दो खमासमण विधिसहित देवें, सामायिक एक चउवीसत्थव दो, वंदना तीन प्रतिक्रमण चार काउस्सग्ग पांच, ये पांच आवस्यक पूरे हुए। बाद छट्ठे आवश्यक का कामी श्रम्ण श्रीमहावीर स्वामी अन्तरयामी ऐसे कहे छट्ठे आवश्यक में खड़ा हो साधुजी महाराज हों तो उनसे अपनी शक्ति अनुसार पच्चक्खाण करें तथा वे न हों तो बड़े श्रावक से पच्चक्खाण मांगे और बड़े श्रावक न हों तो स्वयमेव समुच्चय पच्चक्खाण के पाठ से पच्चक्खाण करें। फिर सामायिक

एक, चउवीसथव दो, वंदना तीन, प्रतिक्रमण चार, कायोत्सर्ग पाच, पचक्खाण छह, ये छहों आवश्यक समाप्त हुए।

ऐसे कह कर इन छह आवश्यक में जानते अजानते जो कोई अतिचार दोष लगा हो तथा पाठ उचारते काना मात्रा 'अनुस्वार, पद, अक्षर अधिक न्यून आगे पीछे कहा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण १, अव्रत का प्रतिक्रमण २; कषाय का प्रतिक्रमण ३, प्रमादका प्रतिक्रमण ४, अशुभ योग का प्रतिक्रमण ५, ये पाच प्रतिक्रमण माहिला कोई भी प्रतिक्रमण न किया हो हालते चालते उठते बैठते पढते गुणाते मन वचन काया करके, ज्ञान दर्शन चारित्र तप सम्बन्धी जानते अजानते द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, आश्रयी कोई भी प्रकार से पाप दोष लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं। गये काल का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल का सवर-सामायिक, आवता काल का पचक्खाण, उन में जो कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कड।

फिर नीचे बैठकर डावा गोडा ऊंचा रख के दोनों हाथ मस्तक पर रखकर दो वक्त नमोत्थुण पूर्वोक्त विधि से बोल के जो साधु मुनिराज विराजते हों, उनको तिक्खुत्तो के पाठ से तीन वक्त विधि-सहित वंदना नमस्कार कर के, तथा कोई साधु मुनिराज नहीं विराजते होवें तो पूर्व तथा उत्तर दिशि की तरफ मुंह करके श्रीमहावीर स्वामी को, तथा धर्माचार्य (धर्मगुरु) को वंदना नमस्कार

करके सर्व स्वधर्मी भाइयों के साथ क्षमत क्षामणा अन्तःकरण से करें, बाद चौवीस स्तवन उच्चारण करें। प्रतिक्रमण में जहाँ देवसिय शब्द आवे, वहाँ देवसिय प्रतिक्रमण में तो देवसिय सम्बंधी राइय प्रतिक्रमण में राइय सम्बन्धी, पक्खीप्रतिक्रमण में पक्खी सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी सम्बन्धी और संवत्सर प्रतिक्रमण में संवत्सरी संबंधी कहें।

नोट—पुरुष 'करता हूँ' ऐसा कहे तब जगह स्त्री को 'करती हूँ' ऐसा कहना चाहिये

॥ इति प्रतिक्रमणसूत्रं विधिसहितं समाप्तम् ॥

न्यूनाधिक आगे पीछे सूत्रविपरीत कैहणा हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सूचना—प्रतिक्रमण के जानकार से सीखे और पक्के कंठस्थ कर लेवे।

सर्वं तु केवलिगम्यं,

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

चोवीस जिनस्तवन

श्रीऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दनजी अन्तर्यामी, अन्तर्यामी; कर्म खपाय मुक्ति गया ए। सुमति पद्म जिनेश्वरो, सुपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; चन्द्रप्रभस्वामी शिव लियो ए॥ १ ॥ सुवि· धिनाथ शीतल ध्याऊँ, श्रेयांस तणाँ गुण मुख गाऊँ, यश मुख गाऊँ; वासुपूज्य वंदूँ सही ए। विमलनाथ अनन्तज्ञानी, श्रीधर्मनाथ शुक्लध्यानी निर्मलज्ञानी; श्री शान्तिजिनेश्वर सोलमा ए ॥२॥ कुंथुनाथ अरनाथ नमूँ, श्रीमल्लिनाथ उगनीसमाँ, उगनीसमाँ; यशकीर्ति मुनिसुव्रत, तणी ए। नेमिनाथ नेमीश्वरो, श्रीपारसजी परमेश्वरो,स्वामी सुखकरो; महावीर शासनरा धणीए, (श्रीवर्द्धमान शासन का धणीए) ॥ ३ ॥ ये चौवीस जिनवर राया, ये चौवीसे शिवपद पाया, शिवपद पाया; अष्ट कर्मज्याँने क्षय कियाए। चारवीस जिनवर जपसी, अष्ट कर्म तेनाँ खपसी, तेनाँ खपसी; दुर्लभ नरभव पामियो ए ॥४॥ पूज्य श्री दौलतरामजी, रिख लालचन्दजी कर जोड़ नमूँ, कर जोड़ नमूँ; रामपुरे गुण गाविया ए। रामपुरे गुण गाविया, चारों तीर्थ के मन भाविया, चित्त चाविया; पूज्यजी के परसादसुँ ए ॥५॥

करके सर्व स्वधर्मी भाइयों के साथ खमत खामणा अन्तःकरण से करें, बाद चौबीस स्तवन उच्चारण करें। प्रतिक्रमण में जहाँ देवसिय शब्द आवे, वहाँ देवसिय प्रतिक्रमण में तो देवसिय सम्बन्धी, राइय प्रतिक्रमण में राइय सम्बन्धी, पक्खीप्रतिक्रमण में पक्खी-सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी सम्बन्धी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवत्सरी संबंधी करें।

नोट—पुरुष 'करता हूँ' ऐसा कहे उस जगह स्त्री को 'करती हूँ' ऐसा कहना चाहिये

॥ इति प्रतिक्रमणसूत्रं विधिसहितं समाप्तम् ॥

न्यूनाधिक आगे पीछे सूत्रविपरीत होगया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सूचना—प्रतिक्रमण के जानकार से सीखें और पक्का कंठस्थ कर लेवें।

तस्स तु कायविसग्गम्मं,

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

चोवीस जिनस्तवन

श्रीऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दनजी अन्तर्यामी, अन्तर्यामी; कर्म खपाय मुक्ति गया ए। सुमति पद्म जिनेश्वरो, सुपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; चन्द्रप्रभस्वामी शिव लियो ए॥ १ ॥ सुवि- धिनाथ शीतल ध्याऊँ, श्रेयांस तणाँ गुण मुख गाऊँ, यश मुख गाऊँ; वासुपूज्य वंदूँ सही ए। विमलनाथ अनन्तज्ञानी, श्रीधर्मनाथ शुक्लध्यानी निर्मलज्ञानी; श्री शान्तिजिनेश्वर सोलमा ए ॥२॥ कुंथुनाथ अरनाथ नमूँ, श्रीमल्लिनाथ उगनीसमाँ, उगनीसमाँ; यशकीर्ति मुनिसुव्रत, तणी ए। नेमिनाथ नेमीश्वरो, श्रीपारसजी परमेश्वरो,स्वामी सुखकरो; महावीर शासनरा धणीए, (श्रीवर्द्धमान शासन का धणीए) ॥ ३ ॥ ये चौवीस जिनवर राया, ये चौवीसे शिवपद पाया, शिवपद पाया; अष्ट कर्मज्याँने क्षय कियाए। चारबीस जिनवर जपसी, अष्ट कर्म तेनाँ खपसी, तेनाँ खपसी; दुर्लभ नरभव पामियो ए ॥४॥ पूज्य श्री दौलतरामजी, रिख लालचन्दजी कर जोड़ नमूँ, कर जोड़ नमूँ; रामपुरे गुण गाविया ए। रामपुरे गुण गाविया, चारों तीर्थ के मन भाविया, चित्त चाविया; पूज्यजी के परसादसुँ ए ॥५॥

करके सर्व स्वधर्मी भाइयों के साथ क्षमत क्षामणा अन्तःकरण से करें, बाद चौवीस स्तवन उच्चारण करें। प्रतिक्रमण में जहाँ देवसिय शब्द आवे, वहाँ देवसिय प्रतिक्रमण में तो देवसिय सम्बंधी, राइय प्रतिक्रमण में राइय सम्बन्धी, पक्खीप्रतिक्रमण में पक्खी-सम्बन्धी, चौमासी प्रतिक्रमण में चौमासी सम्बन्धी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में संवत्सरी संबंधी करें।

नोट—पुरुष 'करता हूं' ऐसा कहे तथा स्त्री को 'करती हूं' ऐसा कहना चाहिये

॥ इति प्रतिक्रमणसूत्रं विधिसहितं समाप्तम् ॥

न्यूनाधिक आगे पीछे सूत्रविपरीत होगया हो तो तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सूचना—प्रतिक्रमण के आसन को से पीछे और धरा को रज कर देवें।

सर्वं तु केवलिगम्यं,

ॐ शान्तिः! शान्ति!! शान्ति!!!

चोवीस जिनस्तवन

श्रीऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दनजी अन्तयामी, अन्तर्यामी; कर्म खपाय मुक्ति गया ए। सुमति पद्म जिनेश्वरो, सुपारसजी परमेश्वरो, स्वामी सुखकरो; चन्द्रप्रभस्वामी शिव लियो ए॥ १ ॥ सुवि· धिनाथ शीतल ध्याऊँ, श्रेयांस तणाँ गुण मुख गाऊँ, यश मुख गाऊँ; वासुपूज्य वंदूँ सही ए। विमलनाथ अनन्तज्ञानी, श्रीधर्मनाथ शुक्लध्यानी निर्मलज्ञानी; श्री शान्तिजिनेश्वर सोलमा ए॥२॥ कुंथुनाथ अरनाथ नमूँ, श्रीमल्लिनाथ उगनीसमाँ, उगनीसमाँ; यशकीर्ति मुनिसुव्रत, तणी ए। नेमिनाथ नेमीश्वरो, श्रीपारसजी परमेश्वरो,स्वामी सुखकरो; महावीर शासनरा धणीए, (श्रीवर्द्धमान शासन का धणीए) ॥ ३ ॥ ये चौवीस जिनवर राया, ये चौवीसे शिवपद पाया, शिवपद पाया; अष्ट कर्मज्याँने क्षय कियाए। चारवीस जिनवर जपसी, अष्ट कर्म तेनाँ खपसी, तेनाँ खपसी; दुर्लभ नरभव पामियो ए ॥४॥ पूज्य श्री दौलतरामजी, रि लालचन्दजी कर जोड़ नमूँ, कर जोड़ नमूँ; रामपुरे गुण गाविया ए। रामपुरे गुण गाविया, चारों तीर्थ के मन भाविया, चित्त चाविया; पूज्यजी के परसादसुं ए ॥५॥

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन शास्त्रभण्डार (लाइब्रेरी)

बीकानेर [राजपूताना]

मुद्रक—गणेश पाण्डेय नागरी प्रेस दारागंज प्रयाग।